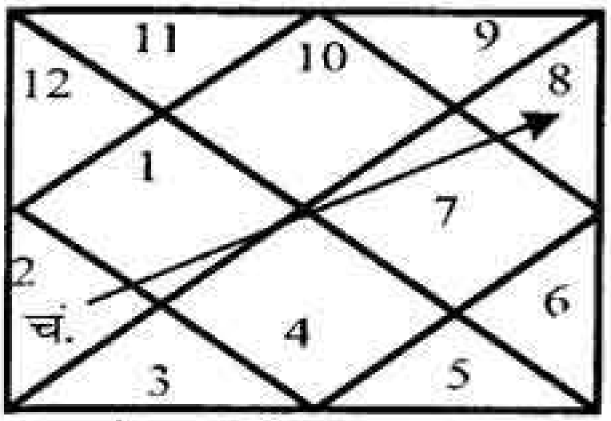
मकरलग्न में चंद्रमा की स्थिति पंचम स्थान में



मकरलग्न में चंद्रमा सप्तमेश है। मारक स्थान का स्वामी होने से उसे यहां अल्पदोष है, क्योंकि यह शनि से सम भाव रखता है। यहां पंचम स्थान में चंद्रमा उच्च का होगा। वृष राशि के अंशों में चंद्रमा परमोच्च का होगा। चंद्रमा अपने स्थान में एकादश स्थान पर स्थित है। ऐसा जातक बहुत ऊंची विद्या प्राप्त करेगा। जातक विनम्र, सौम्य एवं मृदु स्वभाव का होगा। उसे स्त्री-संतान, पद-प्रतिष्ठा, घोड़ा-गाड़ी का पूरा सुख मिलता है।

दृष्टि–पंचमस्थ चंद्रमा की दृष्टि एकादश स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलतः जातक को व्यापार में लाभ होगा।

विशेष–'**भावार्थ रत्नाकर**' के अनुसार मकरलग्न में पंचम स्थान में चंद्रमा हो तथा बुध+शुक्र लग्न में हों तो व्यक्ति '**राजराजेश्वर**' होता है। बृहज्जातक में उसे '**महाराजा योग**' King of Kings कहा है।

निशानी–ऐसा व्यक्ति आशावादी विचारों वाला एवं सदा हर्षित रहता है। प्रथम संतति कन्या होगी। कन्याएं अधिक होंगी।

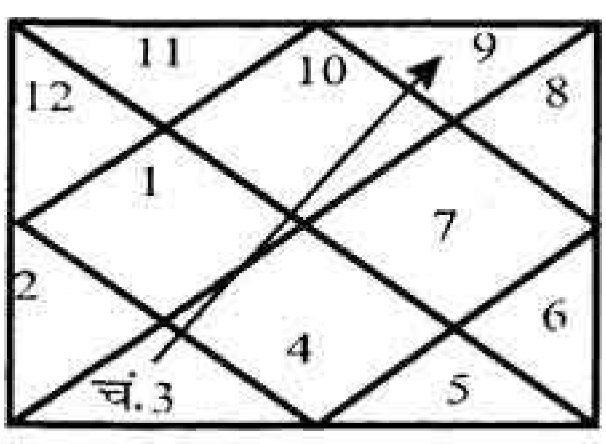
दशा–चंद्रमा की दशा बहुत उत्तम फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य+चंद्र युति पंचम स्थान (वृष राशि) में होने के कारण जातक का जन्म ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या की रात्रि 12 से 10 के मध्य होता है। अष्टमेश व सप्तमेश की युति संतान भाव में होने से ज्येष्ठ संतति का नाश करायेगी। जातक की कन्या संतति अधिक होगी।**
2. **चंद्र+मंगल**–यहां पंचम स्थान मे दोनों ग्रह वृष राशि में होंगे। वृष राशि में चंद्रमा उच्च का होगा फलतः यहां '**महालक्ष्मी योग**' बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टम भाव (सिंह राशि), लाभ स्थान (वृश्चिक राशि) एवं व्यय भाव (धनु राशि) पर होगा। फलतः ऐसा जातक महाधनी होगा। जातक व्यापार-व्यवसाय से धन कमायेगा। जातक लम्बी उम्र का स्वामी होगा। जातक थोड़ा खर्चीले स्वभाव का होगा।
3. **चंद्र+बुध**–चंद्रमा के साथ बुध तीन कन्याएं देगा। यदि पुरुष ग्रह की युति या दृष्टि संबंध न हो तो अधिक कन्याएं भी देगा परंतु संतान सुन्दर होगी।

4. **चंद्र+गुरु**–आपका जन्म मकरलग्न में हुआ है। 'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न के पंचम भाव में गुरु+चंद्र की युति 'वृष राशि' में होगी। वृष राशि में यह युति वस्तुतः सप्तमेश चंद्रमा की व्ययेश+तृतीयेश गुरु के साथ युति होगी। यहां चंद्रमा उच्च का होगा। यहां से दोनों शुभ ग्रह भाग्य भवन, लाभ स्थान एवं लग्न स्थान को देखेंगे। फलतः जातक का भाग्योदय प्रथम संतान के बाद होगा। जातक को व्यापार-व्यवसाय से लाभ होगा। जातक व्यापार से कमायेगा। ऐसे जातक का सर्वांगीण विकास होगा। उसकी गणन समाज के अग्रगण्य प्रतिष्ठित लोगों में होगी।
5. **चंद्र+शुक्र**–चंद्रमा के साथ शुक्र **'किम्बहुना नामक'** राजयोग बनायेगा। जातक के पांच पुत्र होंगे। जातक के बहुपुत्र योग होता है।
6. **चंद्र+शनि**–चंद्रमा के साथ शनि होने से जातक का भाग्योदय प्रथम संतति के बाद होगा।
7. **चंद्र+राहु**–चंद्रमा के साथ राहु पुत्र संतान की प्राप्ति में बाधक है।
8. **चंद्र+केतु**–चंद्रमा के साथ केतु गर्भस्राव करायेगा।

मकरलग्न में चंद्रमा की स्थिति षष्टम स्थान में



मकरलग्न में चंद्रमा सप्तमेश है। मारक स्थान का स्वामी होने से उसे यहां अल्पदोष है, क्योंकि यह शनि से सम भाव रखता है। छठे स्थान में चंद्रमा मिथुन राशि में शत्रुक्षेत्री होगा। यह अपनी राशि (कर्क) से द्वादश स्थान में स्थित होकर शुभ फलों को तोड़ रहा है। चंद्रमा इस स्थिति में होने से **'विवाहभंग योग'** बनता है। ऐसे जातक का विवाह विलम्ब से होता है तथा गृहस्थ जीवन के सुख नष्ट होते हैं। जातक का जीवन संघर्षमय होता है।

दृष्टि–षष्टमस्थ चंद्रमा की दृष्टि द्वादश भाव (धनु राशि) पर होगी। फलतः जातक कर्जदार होगा। उसे ऋण, रोग व शत्रु परेशान करते रहेंगे।

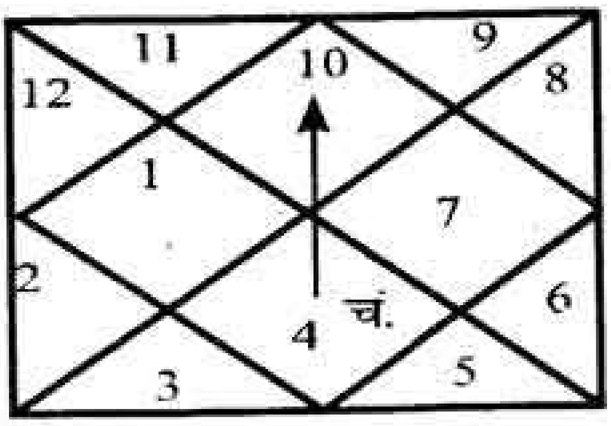
निशानी–**'बृहत्पाराशर होराशास्त्र'** के अनुसार–दारेशे रिपुभावस्थे आर्यातस्य रुजान्विता' सप्तमेश के छठे होने पर जातक की पत्नी सदा बीमार रहती है तथा जातक क्रोधी होता है एवं स्त्री से प्रेम नहीं करता।

दशा–चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा अनिष्ट फल देगी। चंद्रमा की दशा जीवन के बुरे दिनों व दुर्भाग्य से जातक परिचय कराती है।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य–**'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य+चंद्र की युति छठे स्थान (मिथुन राशि) में होने के कारण जातक का जन्म आषाढ़ कृष्ण अमावस्या की रात्रि 10 से 8 के मध्य होता है। अष्टमेश व सप्तमेश की युति यहां पर होने से '**विवाहभंग योग**' एवं सरल नामक '**विपरीत राजयोग**' बनेगा। जातक धनी-मानी होगा परन्तु उसका विवाह विलम्ब से होगा।
2. **चंद्र+मंगल–**यहां षष्टम् स्थान में दोनों ग्रह मिथुन राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि भाग्य स्थान (कन्या राशि), व्यय भाव (धनु राशि) एवं लग्न स्थान (मकर राशि) पर होगी। चंद्रमा के कारण '**विवाहभंग योग**' एवं मंगल के छठे जाने से '**सुखहीन योग**' व '**लाभभंग योग**' बनेगा। ऐसा जातक धनवान तो होगा परन्तु सुख-ऐश्वर्य में कमी एवं लाभ में कमी महसूस करेगा।
3. **चंद्र+बुध–**चंद्रमा के साथ बुध हर्ष नामक '**विपरीत राजयोग**' करायेगा। ऐसा जातक धनी होगा पर पत्नी से कम बनेगी।
4. **चंद्र+गुरु–**आपका जन्म मकरलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न के छठे भाव में गुरु+चंद्र की युति 'मिथुन राशि' में होगी। यह युति वस्तुतः चंद्रमा की व्ययेश+तृतीयेश गुरु के साथ युति है। चंद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री है। यहां पर खड्ढे में गिरे गुरु के कारण '**पराक्रमभंग योग**' तथा चंद्रमा के कारण '**विवाहभंग योग**' भी बना। यहां बैठकर दोनों ग्रह दशम भाव, व्यय भाव एवं धन भाव को देखेंगे। फलतः जातक को यथेष्ट धन की प्राप्ति होती रहेगी। मित्रों से धोखा मिलेगा। जीवन साथी से मनमुटाव होगा। जातक खर्चीली प्रवृत्ति का होगा पर '**गजकेसरी योग**' के कारण जातक सभी संकटों से पार निकल जायेगा तथा एक सफल व्यक्ति कहलायेगा।
5. **चंद्र+शुक्र–**चंद्रमा के साथ शुक्र यहां वैवाहिक सुख में बाधक है। जातक को संतति से संबंधित चिंता करायेगा।
6. **चंद्र+शनि–**चंद्रमा के साथ शनि '**लग्नभंग योग**', '**धनहीन योग**' बनायेगा। जातक को आर्थिक विषमताओं का सामना करना पड़ेगा।
7. **चंद्र+राहु–**चंद्रमा के साथ राहु दायें अंगों में चोट पहुंचायेगा एवं पांव की हड्डी तोड़ेगा।
8. **चंद्र+केतु–**चंद्रमा के साथ केतु गुप्त रोग देगा।

मकरलग्न में चंद्रमा की स्थिति सप्तम स्थान में



मकरलग्न में चंद्रमा सप्तमेश है। मारक स्थान का स्वामी होने से उसे यहां अल्पदोष है, क्योंकि यह शनि से सम भाव रखता है। चंद्रमा यहां सप्तम स्थान में स्वगृही होगा। फलतः **'यामिनीनाथ योग'** की सृष्टि करेगा। यह एक प्रकार का राजयोग है। जातक की पत्नी साक्षात् रम्भा तुल्य सुन्दर होगी एवं रानी की तरह राज करेगी। जातक धनवान, बुद्धिमान व चतुर होगा। जातक का गृहस्थ सुख अति उत्तम रहेगा। पति-पत्नी में खूब बनेगी। संतान सुख भी उत्तम होगा।

दृष्टि–सप्तमस्थ चंद्रमा की दृष्टि लग्न भाव (मकर राशि) पर होगी। जातक द्वारा किये गये परिश्रम का जातक को पूर्ण फल मिलेगा। पुरुषार्थ सफलीभूत होंगे।

निशानी–ऐसा जातक बहुत बोलने वाला (Over talkative) होगा।

दशा–चंद्रमा की दशा अंतर्दशा में जातक की उन्नति होगी। गृहस्थ सुख में बढ़ोत्तरी होगी।

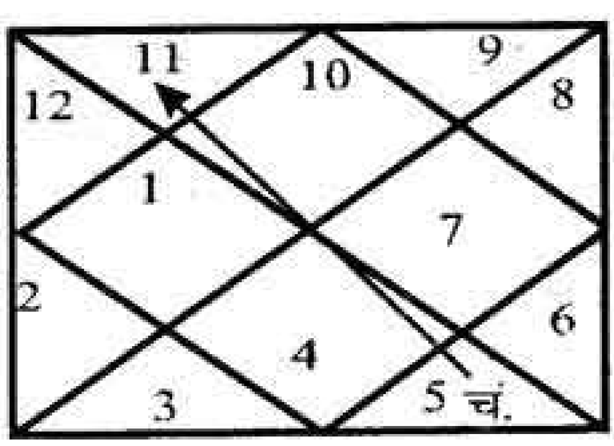
चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य+चंद्र की युति सातवें स्थान (कर्क राशि) में होने के कारण जातक का जन्म श्रावण कृष्ण अमावस्या की रात्रि 8 से 6 के मध्य होता है। अष्टमेश व सप्तमेश की युति में यहां चंद्रमा के कारण **'यामिनीनाथ योग'** बनेगा। जातक राजा तुल्य पराक्रमी होगा। पत्नी सुन्दर होगी पर ससुराल से मनमुटाव रहेगा।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां सप्तम स्थान में दोनों ग्रह कर्क राशि में होंगे। मंगल यह नीचं का एवं चंद्रमा स्वगृही होने से **'नीचभंग राजयोग'** बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह दशम भाव (तुला राशि), लग्न भाव (मकर राशि) एवं धन भाव (कुंभ राशि) को देखेंगे। फलतः यहां **'महालक्ष्मी योग'** बनेगा। जातक महाधनी होगा। वह जो भी कार्य हाथ में लेगा उसमें बराबर सफलता मिलेगी। जातक का राज्य (सरकार) पक्ष में दबदबा होगा।
3. **चंद्र+बुध**–चंद्रमा के साथ बुध विवाह के बाद भाग्योदय करायेगा। जातक की पत्नी सुंदर व बुद्धिमान होगी।
4. **चंद्र+गुरु**–आपका जन्म मकरलग्न में हुआ है। 'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न के सप्तम भाव में गुरु+चंद्र की युति कर्क राशि में हो रही है। कर्क

राशि में यह युति वस्तुत: सप्तमेश चंद्रमा की व्ययेश+तृतीयेश बृहस्पति के साथ युति है। चंद्रमा यहां स्वगृही होगा तथा गुरु उच्च का होगा। **'गजकेसरी योग'** की यह स्थिति सर्वोत्तम स्थिति है इस स्थिति के कारण **'हंसयोग'**, **'कुलदीपक योग'** एवं **'यामिनीनाथ योग'** की सृष्टि होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह लाभ स्थान, लग्न स्थान एवं पराक्रम स्थान को देखेंगे। फलत: जातक तेजस्वी व्यक्तित्व का धनी होगा। जातक की पत्नी सुन्दर तथा धनवान घराने से होगी। जातक व्यापार से धन कमायेगा तथा महान पराक्रमी, यशस्वी होगा तथा राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।

5. **चंद्र+शुक्र**–चंद्रमा के साथ शुक्र राजयोग देगा। विवाह के बाद ऊंची नौकरी मिलेगी या ऊंचा व्यापार मिलेगा।
6. **चंद्र+शनि**–चंद्रमा के साथ शनि **'लग्नाधिपति योग'** बनायेगा। जातक का पुरुषार्थ सार्थक होगा। परिश्रम में सफलता मिलेगी।
7. **चंद्र+राहु**–चंदमा के साथ राहु गृहस्थ सुख में बाधक है। जातक की पत्नी बीमार रहेगी।
8. **चंद्र+केतु**–चंद्रमा के साथ केतु जातक के जीवन साथी को स्थाई रोगी बनायेगा।

मकरलग्न में चंद्रमा की स्थिति अष्टम स्थान में



मकरलग्न में चंद्रमा सप्तमेश है। मारक स्थान का स्वामी होने से उसे यहां अल्पदोष है, क्योंकि यह शनि से सम भाव रखता है। अष्टम स्थान में चंद्रमा सिंह (मित्र) राशि का होगा। चंद्रमा अपनी राशि से दूसरे स्थान पर होगा। चंद्रमा की इस स्थिति से **'विवाहभंग योग'** बनता है। प्रथमत: जातक का विवाह विलम्ब से होगा। विवाह हो तो गृहस्थ सुख ठीक नहीं। चंद्रमा अग्निसंज्ञक राशि में होने से जातक क्रोधी, भड़कीले स्वभाव का होगा। जातक के जीवन में संघर्ष बहुत रहेगा।

दृष्टि–अष्टमस्थ चंद्रमा की दृष्टि धन भाव (कुंभ राशि) पर होगी। फलत: धन संग्रह नहीं हो पायेगा। जातक पर ऋण, रोग व शत्रु हावी रहेंगे।

निशानी– **'बृहत्पाराशर होराशास्त्र'** के अनुसार 'भार्याऽपि रोगयुक्ताऽस्य दु:शीलाऽपि न चानुगा' ऐसे जातक की पत्नी रोगिणी, दु:शीला होती है तथा पति का कहना नहीं मानती। पति के वश में नहीं रहती।

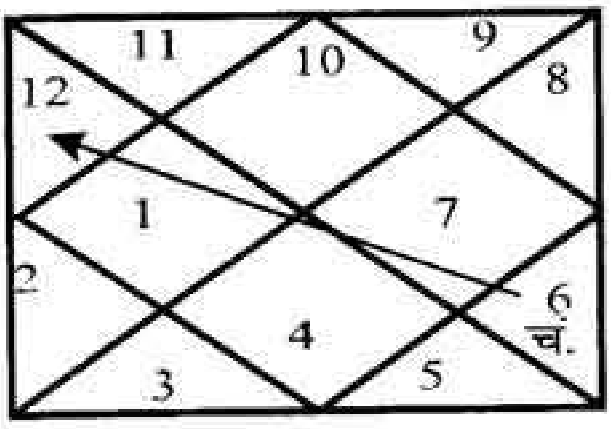
दशा–चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा अनिष्ट फल देगी एवं जीवन के दुर्दिनों में परिचय करायेगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य+चंद्र की युति आठवें स्थान (सिंह राशि) में होने के कारण जातक का जन्म भाद्र कृष्ण अमावस्या की सायं 6 से 4 के मध्य होता है। अष्टमेश एवं सप्तमेश की युति यहां पर **'विवाहभंग योग'** एवं सरल नामक **'विपरीत राजयोग'** बनायेगी। फलत: जातक धनी-मानी होगा पर उसके विवाह में विलम्ब होगा। जातक को गृहस्थ सुख में परेशानी रहेगी।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां अष्टम स्थान में दोनों ग्रह सिंह राशि में होंगे। चंद्रमा के कारण यहां **'विवाहभंग योग'** बनेगा। मंगल अष्टम स्थान में होने से **'सुखहीन योग'** एवं **'लाभभंग योग'** बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह लाभ स्थान (वृश्चिक राशि), धन भाव (कुंभ राशि) एवं पराक्रम भाव (मीन राशि) को देखेंगे। ऐसा जातक धनवान तो होगा पर उसको सुख एवं लाभ में कमी महसूस होती रहेगी।
3. **चंद्र+बुध**–चंद्रमा के साथ बुध हर्षनामक **'विपरीत राजयोग'** देगा। जातक धनी होगा परन्तु भाग्योदय हेतु किये गये प्रयत्नों में उसे बराबर बाधाएं आती रहेंगी।
4. **चंद्र+गुरु**–आपका जन्म मकरलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न के अष्टम भाव में गुरु+चंद्र की युति सिंह राशि में होगी। सिंह राशि में यह युति वस्तुत: सप्तमेश चंद्रमा की व्ययेश+तृतीयेश बृहस्पति के साथ युति है। बृहस्पति के कारण **'पराक्रमभंग योग'** तथा चंद्रमा के कारण **'विवाहभंग योग'** बनता है। यहां बैठकर दोनों शुभ ग्रह व्यय भाव धन भाव एवं सुख स्थान को देखेंगे। फलत: जातक का पत्नी से मनमुटाव रहेगा एवं मित्र उसे धोखा देंगे। जातक के धन का अपव्यय होगा। विपरीत परिस्थितियों में भी इस शुभ योग के कारण अंतिम सफलता मिलेगी।
5. **चंद्र+शुक्र**–चंद्रमा के साथ शुक्र राजयोग में बाधक है। यह युति जातक को संतान संबंधी चिंता देगी।
6. **चंद्र+शनि**–चंद्रमा के साथ शनि **'लग्नभंग योग'** एवं **'धनहीन योग'** बनायेगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
7. **चंद्र+राहु**–चंद्रमा के साथ राहु जातक के बायें पावं में चोट पहुंचायेगा।
8. **चंद्र+केतु**–चंद्रमा के साथ केतु गुप्त बीमारी देगा।

मकरलग्न में चंद्रमा की स्थिति नवम स्थान में

मकरलग्न में चंद्रमा सप्तमेश है। मारक स्थान का स्वामी होने से उसे यहां अल्पदोष है, क्योंकि यह शनि से सम भाव रखता है। यहां नवम स्थान में चंद्रमा कन्या



राशि में शत्रुक्षेत्री होगा। यहां चंद्रमा अपनी (कर्क) राशि से तीसरे स्थान पर है। ऐसा जातक भाग्यशाली होगा सरकारी या गैर सरकारी नौकरी में उच्च पद व प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा। जातक धनी होगा। जातक को माता-पिता, बहन-भाई, स्त्री संतान का सुख मिलेगा। जातक उच्च शिक्षा एवं उच्च वाहन को प्राप्त करेगा। विवाह के बाद जातक का भाग्योदय होगा।

दृष्टि–नवम भावगत चंद्रमा की दृष्टि पराक्रम स्थान (मीन राशि) पर होगी। फलत: जातक पराक्रमी होगा। उसके मित्र अच्छे व सच्चे होंगे।

निशानी–ऐसा जातक बहुत सारे धंधों को एक साथ करने में रुचि रखेगा। Source of Income will be two & three side.

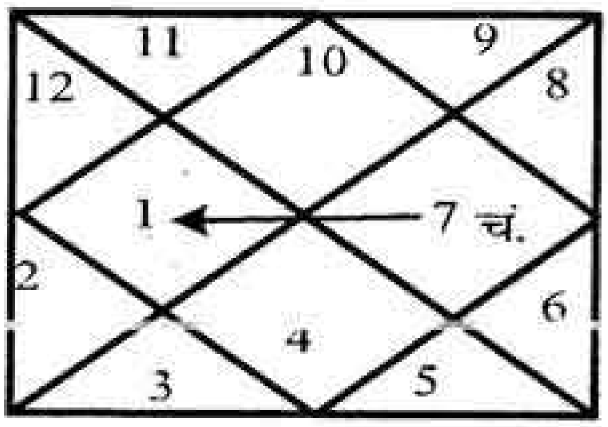
दशा–चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा उत्तम फल देगी। जातक की किस्मत चमकेगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य+चंद्र की युति नवम स्थान (कन्या राशि) में होने के कारण जातक का जन्म आश्विन कृष्ण अमावस्या को दोपहर 4 से 2 के मध्य होता है। अष्टमेश एवं सप्तमेश की युति यहां भाग्योदय में बाधक है पर विवाह के बाद जातक की उन्नति होगी।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां नवम स्थान में दोनों ग्रह कन्या राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव (धनु राशि), पराक्रम भाव (मीन राशि) एवं चतुर्थ स्थान (मेष राशि) को देखेंगे। ऐसा जातक धनवान होगा। उसे जीवन में सभी भौतिक सुख-सुविधाओं एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी। जातक महान पराक्रमी होगा।
3. **चंद्र+बुध**–चंद्रमा के साथ बुध जातक को परम भाग्यशाली बनायेगा। जातक धनवान होगा।
4. **चंद्र+गुरु**–आपका जन्म मकरलग्न में हुआ है। 'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न के नवम भाव में गुरु+चंद्र की युति कन्या राशि में हुई। कन्या राशि में यह युति वस्तुत: सप्तमेश चंद्रमा की व्ययेश+तृतीयेश बृहस्पति के साथ युति है। चंद्रमा यहां शत्रु क्षेत्री है। इन दोनों शुभ ग्रहों की दृष्टि लग्न स्थान, पराक्रम स्थान एवं पंचम भाव पर है। फलत: जातक के व्यक्तित्व विकास में यह युति सहायक होगी। जातक शिक्षित होगा उसकी संतान भी शिक्षित होगी। जातक स्वयं का भाग्योदय प्रथम संतति के तत्काल बाद होगा। जातक महान पराक्रमी व यशस्वी होगा।

5. **चंद्र+शुक्र**–चंद्रमा के साथ शुक्र भले ही नीच का हो जातक को उत्तम व्यापार, उत्तम आमदनी देगा।
6. **चंद्र+शनि**–चंद्रमा के साथ शनि होने से जातक का जीवनसाथी उन्नतिशील विचारों वाला होगा।
7. **चंद्र+राहु**–चंद्रमा के साथ राहु भाग्योदय में बाधाएं उत्पन्न करेगा।
8. **चंद्र+केतु**–चंद्रमा के साथ केतु जातक को उत्साही बनायेगा। जातक के निर्णय प्रायः त्रुटिपूर्ण होंगे।

मकरलग्न में चंद्रमा की स्थिति दशम स्थान में



मकरलग्न में चंद्रमा सप्तमेश है। मारक स्थान का स्वामी होने से उसे यहां अल्पदोष है, क्योंकि यह शनि से सम भाव रखता है। यहां दशम स्थान में चंद्रमा तुला (मित्र) राशि में होगा। चंद्रमा अपनी (कर्क) राशि से चौथे स्थान पर होकर केन्द्रवर्ती होगा। फलतः जातक को माता का सुख, उत्तम भवन का सुख, वाहन का सुख, नौकरी-व्यवसाय का सुख मिलेगा। जातक महत्वाकांक्षी होगा तथा उसका मनोबल ऊंचा रहेगा।

दृष्टि–दशमस्थ चंद्रमा की दृष्टि चतुर्थ भाव (मेष राशि) पर होगी। फलतः जातक को सभी प्रकार के भौतिक सुख-संसाधनों की प्राप्ति सहज में होगी।

निशानी–**'बृहत्पाराशर होराशास्त्र'** के अनुसार **धनपुत्रादिसंयुतः** ऐसा जातक धन एवं पुत्र सुख से युक्त होता है। जातक धर्मात्मा होता है परन्तु जातक की स्त्री जातक के वश में नहीं रहती तथा वह अपनी मनमानी करती है।

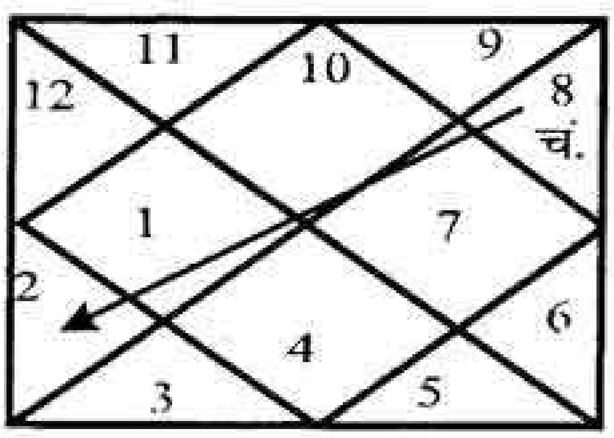
दशा–चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी। जातक को रोजी-रोजगार की प्राप्ति होगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य+चंद्र की युति दसवें स्थान (तुला राशि) में होने के कारण जातक का जन्म कार्तिक कृष्ण अमावस्या को दोपहर 2 से 12 के मध्य होता है। अष्टमेश व सप्तमेश की युति में यहां सूर्य नीच का होगा। जातक को सरकारी नौकरी में बाधा आयेगी पर उसकी पत्नी कमायेगी।

2. **चंद्र+मंगल**–यहां दशम स्थान में दोनों ग्रह तुला राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह लग्न स्थान (मकर राशि), चतुर्थ भाव (मेष राशि) एवं पंचम भाव (वृष राशि) को देखेंगे। फलतः जातक धनवान होगा। जातक को जीवन के प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी तथा उसे ऐशो–आराम एवं भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी। मंगल यहां दिक्बली होकर '**कुलदीपक योग**' बनायेगा। जातक की आर्थिक उन्नति प्रथम संतति के बाद होगी।
3. **चंद्र+बुध**–चंद्रमा के साथ बुध, जातक को उत्तम भवनों का स्वामी बनायेगा।
4. **चंद्र+गुरु**–आपका जन्म मकरलग्न में हुआ है। 'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न के दशम भाव में गुरु+चंद्र की युति तुला राशि में है। तुला राशि में यह यति वस्तुतः सप्तमेश चंद्रमा की व्ययेश+तृतीयेश बृहस्पति के साथ युति है। केन्द्रवर्ती गुरु+चंद्र के कारण '**यामिनीनाथ योग**' एवं '**कुलदीपक योग**' की सृष्टि हुई। ये दोनों ग्रह यहां धन स्थान, सुख स्थान एवं षष्टम स्थान को देखेंगे। फलतः ऐसे जातक को धन की यथेष्ट प्राप्ति होती रहेगी व उसको उत्तम वाहन भी मिलेगा। भौतिक सुख–संसाधनों की कमी नहीं रहेगी। जातक अपने शत्रुओं व रोगों का शमन करने में पूर्णतः सक्षम होगा।
5. **चंद्र+शुक्र**–चंद्रमा के साथ शुक्र '**मालव्य योग**' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं प्रभावशाली होगा।
6. **चंद्र+शनि**–चंद्रमा के साथ शनि '**शश योग**' के कारण जातक को राजा के समान प्रभावशाली पराक्रमी बनायेगा।
7. **चंद्र+राहु**–चंद्रमा के साथ राहु '**राजयोग**' में बाधक है।
8. **चंद्र+केतु**–चंद्रमा के साथ केतु जातक के सरकारी लाभ में बाधा डालेगा।

मकरलग्न में चंद्रमा की स्थिति एकादश स्थान में



मकरलग्न में चंद्रमा सप्तमेश है। मारक स्थान का स्वामी होने से उसे यहां अल्पदोष है, क्योंकि यह शनि से सम भाव रखता है। एकादश स्थान में चंद्रमा नीच का होगा। वृश्चिक राशि के अंशों में चंद्रमा परम नीच का होता है। यहां चंद्रमा अपनी राशि से पांचवे स्थान पर होने के कारण शुभ फल देने वाला साबित होगा। ऐसा जातक विद्यावान् होगा। जातक थोड़ा ईर्ष्यालु स्वभाव का होगा। उसे स्त्री–संतान, उत्तम व्यापार–व्यवसाय, पद–प्रतिष्ठा, मान–सम्मान सब कुछ मिलेगा।

दृष्टि–एकादश भावगत चंद्रमा की दृष्टि पंचम स्थान (वृष राशि) पर होगी। फलत: जातक को उत्तम संतति की प्राप्ति होगी।

निशानी–जातक की प्रथम संतति कन्या होगी। कन्या संतति अधिक होगी। पाराशर ऋषि के अनुसार **'दारेशेलाभभावस्थे दारैरर्थ समागम:'** सप्तमेश के लाभ स्थान में होने पर जातक की स्त्री द्वारा धन मिलता है। उसकी पत्नी प्राय: कमाने वाली महिला होती है।

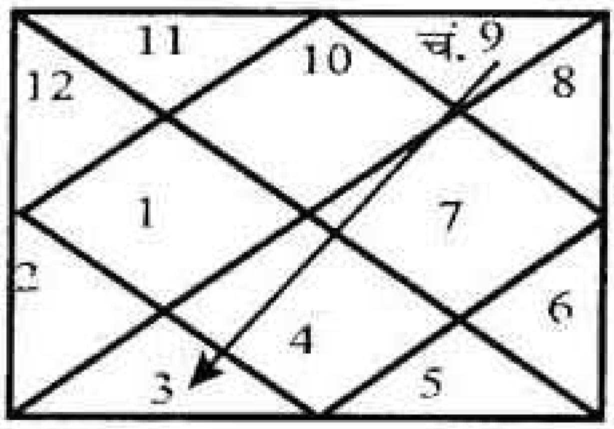
दशा–चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा शुभ फल एवं धन लाभ देगी। यह दशा गृहस्थ सुख में वृद्धि करेगा।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य+चंद्र की युति एकादश स्थान (वृश्चिक राशि) में होने के कारण जातक का जन्म मार्गशीर्ष अमावस्या को दिन 12 से 10 के मध्य होता है। अष्टमेश व सप्तमेश की युति में यहां चंद्रमा नीच का होगा। लाभ में बाधा भागीदारों में वैमनस्य रहेगा।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां एकादश स्थान में दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में होंगे। चंद्रमा यहां नीच का तो मंगल स्वगृही होने से **'नीचभंग राजयोग'** बना फलत: **'महालक्ष्मी योग'** की सृष्टि हुई। यहां बैठकर दोनों ग्रह धन भाव (कुंभ राशि), पंचम भाव (वृष राशि) एवं षष्टम भाव (मिथुन राशि) को देखेंगे। फलत: जातक महाधनी होगा। जातक ऋण-रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। जातक का आर्थिक विकास प्रथम संतति के जन्म के बाद होगा।
3. **चंद्र+बुध**–चंद्रमा के साथ बुध उत्तम विद्या देगा।
4. **चंद्र+गुरु**–आपका जन्म मकरलग्न में हुआ है। 'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में गुरु+चंद्र की युति एकादश स्थान में वृश्चिक राशि के अंतर्गत होगी। भोजसंहिता के अनुसार यह युति वस्तुत सप्तमेश चंद्रमा की व्ययेश+तृतीयेश बृहस्पति के साथ युति है। चंद्रमा यहां वृश्चिक राशि में नीच का होगा। इन दोनों ग्रह की दृष्टि पराक्रम भाव, पंचम भाव एवं सप्तम भाव पर होगी। फलत: जातक का भाग्योदय विवाह के बाद तत्काल बाद होगा। दूसरा भाग्योदय प्रथम संतति के बाद होगा। जातक सुशिक्षित एवं संस्कारी होगा। जातक महान पराक्रमी एवं यशस्वी होगा।
5. **चंद्र+शुक्र**–चंद्रमा के साथ बुध उत्तम विद्या देगा।
6. **चंद्र+शनि**–चंद्रमा के साथ शनि उत्तम धन देगा। जातक विवाह के बाद धनी व्यक्ति होगा।

7. **चंद्र+राहु**–चंद्रमा के साथ राहु व्यापारिक लाभ में बाधक है।
8. **चंद्र+केतु**–चंद्रमा के साथ केतु व्यापार में हानि देगा।

मकरलग्न में चंद्रमा की स्थिति द्वादश स्थान में



मकरलग्न में चंद्रमा सप्तमेश है। मारक स्थान का स्वामी होने से उसे यहां अल्पदोष है, क्योंकि यह शनि से सम भाव रखता है। चंद्रमा यहां द्वादश स्थान में धनु (मित्र) राशि में होगा। चंद्रमा यहां अपनी राशि में '**षडाष्टक योग**' बना रहा है। चंद्रमा की यह स्थिति '**विवाहभंग योग**' की सृष्टि करती है। प्रथमत: ऐसे जातक का विवाह विलम्ब से होता है। विवाह होता भी है तो गृहस्थ सुख में न्यूनता बनी रहती है। महर्षि पाराशर के अनुसार– '**दारेशे व्ययगे जातो दरिद्रः कृपणोऽपिच**' जातक दरिद्र होता है। उसकी पत्नी अत्यधिक खर्चीले स्वभाव की होती है। जातक को जहां धन खर्च करना चाहिए वहां नहीं करता इसलिए वह कंजूस व्यक्ति कहलाता है। जातक का जीवन संघर्षमय होता है।

दृष्टि–द्वादशस्थ चंद्रमा की दृष्टि छठे स्थान (मिथुन राशि) पर होगी। ऐसे जातक को गुप्त रोग व शत्रु परेशान करेंगे।

निशानी–जातक वस्त्र-व्यवसाय एवं विदेशी व्यापार से कमायेगा।

दशा–चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा अनिष्ट फल देगी एवं जीवन के कठिन क्षणों से जातक का परिचय करायेगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

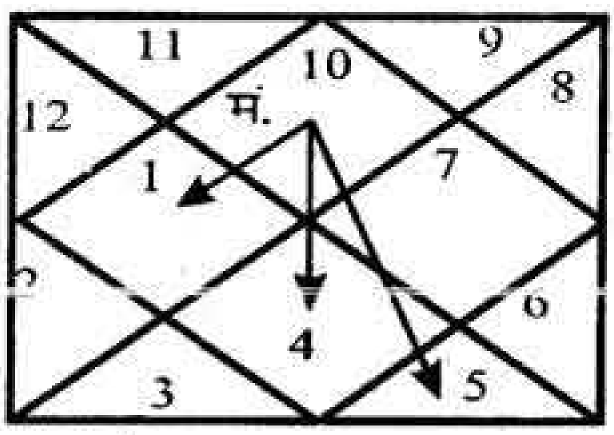
1. **चंद्र+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य+चंद्र की युति द्वादश स्थान (धनु राशि) में होने के कारण जातक का जन्म पौष कृष्ण अमावस्या को प्रातः 10 से 8 के मध्य होता है। अष्टमेश व सप्तमेश की युति यहां पर '**विवाहभंग योग**' एवं सरल नामक '**विपरीत राजयोग**' बनायेगी। ऐसा जातक धनी-मानी होगा पर विवाह में विलम्ब होगा। जातक को नेत्र पीड़ा रहेगी।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां द्वादश भाव में दोनों ग्रह धनु राशि में होंगे। जहां बैठकर दोनों ग्रह तृतीय भाव (मीन राशि), षष्टम् भाव (मिथुन राशि) एवं सप्तम भाव (कर्क राशि) को देखेंगे। चंद्रमा के कारण '**विवाहभंग योग**', मंगल के कारण '**सुखहीन योग**' एवं '**लाभभंग योग**' भी बनेगा। ऐसा जातक धनवान तो होगा परन्तु सुख एवं लाभ में कमी महसूस करता रहेगा।

3. **चंद्र+बुध**–चंद्रमा के साथ बुध भाग्य में भारी रुकावटें उत्पन्न करेगा।
4. **चंद्र+गुरु**–आपका जन्म मकरलग्न में हुआ है। मकरलग्न में गुरु+चंद्र की युति द्वादश स्थान में 'धनु राशि' के अंतर्गत हो रही है। 'भोजसंहिता' के अनुसार गुरु+चंद्र की युति वस्तुत: सप्तमेश चंद्रमा की व्ययेश+तृतीयेश बृहस्पति के साथ युति है। बृहस्पति यहां स्वगृही होगा। **'कीर्तिभंग योग'** एवं **'विवाहभंग योग'** यहां इतनी प्रभावशाली नहीं रहेगा। इन दोनों शुभ ग्रहों की दृष्टि सुख स्थान, षष्टम स्थान एवं अष्टम स्थान पर होगी। फलत: जातक का दुर्घटना व अपघातों से बचाव होता रहेगा। जातक को शत्रु भी ज्यादा परेशान नहीं कर पायेंगे। जातक ऋण-रोग व शत्रुओं के कुप्रभाव से बचा रहेगा। जातक पराक्रमी, सुखी एवं सम्पन्न व्यक्ति होगा।
5. **चंद्र+शुक्र**–चंद्रमा के साथ शुक्र संतान संबंधी चिंता करायेगा।
6. **चंद्र+शनि**–चंद्रमा के साथ शनि जातक को परिश्रम का लाभ नहीं होने देगा।
7. **चंद्र+राहु**–चंद्रमा के साथ राहु जातक को मानसिक पीड़ा पहुंचायेगा।
8. **चंद्र+केतु**–चंद्रमा के साथ केतु व्यर्थ की यात्राएं करायेगा।

❑❑❑

मकरलग्न में मंगल की स्थिति

मकरलग्न में मंगल की स्थिति प्रथम स्थान में



मकरलग्न में मंगल चतुर्थेश एवं लाभेश होने से अशुभ है, फलतः यहां मंगल मारकेश का काम करेगा। यहां लग्न स्थान में मंगल उच्च का होगा। मकर राशि के 28 अंशों में मंगल परमोच्च का होता है। यहां मंगल के कारण '**रुचक योग**' बना। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली होता है। लग्नस्थ मंगल के कारण कुण्डली मांगलिक होगी फलतः विवाह में देरी होगी। जीवन साथी का चुनाव मुश्किल से होगा। जातक के पास बड़ी भू-सम्पत्ति होगी एवं उसे भाई-बहन का सुख प्राप्त होगा।

दृष्टि–मंगल की दृष्टि चतुर्थ स्थान (मेष राशि), सप्तम भाव (कर्क राशि) एवं अष्टम भाव (सिंह राशि) पर होगी। ऐसा जातक प्रतियोगी परीक्षाओं में उत्तीर्ण होता है। जातक के वैवाहिक जीवन में कटुता आती है। ऐसा जातक अपने शत्रुओं का दमन करने में सक्षम होता है।

निशानी–जातक बहुत अच्छा वक्ता होगा तथा उसकी वाणी ओजस्वी होगी।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा में जातक भौतिक उपलब्धियों को प्राप्त करेगा।

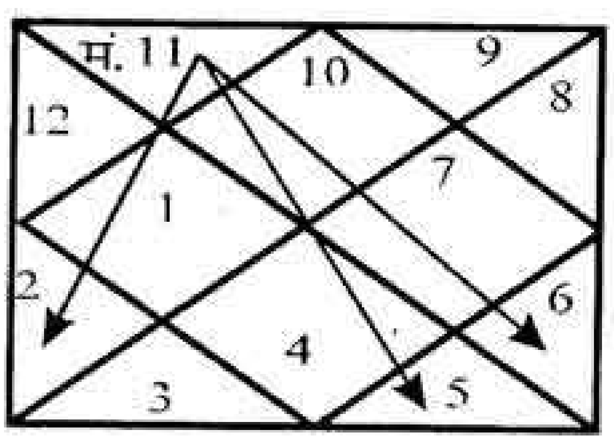
मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य जातक को तेजस्वी, क्रोधयुक्त एवं रक्तवर्णीय बनाता है।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां प्रथम स्थान में दोनों ग्रह मकर राशि में होंगे। मकर राशि में मंगल उच्च का होगा जिसके कारण '**रुचक योग**' बनेगा। फलतः '**महालक्ष्मी योग**' बना। यहां बैठकर दोनों ग्रह चतुर्थ भाव (मेष राशि), सप्तम भाव (कर्क राशि) एवं अष्टम भाव (सिंह राशि) को देखेंगे। फलतः जातक महाधनी

होगा। जातक को शानदार भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी। जातक लम्बी उम्र का स्वामी होगा।

3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध होने से जातक परम भाग्यशाली एवं बुद्धिशाली होगा। रचनात्मक बुद्धि का स्वामी होगा।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ बृहस्पति की युति होने से **'नीचभंग राजयोग'** बनेगा जिसके कारण जातक राजा के समान पराक्रमी, गम्भीर एवं धार्मिक होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र जातक को प्रबल राजयोग देगा। जातक राजसरकार में ऊंचा पद प्राप्त करेगा।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि **'किम्बहुना नामक राजयोग'** बनायेगा। जातक निश्चित रुप से राजा होगा। उसका व्यक्तित्व प्रभावशाली व आकर्षक होगा।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु होने से जातक बड़ा हठी व दम्भी होगा। जातक दुश्मनों को दहलाने वाला होगा।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु जातक को शत्रुहन्ता बनायेगा। शत्रु उससे घबरायेंगे।

मकरलग्न में मंगल की स्थिति द्वितीय स्थान में



मकरलग्न में मंगल चतुर्थेश एवं लाभेश होने से अशुभ है, फलत: यहां मंगल मारकेश का काम करेगा। द्वितीय स्थान में मंगल कुंभ राशि में होगा। मंगल यहां मेष राशि से ग्यारहवें तथा वृश्चिक राशि से चौथे स्थान पर होगा। ऐसा जातक धनवान होता है तथा सब प्रकार के संसाधनों से युक्त होता है। पाराशर ऋषि के अनुसार ऐसा जातक 'धार्मिकश्च सुखी सदा' धर्मात्मा एवं सुखी होता है।

दृष्टि–द्वितीयस्थ मंगल की दृष्टि पंचम भाव (वृष राशि), अष्टम भाव (सिंह राशि) एवं नवम भाव (कन्या राशि) पर होगी। जातक के संतान सुख में बाधा आयेगी। जातक अनैतिक कार्यों से धन कमायेगा। जातक का भाग्योदय संघर्ष के साथ होगा।

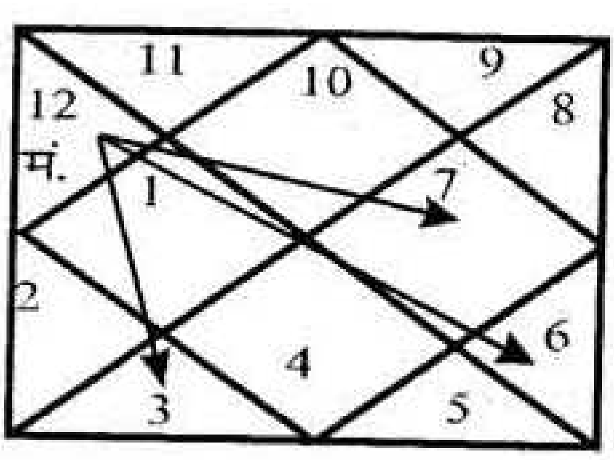
निशानी–जातक को प्रथम संतति हाथ नहीं लगेगी। एकाध गर्भस्राव अवश्यम्भावी है।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा अच्छी जायेगी। मंगल की दशा में धन, यश, पद व सम्मान मिलेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य धन प्राप्ति में 50% कटौती करेगा। जातक के पास चल सम्पत्ति के बनिस्पत स्थाई सम्पत्ति ज्यादा होगी।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां द्वितीय स्थान में दोनों ग्रह कुंभ राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह पंचम स्थान (वृष राशि), भाग्य भाव (सिंह राशि) एवं दशम भाव (तुला राशि) को देखेंगे। फलतः जातक धनवान एवं सौभाग्यशाली होगा। जातक का राजनीति (सरकार) में दबदबा होगा। जातक का आर्थिक विकास प्रथम संतति के बाद होगा।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध होने से जातक भाग्यशाली होगा। जो भी वचन बोलेगा, सोच-समझकर जिम्मेदारी के साथ बोलेगा।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ बृहस्पति होने से मित्रों से फायदा देगा। जातक धार्मिक एवं सिद्धान्तवादी सोच वाला होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र जातक को राजयोग दिलायेगा। जातक धनी होगा व कुटम्बियों से प्रेम रखेगा।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि होने से जातक महाधनी होगा। ऐसे जातक का बैंक-बैलेन्स सुदृढ़ होगा।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु होने से जातक के स्थाई सम्पत्ति में विवाद करायेगा।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु जातक के धन संग्रह में बाधक है।

मकरलग्न में मंगल की स्थिति तृतीय स्थान में



मकरलग्न में मंगल चतुर्थेश एवं लाभेश होने से अशुभ है, फलतः यहां मंगल मारकेश का काम करेगा। यहां पर तृतीय स्थान में मीन (मित्र) राशि में होगा। ऐसे व्यक्ति स्वाभिमानी होते हैं तथा बाहुबल में विश्वास रखते हैं। जातक का शौर्य, पराक्रम एवं जनसम्पर्क सघन होगा। जातक के भाई होंगे पर भाइयों से उसकी बनेगी नहीं। यदि लग्नेश शनि या शुक्र की स्थिति ठीक हो तो जातक बड़ा व्यवसायी एवं उद्योगपति होता है।

दृष्टि–तृतीयस्थ मंगल की दृष्टि छठे स्थान (मिथुन राशि), भाग्य स्थान (कन्या राशि) एवं दशम स्थान (तुला राशि) पर होगी। फलतः ऋण व शत्रुओं का नाश होगा। भाग्योदय 28 वर्ष की आयु के बाद होगा। जातक की आजीविका के साधन सुदृढ़ होंगे। जातक को खूब धन, यश व प्रतिष्ठा मिलेगी।

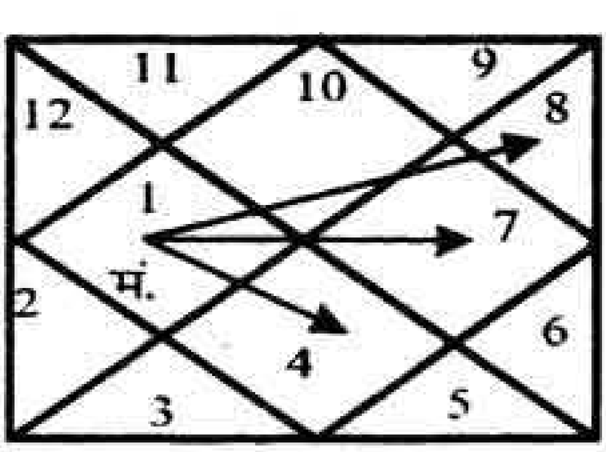
निशानी–ऐसे जातक को शूल रोग होगा। जातक युद्ध प्रिय होगा तथा वह शत्रुओं को परास्त करके कीर्ति अर्जित करेगा।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा पराक्रम बढ़ायेगी एवं शुभ फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य जातक को प्रबल पराक्रमी बनायेगा पर जातक को बड़े भाई का सुख प्राप्त नहीं होगा।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां तृतीय स्थान में दोनों ग्रह मीन राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि षष्टम् स्थान (मिथुन राशि), भाग्य भवन (कन्या राशि) एवं दशम भाव (तुला राशि) पर होगी। फलत: जातक धनवान होगा। जातक ऋण-रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। जातक सौभाग्यशाली होगा। जातक का राजनीति (सरकार) कोर्ट-कचहरी में वर्चस्व रहेगा।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध नीच का जातक को भाई-बहनों एवं इष्ट-मित्रों का सुख देगा।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ स्वगृही गुरु जातक को मित्रों से, परिजनों से लाभ दिलायेगा। जातक पराक्रमी होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ उच्च का शुक्र जातक की कीर्ति को पराकाष्ठा पर ले जायेगा। जातक का राजनीति में सीधा हस्तक्षेप होगा।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि होने से जातक प्रबल पुरुषार्थी होगा एवं परिश्रम से अपना भाग्य चमकायेगा।
7. **मंगल+राहु–मंगल के साथ राहु भाइयों में विग्रह-विवाद पैदा करेगा।**
8. **मंगल+केतु–मंगल के साथ केतु परिजनों में विद्वेष पर अन्य समाज में कीर्ति देगा।**

मकरलग्न में मंगल की स्थिति चतुर्थ स्थान में



मकरलग्न में मंगल चतुर्थेश एवं लाभेश होने से अशुभ है, फलत: यहां मंगल मारकेश का काम करेगा। यहां चतुर्थ स्थान में मेष राशि का मंगल स्वगृही होगा। मंगल इस स्थिति में कुण्डली 'मांगलिक' होगी तथा **'रुचक योग'** भी बनेगा। ऐसा जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली एवं पराक्रमी होगा।

जातक उच्च श्रेणी का उद्योगपति होगा। बड़ी भू-सम्पत्ति व जमीन का स्वामी होगा। उच्च वाहन होंगे पर पत्नी के पूर्ण सुख का अभाव रहेगा।

दृष्टि–चतुर्थ भावगत मंगल की दृष्टि सप्तम भाव (कर्क राशि), दशम भाव (तुला राशि) एवं एकादश भाव अपने स्वयं के घर वृश्चिक राशि पर होगी। विवाह में विलम्ब होगा वराज्य सरकार में वर्चस्व रहेगा एवं जातक व्यापार-व्यवसाय से खूब धन अर्जित करेगा।

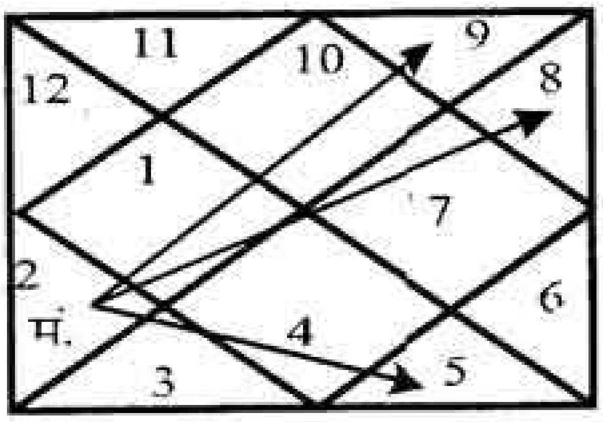
निशानी–पाराशर ऋषि के अनुसार ऐसा जातक मातृकुल व कृषि से धन पाता है, तीर्थयात्रा करता है तथा सुखी होता है।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा में जातक को भूमि लाभ होगा। कोर्ट-कचहरी में विजय मिलेगी। व्यापार में लाभ होगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ उच्च का सूर्य **'किम्बहुना नामक राजयोग'** बनायेगा। **'रविकृत राजयोग'** के कारण जातक को माता-पिता की सम्पत्ति, बढ़िया भवन एवं चार पहियों का बढ़िया वाहन मिलेगा। जातक निश्चय ही राजा या राजातुल्य पराक्रमी पुरुष होगा।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां चतुर्थ स्थान में दोनों ग्रह मेष राशि में होंगे। मंगल यहां स्वगृही होने से **'रुचक योग'** बनेगा एवं **'महालक्ष्मी योग'** की सृष्टि होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव (कर्क राशि), दशम भाव (तुला राशि) एवं एकादश भाव (वृश्चिक राशि) को देखेंगे। फलत: जातक महाधनी होगा। व्यापार-व्यवसाय से लाभ होगा। विवाह के बाद जातक आर्थिक रूप से सम्पन्न होगा एवं उसे जातक राजनीति में उच्च पद को प्राप्त करेगा।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध जातक को उत्तम वाहन देगा। उसके पास एक से अधिक वाहन होंगे।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ गुरु मित्रों से लाभ देने के साथ-साथ जातक को धार्मिक बुद्धि भी देगा। जातक जिम्मेदार व्यक्ति होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र जातक को अनेक वाहन देगा एवं माता की सम्पत्ति दिलायेगा। भूमि से लाभ दिलायेगा।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि **'नीचभंग राजयोग'** बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं धनी होगा।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु होने से माता की अकाल मृत्यु देगा।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु जातक की माता को लम्बी बीमारी देगा।

मकरलग्न में मंगल की स्थिति पंचम स्थान में



मकरलग्न में मंगल चतुर्थेश एवं लाभेश होने से अशुभ है, फलत: यहां मंगल मारकेश का काम करेगा। पंचम स्थान में मंगल वृष राशि में होता है। ऐसा जातक विद्यावान् होगा। अर्थकरी विद्या का ज्ञाता एवं व्यवहारिक ज्ञान से भरपूर होगा। पाराशर ऋषि के अनुसार ऐसा जातक सर्वजनप्रिय, गुणी, मानी एवं 'स्वभुजार्जित वित्तवान' अपने खुद के पुरुषार्थ से धन कमाकर महाधनी होगा।

दृष्टि—पंचम भावगत मंगल की दृष्टि अष्टम स्थान (सिंह राशि), लाभ स्थान, अपने ही घर वृश्चिक राशि एवं व्यय भाव (धनु राशि) पर होगी। फलत: जातक शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा तथा व्यापार-व्यवसाय के द्वारा खूब धन कमायेगा। ऐसा जातक उदार मनोवृत्ति के कारण खर्च भी खूब करेगा। तीर्थ यात्रा, परोपकार पर रुपया खर्च करेगा।

निशानी—जातक पुत्रवान होगा। पुत्र सुखी होगा।

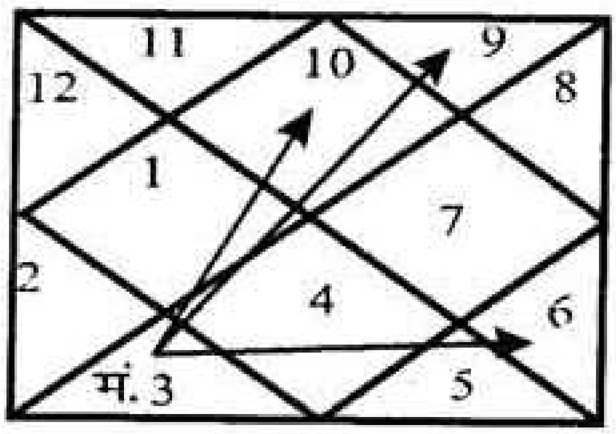
दशा—मंगल की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल+सूर्य**—मंगल के साथ सूर्य एकाध पुत्र की मृत्यु का कारण बनेगा।
2. **मंगल+चंद्र**—यहां पंचम स्थान में दोनों ग्रह वृष राशि में होंगे। वृष राशि में चंद्रमा उच्च का होगा फलत: यहां '**महालक्ष्मी योग**' बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि अष्टम भाव (सिंह राशि), लाभ स्थान (वृश्चिक राशि) एवं व्यय भाव (धनु राशि) पर होगी। फलत: ऐसा जातक महाधनी होगा। जातक व्यापार-व्यवसाय से धन कमायेगा। जातक लम्बी उम्र का स्वामी होगा। जातक थोड़ा खर्चीले स्वभाव का होगा।
3. **मंगल+बुध**—मंगल के साथ बुध जातक को कम्प्यूटर की तरह तेज बुद्धि देगा।
4. **मंगल+गुरु**—मंगल के साथ गुरु पुत्र संतान एवं आध्यात्मिक ज्ञान देगा।
5. **मंगल+शुक्र**—मंगल के साथ स्वगृही शुक्र जातक को राजयोग देगा। जातक राजनीति में प्रभावशाली व्यक्ति होगा।
6. **मंगल+शनि**—मंगल के साथ शनि परिश्रम का लाभ देगा। जातक धनी होगा एवं उसकी संतति भी धनवान होगी।

7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु संतान सुख में बाधक है।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु विद्या में रुकावट देगा।

मकरलग्न में मंगल की स्थिति षष्टम स्थान में



मकरलग्न में मंगल चतुर्थेश एवं लाभेश होने से अशुभ है, फलत: यहां मंगल मारकेश का काम करेगा। छठे स्थान में मंगल मिथुन राशि में होगा। मंगल की इस स्थिति में '**सुखहीन योग**' एवं '**लाभभंग योग**' बनेगा। 'बृहत्पाराशर होराशास्त्र' के अनुसार– '**लाभेशे रोग भावस्थे जातो रोग समन्वित:।**' 'क्रूर बुद्धि: प्रवासी च शत्रुभि: परिपीड़ित:' ऐसा जातक रोगी होता है। क्रूर, विनाशक बुद्धि से प्रेरित रहता है एवं शत्रुओं से पीड़ित रहता है। जीवन में संघर्ष की स्थिति बनी रहती है।

दृष्टि–षष्टमस्थ मंगल की दृष्टि भाग्य स्थान (कन्या राशि), व्यय स्थान (धनु राशि) एवं लग्न स्थान (मकर राशि) पर होगी। जातक को भाग्योदय हेतु संघर्ष करना पड़ेगा। धन व्यर्थ में खर्च होगा। जातक को पुरुषार्थ-परिश्रम का फल बराबर नहीं मिलेगा।

निशानी–जातक माता के सुख से हीन होता है। जातक को ब्लड प्रेशर रहता है।

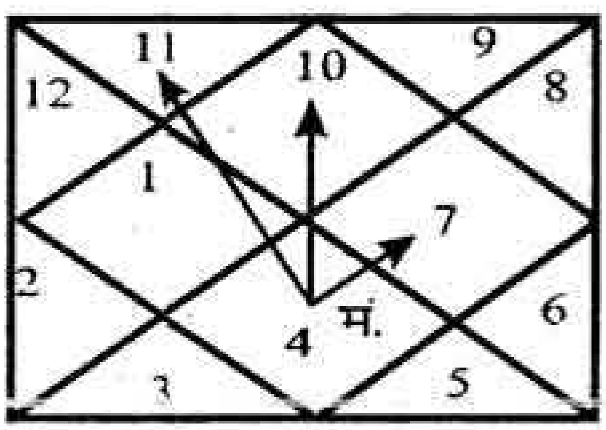
दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा अनिष्ट फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य सरल नामक **'विपरीत राजयोग'** देगा। जातक धनी होगा। पर भूमि को लेकर मुकदमेबाजी होगी।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां षष्टम् स्थान में दोनों ग्रह मिथुन राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि भाग्य स्थान (कन्या राशि), व्यय भाव (धनु राशि) एवं लग्न स्थान (मकर राशि) पर होगी। चंद्रमा के कारण '**विवाहभंग योग**' एवं मंगल के छठे जाने से '**सुखहीन योग**' व '**लाभभंग योग**' बनेगा। ऐसा जातक धनवान तो होगा परन्तु सुख-ऐश्वर्य में कमी एवं लाभ में कमी महसूस करेगा।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध होने से हर्ष नामक **'विपरीत राजयोग'** बनेगा। जातक धनी होगा पर उसकी किस्मत संघर्ष के बाद चमकेगी।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ गुरु **'पराक्रम भंग योग'** के साथ विमल नामक **'विपरीत राजयोग'** बनायेगा। जातक धनी होगा। पर उसे अपयश मिलता रहेगा।

5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र '**संतानहीन योग**' एवं '**राजभंग योग**' बनायेगा। जातक की प्रारंभिक विद्या में रुकावट आयेगी।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि '**लग्नभंग योग**' एवं '**धनहीन योग**' बनायेगा। जातक को आर्थिक विषमता से जूझना पड़ेगा।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु अंग पीड़ा देगा।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु पैरों में कष्ट होगा।

मकरलग्न में मंगल की स्थिति सप्तम स्थान में



मकरलग्न में मंगल चतुर्थेश एवं लाभेश होने से अशुभ है, फलतः यहां मंगल मारकेश का काम करेगा। यहां सप्तम स्थान में मंगल नीच का होगा। कर्क राशि के 28 अंशों में मंगल परम नीच का होगा। मंगल की इस स्थिति से कुण्डली '**मांगलिक**' हो गई है। फलतः विवाह में विलम्ब होगा या गृहस्थ सुख में बाधा रहेगी। विवाह होने के बाद जातक पत्नी से दबा रहेगा। पाराशर ऋषि कहते हैं–'**समायां मूकवद् भवेत**' जातक सभा में गूंगे के समान तथा कामी होगा।

दृष्टि–सप्तमस्थ मंगल की दृष्टि दशम भाव (तुला राशि), लग्न स्थान (मकर राशि) एवं धन स्थान (कुंभ राशि) पर होगी। जातक का राज-सरकार में प्रभाव रहेगा। जातक को पुरुषार्थ का लाभ मिलेगा। जातक धनी होगा। भूमि में धन, गुप्त समझौतों से लाभ मिलेगा।

निशानी–जातक की अपने जीवनसाथी के साथ सदैव कलह रहेगा। अहम् की टकराहट होती रहेगी।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

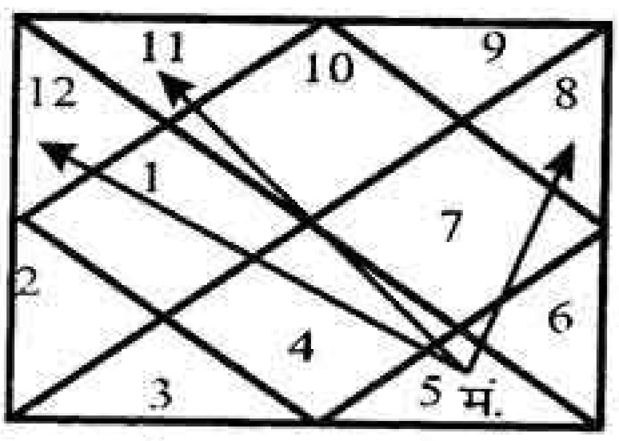
मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य वैवाहिक सुख में बाधक है।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां सप्तम स्थान में दोनों ग्रह कर्क राशि में होंगे। मंगल यहां नीच का एवं चंद्रमा स्वगृही होने से '**नीचभंग राजयोग**' बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह दशम भाव (तुला राशि), लग्न भाव (मकर राशि) एवं धन भाव (कुंभ राशि) को देखेंगे। फलतः यहां '**महालक्ष्मी योग**' बनेगा। जातक महाधनी

होगा। वह जो ी कार्य हाथ में लेगा उसमें उसे बराबर सफलता मिलेगी। जातक का राज्य (सरकार) पक्ष में दबदबा होगा।

3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध जातक के भाग्योदय में वृद्धि करायेगा।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ बृहस्पति **'नीचभंग राजयोग'** बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र विद्या में बढ़ोतरी करायेगा। राजयोग में लाभ करायेगा। विवाह के बाद जातक की उन्नति होगी।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि **'लग्नाधिपति योग'** बनायेगा। जातक को परिश्रम का पूरा-पूरा लाभ मिलेगा। जातक सफल व्यक्ति होगा।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु पति-पत्नी में विवाद व कलह करायेगा।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु विवाह सुख में न्यूनता उत्पन्न करेगा।

मकरलग्न में मंगल की स्थिति अष्टम स्थान में



मकरलग्न में मंगल चतुर्थेश एवं लाभेश होने से अशुभ है, फलतः यहां मंगल मारकेश का काम करेगा। यहां अष्टम स्थान मे मंगल सिंह (मित्र) राशि में होगा। मंगल की इस स्थिति में होने से कुण्डली 'मांगलिक' कहलायेगी। मंगल की इस स्थिति से **'सुखहीन योग'** एवं **'लाभभंग योग'** बनता है। ऐसे जातक का जीवन संघर्षशील रहेगा। जातक जिस काम में हाथ डालेगा, नुकसान होगा। पाराशर ऋषि कहते हैं– **'जातः क्लीबसमो भवेत्'**, ऐसे जातक को माता-पिता का अल्प सुख मिलता है। जातक मकान के सुख से हीन होता है तथा परिश्रम के फल न मिलने से जातक नपुसंक के समान हो जाता है।

दृष्टि–अष्टमस्थ मंगल की दृष्टि लाभ स्थान (वृश्चिक राशि), धन भाव (कुंभ राशि) एवं पराक्रम भाव (मीन राशि) पर होगी। फलतः लाभ में रुकावट, धन की हानि एवं पराक्रम भंग होने का भय बना रहेगा।

निशानी–ऐसा जातक विधुर होगा। उसकी पत्नी का मरण उसके सामने होगा।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा अशुभ फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य स्वगृही होकर सरल नामक **'विपरीत राजयोग'** बनायेगा। जातक धनी होगा पर वह भूमि विवाद में उलझ सकता है।

2. **मंगल+चंद्र**–यहां अष्टम स्थान में दोनों ग्रह सिंह राशि में होंगे। चंद्रमा के कारण यहां '**विवाहभंग योग**' बनेगा। मंगल अष्टम में होने से '**सुखहीन योग**' एवं '**लाभभंग योग**' बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह लाभ स्थान (वृश्चिक राशि), धन भाव (कुंभ राशि) एवं पराक्रम भाव (मीन राशि) को देखेंगे। ऐसा जातक धनवान तो होगा पर उसको सुख एवं लाभ में कमी महसूस होती रहेगी।

3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध हर्ष नामक **'विपरीत राजयोग'** बनायेगा। ऐसा जातक धनी होगा। जातक के विवाह में विलम्ब संभव है।

4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ बृहस्पति **'पराक्रम भंग योग'** एवं विमल नामक **'विपरीत राजयोग'** बनायेगा। जातक धनी होगा एवं उसे अपयश मिलेगा।

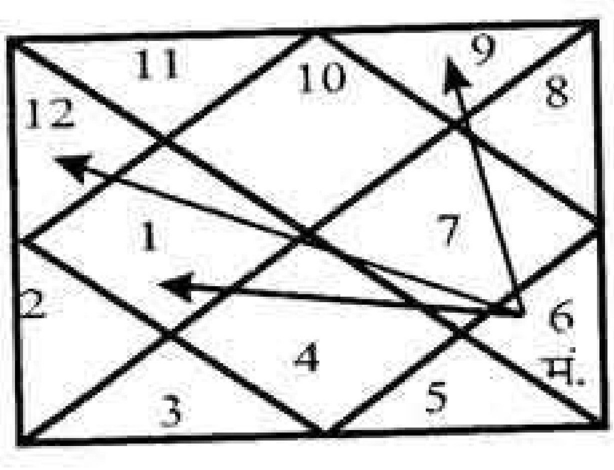
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र '**राजभंग योग**' व '**संतानहीन योग**' बनायेगा। जातक को संतान संबंधी परेशानी रहेगी। पत्नी से मनमुटाव रहेगा।

6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि '**लग्नभंग योग**' एवं '**धनहीन योग**' बनायेगा। जातक को परिश्रम का यथेष्ट लाभ नहीं मिलेगा।

7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु गुप्त बीमारी देगा व अचानक दुर्घटना करायेगा।

8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु मानसिक तनाव देगा।

मकरलग्न में मंगल की स्थिति नवम स्थान में



मकरलग्न में मंगल चतुर्थेश एवं लाभेश होने से अशुभ है, फलतः मंगल यहां मारकेश का काम करेगा। नवम स्थान में मंगल कन्या राशि में होगा ऐसा जातक भाग्यशाली होता है। पाराशर ऋषि कहते हैं– **'चतुरः सत्यवादी च राजपूज्यो धनाधिपः,'** ऐसा जातक बहुत चतुर-चालाक एवं सिद्धान्तवादी होगा। जातक राजा के द्वारा सम्मानित होगा एवं धनवान होगा।

दृष्टि–नवमस्थ मंगल की दृष्टि व्यय भाव (धनु राशि), पराक्रम स्थान (मीन राशि) एवं चतुर्थ स्थान (मेष राशि) पर होगी। जातक खर्चीले स्वभाव का एवं पराक्रमी होगा। मित्र बहुत होगें। वाहन का सुख जातक को प्राप्त होगा। बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा।

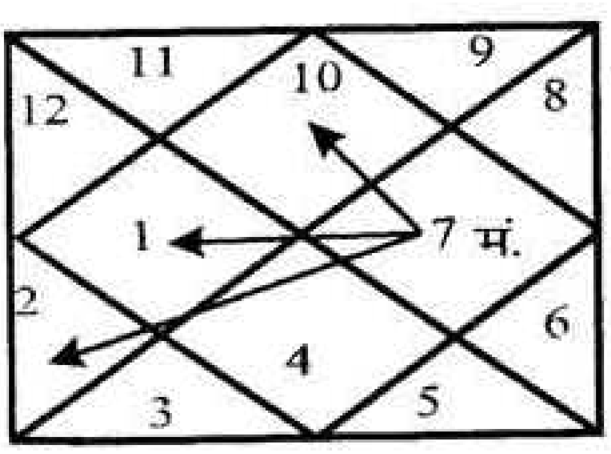
निशानी–जातक बाल्यवस्था में बीमार होगा तथा पिता की सम्पत्ति को तुच्छ समझेगा। सहोदर भ्राता एवं पिता से जातक के विचार नहीं मिलेंगे।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य जातक को अतुल तेज व पराक्रम देगा।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां नवम स्थान में दोनों कन्या राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव (धनु राशि), पराक्रम भाव (मीन राशि) एवं चतुर्थ स्थान (मेष राशि) को देखेंगे। ऐसा जातक धनवान होगा। उसे जीवन में सभी भौतिक सुख-सुविधाओं एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी। जातक महान पराक्रमी होगा।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध जातक को सौभाग्यशाली बनायेगा। जातक बुद्धिबल से आगे बढ़ता हुआ शत्रुओं को परास्त करेगा।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ गुरु जातक को मित्रों, परिजनों से लाभ वांछित सहयोग दिलायेगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र भले ही नीच का हो जातक को राजयोग देगा तथा प्रभावशाली बनायेगा।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि जातक को माता की सम्पत्ति एवं भूमि लाभ देगा।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु होने से जातक पिता की सम्पत्ति ठुकरा देगा।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु जातक को पुरुषार्थ से लाभ एवं तेजस्विता देगा।

मकरलग्न में मंगल की स्थिति दशम स्थान में



मकरलग्न में मंगल चतुर्थेश एवं लाभेश होने से अशुभ है, फलतः यहां मंगल मारकेश का काम करेगा। यहां दशम स्थान में मंगल तुला राशि में होगा। मंगल यहां स्वगृहाभिलाषी एवं **'दिग्बली'** है। मंगल की यह स्थिति सर्वाधिक शक्तिशाली होकर **'कुलदीपक योग'** की सृष्टि कर रही है। जातक अपने परिवार कुटुम्ब का नाम दीपक के समान रोशन करता हुआ अनेक शुभ फलों को प्राप्त करेगा। जातक राजा द्वारा पूजित होगा तथा उसे सरकारी सम्मान मिलेगा।

दृष्टि–दशमस्थ मंगल की दृष्टि लग्न स्थान (मकर राशि), चतुर्थ भाव (मेष राशि) एवं पंचम भाव (वृष राशि) पर होगी। जातक को परिश्रम का पूरा लाभ मिलेगा। जातक के पास उच्च वाहन एवं प्रचुर भूमि होगी। जातक को पुत्र सुख जरूर प्राप्त होगा।

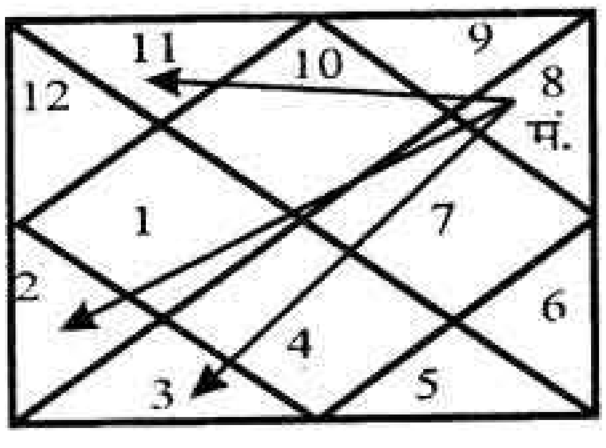
निशानी–जातक अर्थकारी विद्या का जानकार एवं अनुभवी विद्वान होगा।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा में जातक की उन्नति होगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य नीच का होगा। जातक को राज दरबार में सम्मान मिलेगा।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां दशम स्थान में दोनों ग्रह तुला राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह लग्न स्थान (मकर राशि), चतुर्थ भाव (मेष राशि) एवं पंचम भाव (वृष राशि) को देखेंगे। फलतः जातक धनवान होगा। जातक को जीवन के प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी तथा ऐशो-आराम एवं भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी। मंगल यहां दिक्बली होकर **'कुलदीपक योग'** बनायेगा। जातक की आर्थिक उन्नति प्रथम संतति के बाद होगी।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध होने से जातक को व्यापार में लाभ, भूमि-भवन में लाभ होगा।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ बृहस्पति जातक को मित्रों से लाभ देगा। जातक धार्मिक एव पराक्रमी होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र **'मालव्य योग'** बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी होगा।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि **'शश योग'** बनायेगा। ऐसा जातक स्वयं राजा व राजपुरुष से कम नहीं होगा।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु राजकाज में बाधक है।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु का होना सरकारी कार्य में विघ्न डालेगा।

मकरलग्न में मंगल की स्थिति एकादश स्थान में



मकरलग्न में मंगल चतुर्थेश एवं लाभेश होने से अशुभ है, फलतः यहां मंगल मारकेश का काम करेगा। एकादश स्थान में मंगल वृश्चिक राशि का स्वगृही होगा। अपनी राशि में 'षडाष्टक योग' करने से यह मंगल शुभ फलदायक नहीं है। ऐसा जातक अनेक प्रकार के धंधे करेगा। सभी धंधों में उसे थोड़ा-थोड़ा लाभ मिलता रहेगा। जातक के पास बड़ा मकान होगा। जातक बड़ा व्यवसायी व उद्योगपति होगा।

दृष्टि–एकादश भावगत मंगल की दृष्टि धन स्थान (कुंभ राशि), पंचम भाव (वृष राशि) एवं छठे स्थान (मिथुन राशि) पर होगी। फलतः जातक धनी होगा।

जातक उत्तम संतति का स्वामी होगा। जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। रोग व ऋण पास नहीं आयेंगे।

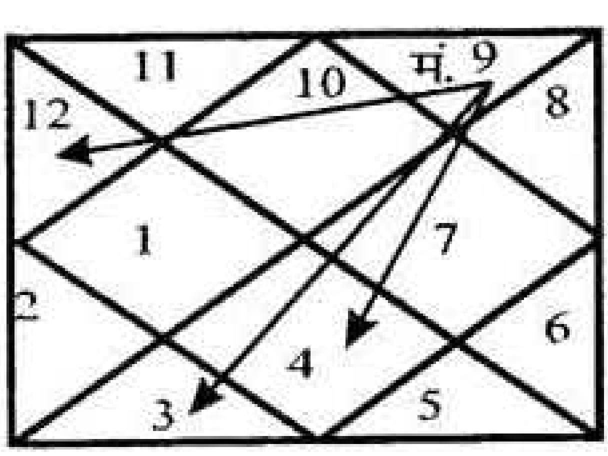
निशानी–जातक के प्रथम पुत्र होगा। कन्या भी होगी। दोनों का सुख रहेगा।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य लाभ में रुकावट डालेगा। जातक की भागीदारों से नहीं निभेगी।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां एकादश स्थान में दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में होंगे। चंद्रमा यहां नीच का तो मंगल स्वगृही होने से **'नीचभंग राजयोग'** बना फलत: **'महालक्ष्मी योग'** की सृष्टि हुई। यहां बैठकर दोनों ग्रह धन भाव (कुंभ राशि), पंचम भाव (वृष राशि) एवं षष्टम भाव (मिथुन राशि) को देखेंगे। फलत: जातक महाधनी होगा। जातक ऋण-रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। जातक का आर्थिक विकास प्रथम संतति के जन्म के बाद होगा।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध भाग्योदय कारक है। जातक उद्योगपति होगा।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ बृहस्पति मित्रों से लाभ दिलायेगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र विद्या योग तथा राजकीय लाभ देगा।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि जातक को उद्योग से धन देगा।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु व्यापार में नुकसान देगा।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु व्यापार में तनाव देगा।

मकरलग्न में मंगल की स्थिति द्वादश स्थान में



मकरलग्न में मंगल चतुर्थेश एवं लाभेश होने से अशुभ है, फलत: यहां मंगल मारकेश का काम करेगा। द्वादश स्थान में मंगल धनु राशि में होगा। मंगल की इस स्थिति से कुण्डली **'मांगलिक'** बनेगी। मंगल की इस स्थिति से **'सुखहीन योग'** एवं **'लाभभंग योग'** बना। जातक को जीवन में संघर्ष ज्यादा करना पड़ेगा। महर्षि पाराशर के अनुसार–**'जातो दुर्व्यसनी मूढः रुदाऽऽ लस्य समन्वितः'** जातक गृह सुख से हीन, दुर्व्यसनी व आलसी होता है। ऐसे जातक को यात्रा, विदेश प्रवास का योग अधिक होगा।

दृष्टि–द्वादश भावगत मंगल की दृष्टि पराक्रम स्थान (मीन राशि), छठे भाव (मिथुन राशि) एवं सप्तम भाव (कर्क राशि) पर होगी। जातक पराक्रमी होगा। जातक के शत्रु बहुत होंगे। जातक के विवाह सुख में बाधा आयेगी।

निशानी–जातक की मित्रता म्लेच्छों (निम्न वर्ग के लोगों) से ज्यादा होगी।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा अशुभ फल देगी।

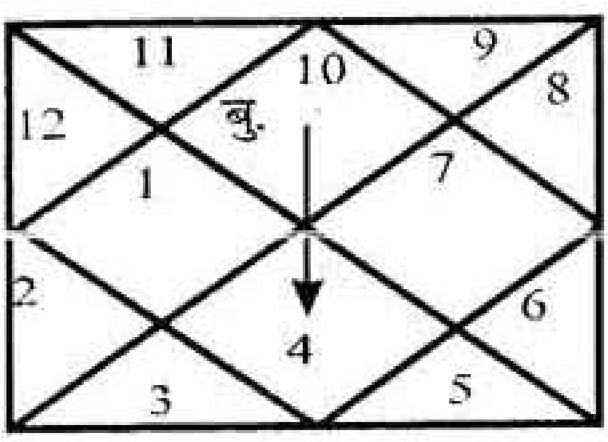
मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य होने से जातक के गृहस्थ जीवन के उत्तम फल, सभी सुख नष्ट हो जायेंगे।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां द्वादश भाव में दोनों ग्रह धनु राशि में होंगे। जहां बैठकर दोनों ग्रह तृतीय भाव (मीन राशि), षष्टम् भाव (मिथुन राशि) एवं सप्तम भाव (कर्क राशि) को देखेंगे। चंद्रमा के कारण '**विवाहभंग योग**' मंगल के कारण '**सुखहीन योग**' एवं '**लाभभंग योग**' भी बनेगा। ऐसा जातक धनवान तो होगा परन्तु सुख एवं लाभ में कमी महसूस करता रहेगा।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध '**भाग्यहीन योग**' एवं '**विपरीत राजयोग**' बनायेगा। जातक धनी होगा पर परेशान रहेगा।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ बृहस्पति स्वगृही होकर विमल नामक '**विपरीत राजयोग**' बनायेगा। जातक धनी, मानी एवं ऐश्वर्यशाली जीवन जीयेगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र '**राजभंग योग**' एवं '**संतानहीन योग**' बनायेगा। जातक को आर्थिक परेशानी एवं संतान संबंधी चिंता रहेगी।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि '**लग्नभंग योग**' एवं '**धनहीन योग**' बनाता है। जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु अचानक दुर्घटना, विस्फोट करा सकता है।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु शारीरिक कष्ट एवं मानसिक कष्ट का सूचक है।

❑❑❑

मकरलग्न में बुध की स्थिति

मकरलग्न में बुध की स्थिति प्रथम स्थान में



मकरलग्न में बुध षष्टेश एवं भाग्येश है। बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से यहां राजयोग कारक एवं शुभ फल देने वाला ग्रह है। बुध यहां प्रथम स्थान में मकर (सम) राशि में होकर '**कुलदीपक योग**' की सृष्टि कर रहा है। ऐसा जातक सुन्दर, संस्कारी, बौद्धिक चातुर्य से युक्त, कर्त्तव्यनिष्ठ, जिम्मेदार व्यक्ति होता है। '**लोमेश संहिता**' के अनुसार ऐसा जातक बड़ा ही गुणवान् तथा यशस्वी, कीर्तिवान् होगा। जातक अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।

दृष्टि–लग्नस्थ बुध मिथुन राशि से आठवें एवं कन्या राशि से पांचवें स्थान पर स्थित होकर सप्तम भाव (कर्क राशि) को देख रहा है। ऐसे जातक की कामेच्छा मंद होगी।

निशानी–ऐसा जातक अपने बुद्धिबल से शत्रुओं पर विजय पाता है।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

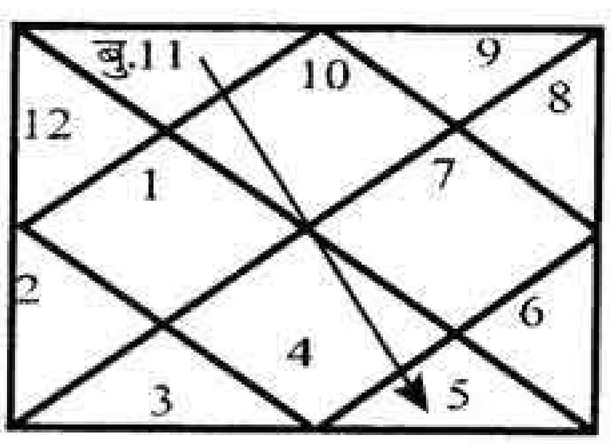
बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ चंद्रमा होने से जातक का जीवनसाथी अति सुन्दर होगा। पर जातक का चरित्र विवादास्पद होगा।
2. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होगा। प्रथम स्थान में मकर राशिगत यह युति वस्तुतः अष्टमेश सूर्य की भाग्येश+षष्टेश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह

सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। जातक बुद्धिमान व तेजस्वी होगा तथा अपने पराक्रम से रुपया कमायेगा। यहां पर यह युति ज्यादा नहीं खिलेगी फिर भी जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा एवं अपने कुल का नाम रोशन करेगा।

3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल उच्च का '**रुचक योग**' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी व ऐश्वर्यशाली होगा। जातक गांव या शहर का प्रमुख व्यक्ति होगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ बृहस्पति नीच का होकर '**केसरी योग**' बनायेगा। जातक पराक्रमी होगा तथा परोपकार, सामाजिक सेवा में रुपया खर्च करेगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र होने से जातक राजक्षेत्र, सरकारी क्षेत्र में प्रभावशाली व्यक्ति होगा एवं उसके पास सुन्दर वाहन होगा।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि होने से '**शश योग**' बनेगा। जातक बुद्धिशाली एवं धनवान होगा। जातक राजा के समान प्रभावशाली होगा।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु होने से जातक के दायें पैर में तकलीफ होगी।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु होने से जातक के गुप्त शत्रु बहुत होंगे।

मकरलग्न में बुध की स्थिति द्वितीय स्थान में



मकरलग्न में बुध षष्टेश एवं भाग्येश है। बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से यहां राजयोग कारक एवं शुभ फल देने वाला ग्रह है। बुध यहां द्वितीय स्थान में कुंभ (सम) राशि में है। ऐसा जातक धनवान, बौद्धिक चातुर्य से युक्त, कुशल वक्ता, विवेकी एवं धार्मिक होगा। लोमेश संहिता अ. 9/श्लोक 6 के अनुसार ऐसा जातक सदैव अपने भाग्योदय की चिंता करता रहता है। ऐसा जातक बड़ा ही धनवान, गुणवान्, कामी (विषयी), बड़ा विद्वान् एवं मनुष्यों को प्रिय लगने वाला व्यक्ति होता है।

दृष्टि–बुध मिथुन राशि से नवमें एवं कन्या राशि से छठे स्थान पर स्थित होकर अष्टम भाव (सिंह राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। जातक अपने ऋण-रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।

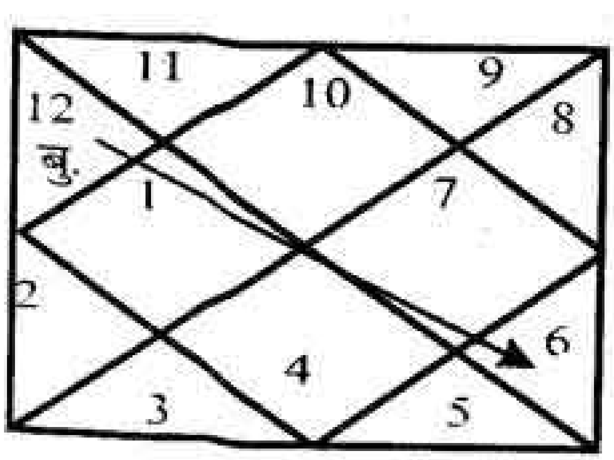
निशानी–जातक की वाणी विनम्र होगी।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक को वांछित धन की प्राप्ति होगी एवं जातक का भाग्योदय होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ चंद्रमा होने से जातक का सही भाग्योदय के बाद होगा।
2. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होगा। द्वितीय स्थान में कुंभ राशिगत यह युति वस्तुतः अष्टमेश सूर्य की षष्टेश+भाग्येश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा तथा दोनों ग्रह अष्टम भाव को देखेंगे, जो सूर्य का ही घर है। जातक बुद्धिमान व धनवान होगा। आमदनी के जरिए एक से अधिक प्रकार के रहेंगे। जातक में रोग से लड़ने की शक्ति होगी। जातक दीर्घजीवी तथा समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ सुखेश मंगल होने से जातक धनवान होगा। जातक विशाल भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ तृतीयेश गुरु होने से जातक को मित्रों से धन मिलेगा। जातक को यात्राओं से लाभ होगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र होने से जातक महाधनी होगा। जातक की वाणी अत्यधिक विनम्र एवं सहयोगत्मक होगी। **भावार्थ रत्नाकर** के अनुसार यदि यहां पंचम भाव में चंद्रमा हो तो **'राजराजेश्वर योग'** बनेगा। जातक राजाओं का राजा होगा।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि स्वगृही होने से जातक महाधनी होगा व भाग्यशाली होगा। जातक अपने पुरुषार्थ में खूब धन कमायेगा।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु होने से जातक को धन प्राप्ति में बाधा आयेगी तथा उसकी वाणी में हकलाहट होगी।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु जातक को अस्पष्ट वाणी देगा।

मकरलग्न में बुध की स्थिति तृतीय स्थान में



मकरलग्न में बुध षष्टेश एवं भाग्येश है। बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से यहां राजयोग कारक एवं शुभ फल देने वाला ग्रह है। बुध यहां तृतीय स्थान में नीच का है। मीन राशि के 15 अंशों में बुध परम नीच का होता है। ऐसा जातक धनी, यशस्वी, न्यायप्रिय, लोकप्रिय एवं भाग्यशाली होता

है। **लोमेश संहिता** के अनुसार ऐसा जातक सदैव भाग्योन्नति के विषय में चिन्तनशील रहेगा। जातक महाधनी, पराक्रमी, गुणवान्, विद्वान एवं कामी होगा।

दृष्टि–बुध मिथुन राशि से दसवें, कन्या राशि से सातवें स्थान पर होकर, भाग्य स्थान अपने ही घर को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलत: जातक का भाग्योदय, परिजनों एवं मित्रों की मदद से होगा एवं शीघ्र होगा।

निशानी–जातक कहलप्रिय नहीं होगा। युद्ध से दूर रहेगा।

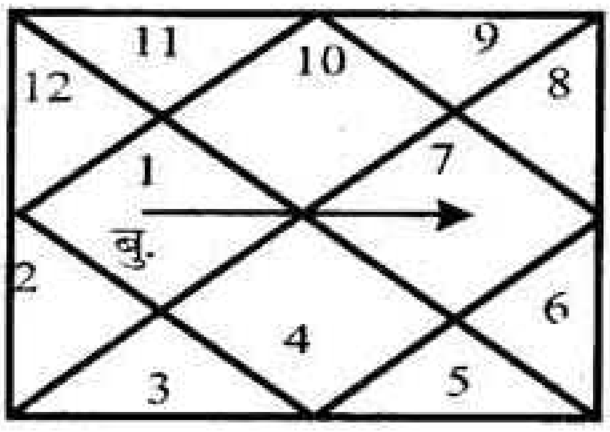
दशा–बुध की दशा--अंतर्दशा में जातक का पराक्रम बढ़ेगा तथा जातक का भाग्योदय होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ चंद्रमा जातक को अधिक बहनें देगा। ससुराल में सालियों, मामी, सासु से जातक की अच्छी पटेगी। स्त्री–मित्रों से लाभ होगा।
2. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होगा। तृतीय स्थान में मीन राशिगत यह युति वस्तुत: अष्टमेश सूर्य की षष्टेश+भाग्येश बुध के साथ युति होगी। बुध यहां नीच राशि का होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह भाग्य स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे जो कि बुध की उच्च-राशि होगी। फलत: जातक बुद्धिमान व भाग्यशाली होगा। जातक का पराक्रम तेज होगा। परिजन एवं इष्टमित्रों की मदद जीवन में मिलती रहेगी। जातक का भाग्योदय 26 वर्ष की आयु में होना शुरू होगा। जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल जातक को महान पराक्रमी बनायेगा। जातक को कुटुम्ब तथा भाई–बहनों से लाभ प्राप्त होगा
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ बृहस्पति होने से **'नीचभंग राजयोग'** बनेगा। जातक राजातुल्य पराक्रमी होगा। बुद्धि धार्मिक होगी। जातक आशावादी होगी एवं ईश्वर में विश्वास रखेगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र होने से **'नीचभंग राजयोग'** बनेगा। ऐसा जातक निश्चय ही राजातुल्य पराक्रमी एवं बड़े कुटुम्ब, मित्र–मंडली से घिरा रहगा।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि जातक को मित्रों द्वारा धन लाभ के संकेत देता है।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु होने से भाई–बहनों में विद्वेष रहेगा।

8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु होने से कुटम्बियों में मनमुटाव रहेगा पर जातक कीर्तिवान् होगा।

मकरलग्न में बुध की स्थिति चतुर्थ स्थान में



मकरलग्न में बुध षष्टेश एवं भाग्येश है। बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से यहां राजयोग कारक एवं शुभ फल देने वाला ग्रह है। बुध यहां चतुर्थ स्थान में मेष (सम) राशि का होकर '**कुलदीपक योग**' बना रहा है। ऐसे जातक को मकान-वाहन, माता-पिता, जमीन-जायदाद का पूर्ण सुख प्राप्त होता है। **लोमेश संहिता** के अनुसार ऐसा जातक राजमंत्री, सेना का अधिपति, राज (सरकार) में उच्च पद, सम्मान को प्राप्त करता है। जातक अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।

दृष्टि–बुध यहां मिथुन राशि से एकादश कन्या राशि से आठवें स्थान पर होकर दशम भाव (तुला राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। जातक को रोजी-रोजगार, व्यापार में पूरा-पूरा फायदा होगा।

निशानी–जातक के स्वयं की तुलना में जातक के माता-पिता अधिक धनी, सुखी व यशस्वी होंगे।

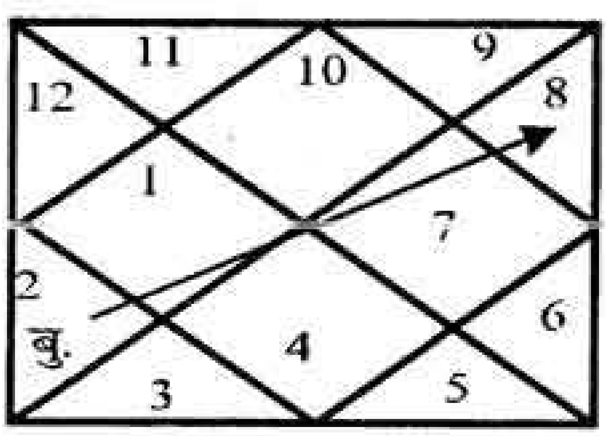
दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक को भौतिक सुख, उपलब्धियों की प्राप्ति होगी। जातक का भाग्योदय होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ चंद्रमा जातक को माता का सुख तो देगा पर जातक की मां बीमार रहेगी अथवा जातक के अपनी माता से विचार कम मिलेंगे।
2. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होगा। चतुर्थ स्थान में 'मेष राशिगत' यह युति वस्तुतः अष्टमेश सूर्य की षष्टेश+भाग्येश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां उच्च का होगा। सूर्य के कारण '**रविकृत राजयोग**' तथा बुध के कारण '**कुलदीपक योग**' बनेगा। बुद्धिमान होगा। कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा। जातक राज (सरकार) से लाभ उठायेगा। जातक उत्तम वाहन एवं मकान सुख को प्राप्त करता हुआ समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति कहलायेगा।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ यहां मंगल होने से '**रुचक योग**' बनेगा। जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली एवं उच्च वाहन का स्वामी होगा।

4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ बृहस्पति जातक को मकान का सुख देता है।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र होना जातक को उत्तम वाहन सुख देता है।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि नीच का होते हुए भी जातक भौतिक ऐश्वर्य से सम्पन्न, उत्तम वाहन का स्वामी होगा पर वाहन खर्चा बहुत करायेगा।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु वाहन दुर्घटना का संकेत देता है।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु होने से जातक की माता लम्बी बीमारी से ग्रसित रहेगी।

मकरलग्न में बुध की स्थिति पंचम स्थान में



मकरलग्न में बुध षष्टेश एवं भाग्येश है। बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से यहां राजयोग कारक एवं शुभ फल देने वाला ग्रह है। बुध यहां पंचम स्थान में वृष (मित्र) राशि का है। ऐसा जातक विद्या-बुद्धि, संतान के सुख से सुखी होगा। उच्च शैक्षणिक उपाधि मिलेगी। जातक आध्यात्मिक गुणों से सम्पन्न होगा। जातक व्यवहारिक बुद्धि एवं ज्ञान से सम्पन्न अति सभ्य व्यक्ति होगा।

दृष्टि–बुध यहां मिथुन राशि से द्वादश होने से षष्टम् भाव के दोष को नष्ट करेगा। कन्या राशि में नवम स्थान पर स्थित होकर एकादश स्थान (वृश्चिक राशि) को देखेगा। फलत: जातक को व्यापार से लाभ एवं बड़े भाई से लाभ देगा।

निशानी–जातक की कन्या संतति अधिक होंगी।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक को उत्तम विद्या की प्राप्ति होगी। जातक का भाग्योदय होगा।

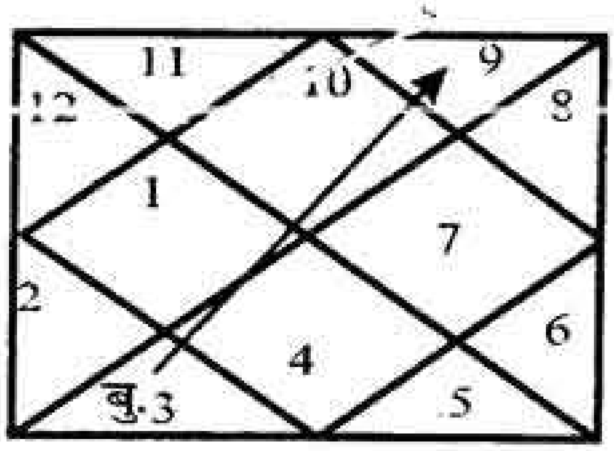
बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ चंद्रमा यहां उच्च का होगा। ऐसे जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होता है तथा प्रथम संतति के बाद पुन: भाग्योदय होगा।
2. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होगा। पंचम स्थान में वृष राशिगत यह युति वस्तुत अष्टमेश सूर्य की षष्टेश+भाग्येश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां पर बैठकर दोनों ग्रह लाभ स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: ऐसा जातक बुद्धिमान, भाग्यशाली, शिक्षित तथा प्रजावान

होगा। कन्या संतति की बाहुल्यता रहेगी। एक-दो गर्भपात होंगे। जातक व्यापार प्रिय होगा तथा समाज का अग्रगण्य प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल होने से जातक तकनीकी विद्या का जानकार एवं धनी होगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ बृहस्पति होने से जातक धर्मभीरू होगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र स्वगृही होगा। जातक का राजयोग शक्तिशाली होगा।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि होने से जातक का भाग्योदय विद्यार्जन के बाद होगा।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु की उपस्थिति विद्या में बाधक है।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु रुकावट के साथ विद्याध्ययन करायेगा।

मकरलग्न में बुध की स्थिति षष्टम स्थान में



मकरलग्न में बुध षष्टेश एवं भाग्येश है। बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से यहां राजयोग कारक एवं शुभ फल देने वाला ग्रह है। बुध यहां छठे स्थान में स्वगृही होकर हर्ष नामक **'विपरीत राजयोग'** तथा **'भाग्यभंग योग'** बना रहा है। ऐसा जातक धनी, मानी-अभिमानी एवं संपन्न व्यक्ति होगा। ऐसे जातक के विरोधियों की संख्या बहुत होती है, शत्रु बहुत होगे परंतु प्रबल आत्मविश्वास के कारण जातक शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। जातक एक सफल व्यक्ति होगा पर सफलता संघर्ष के बाद ही मिलेगी।

दृष्टि–बुध षष्टमस्थ होकर व्यय भाव (धनु राशि) पर दृष्टि करेगा। फलत: जातक खर्चीले स्वभाव का एवं यात्रा प्रेमी होगा।

निशानी–लोमेश संहिता अ. 92 श्लोक 4 के अनुसार जातक को अपने मामा एवं बड़े भाई का सुख नहीं मिलता।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

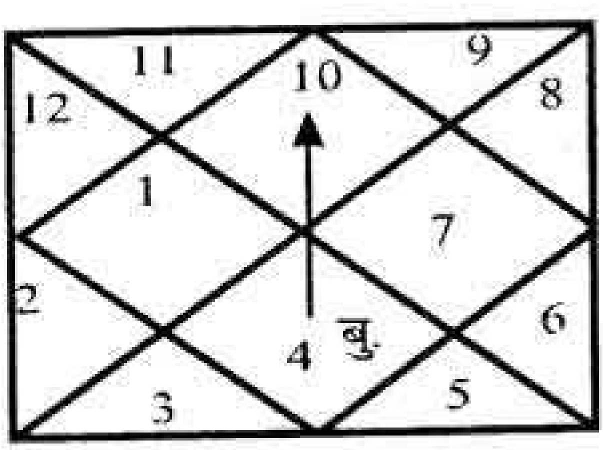
बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ चंद्रमा **'विलम्ब विवाह योग'** बनाता है। जातक धनवान होगा पर चरित्र विवादास्पद होगा।
2. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकर लग्न में सूर्य अष्टमेश होगा। छठे स्थान में मिथुन राशिगत यह युति वस्तुत: अष्टमेश सूर्य की षष्टेश+भाग्येश बुध

के साथ युति कहलायेगी। बुध यहां स्वगृही होगा तथा खर्च स्थान को देखेगा। षष्टेश षष्टम भाव में हो तो '**हर्ष योग**' बनता है। ऐसा जातक अपने शत्रुओं का जड़मूल से नाश करने में सक्षम होता है। अष्टमेश के छठे स्थान पर जाने से '**सरल योग**' की सृष्टि होती है। इससे जातक रोग से लड़ने में सक्षम होकर दीर्घजीवी होता है। फलतः ऐसा जातक बुद्धिशाली, धनवान, भाग्यशाली तथा समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है।

3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल '**सुखभंग योग**' एवं '**लाभभंग योग**' बनायेगा। जातक को भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ बृहस्पति '**पराक्रमभंग योग**' एवं विमल नामक '**विपरीत राजयोग**' बनायेगा। जातक को मित्रों से धोखा मिलेगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र '**विलम्ब विद्या योग**', '**राजभंग योग**' बनाता है। जातक को राजयोग में बाधा आयेगी।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि '**लग्नभंग योग**' एवं '**धनहीन योग**' बनायेगा। जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा। आर्थिक विषमताएं बनी रहेंगी।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु दायें जातक के पैर में चोट पहुंचायेगा।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु जातक के पांव में तकलीफ देगा।

मकरलग्न में बुध की स्थिति सप्तम स्थान में



मकरलग्न में बुध षष्टेश एवं भाग्येश है। बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से यहां राजयोग कारक एवं शुभ फल देने वाला ग्रह है। बुध यहां सातवें स्थान में कर्क (शत्रु) राशि का होकर '**कुलदीपक योग**' बना रहा है। जातक स्वयं विनम्र-सभ्य होगा तथा जातक का जीवन साथी भी सुंदर, विनम्र, सौम्य एवं सभ्य होगा। दोनों के संवेदनशील भावुक व कल्पनाशील होने के कारण विचारों में विषमता रहेगी। जातक अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।

दृष्टि–मिथुन राशि से बुध द्वितीय, कन्या राशि से ग्यारहवें स्थान पर स्थित होकर लग्न भाव (मकर राशि) को देखेगा। फलतः परिश्रमपूर्वक किये गये प्रयत्न से बराबर सफलता मिलेगी।

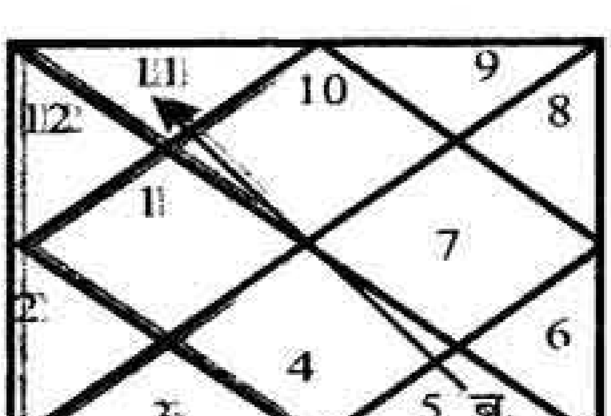
निशानी–'लोमेश संहिता अ. 9/श्लोक 5' के अनुसार ऐसा जातक बड़ा ही गुणवान्, यशस्वी एवं कीर्तिवान् होता है। जातक की सही उन्नति विवाह के बाद होगी।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में गृहस्थ सुख में बढ़ोतरी होगी। शत्रुओं का नाश होगा एवं भाग्योदय के नये अवसर प्राप्त होंगे।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ चंद्रमा स्वगृही होगा। ऐसे जातक की पत्नी सुन्दर होगी। जातक का स्वभाव विनम्र होगा।
2. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होगा। सातवें स्थान में कर्क राशिगत यह युति वस्तुत: अष्टमेश सूर्य की षष्टमेश+भाग्येश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह लग्न स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक बुद्धिमान होगा तथा उसका विवाह शीघ्र होगा। जातक धनवान होगा। उसके प्रयत्न निष्फल नहीं जायेंगे। जातक समाज का अग्रगण्य लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा तथा अपने कुटुम्ब-कुल का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल नीच का होगा। जातक को विवाह के बाद भूमि लाभ होगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ बृहस्पति उच्च का होगा, फलत: जातक का ससुराल पराक्रमी होगा। जीवनसाथी सुशील व धार्मिक होगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ यहां शुक्र होने से जातक का जीवनसाथी सुन्दर एवं सुडौल शरीर का स्वामी होगा।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि होने से जातक की पत्नी धनवान होगी। जातक के प्रयत्न सफल होंगे।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु **'द्विभार्या योग'** बनाता है।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु गृहस्थ सुख में बाधक है।

मकरलग्न में बुध की स्थिति अष्टम स्थान में



मकरलग्न में बुध षष्टेश एवं भाग्येश है। बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से यहां राजयोग कारक एवं शुभ फल देने वाला ग्रह है। बुध यहां आठवें स्थान में सिंह (मित्र) राशि में बैठकर हर्ष नामक **'विपरीत राजयोग'** एवं **'भाग्यभंग योग'** भी बना रहा है। ऐसा जातक धनी, मानी, अभिमानी एवं ऐश्वर्य सम्पन्न होता है। जातक के गुप्त शत्रु एवं

विरोधी बहुत होंगे। पर संघर्ष के बाद जातक को धन, यश एवं सफलता की प्राप्ति होंगी।

दृष्टि–मिथुन राशि से तीसरे, कन्या राशि से बारहवें होकर बुध की दृष्टि धन स्थान (कुंभ राशि) पर होगी। जातक धनवान होगा पर बीमारी में उसका रुपया खर्च होगा।

निशानी–जातक को मामा का सुख कमजोर रहेगा।

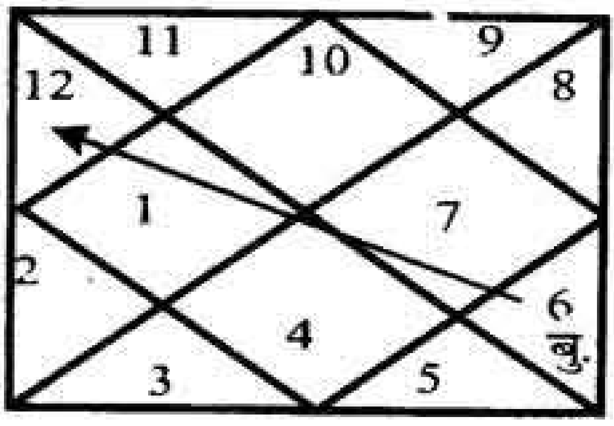
दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा अशुभ फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ चंद्रमा **'विलम्ब विवाह'** या अविवाह का योग बनाता है।
2. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होगा। अष्टम स्थान में सिंह राशिगत यह युति वस्तुत: अष्टमेश सूर्य की षष्टेश+भाग्येश बुध के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह धन स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। षष्टेश के आठवें जाने से '**हर्ष योग**' बना। जिसके कारण व्यक्ति शत्रुओं का नाश करने में समर्थ होगा। अष्टमेश के स्वगृही होकर अष्टम स्थान में बैठने से **'सरल योग'** बनता है। इस कारण जातक में रोग से लड़ने की शक्ति होती है। जातक दीर्घायु को प्राप्त करेगा। जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल **'सुखहीन योग'** एवं **'लाभभंग योग'** बनाता है। ऐसे जातक के विवाह सुख में विलम्ब या गड़बड़ उत्पन्न होगी।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ बृहस्पति **'पराक्रमभंग योग'** एवं विमल नामक **'विपरीत राजयोग'** बनाता है। जातक धनी होगा पर विवादास्पद व्यक्ति होगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र **'संतानहीन योग'** एवं **'राजभंग योग'** बनाता है। जातक को संतति विषयक चिंता रहेगी। सरकार से दण्डित होने का भय रहेगा।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि **'लग्नभंग योग'** एवं **'धनहीन योग'** बनाता है। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा। आर्थिक विषमताएं बनी रहेगी।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु दो पत्नी योग बनाता है।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु की युति विवाह सुख में बाधक है।

मकरलग्न में बुध की स्थिति नवम स्थान में

मकरलग्न में बुध षष्टेश एवं भाग्येश है। बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से यहां राजयोग कारक एवं शुभ फल देने वाला ग्रह है। बुध यहां नवम स्थान में उच्च



का है। कन्या राशि के 15 अंशों में बुध परमोच्च का होता है। जातक उच्च विद्या, उच्च राज्यपद एवं उच्च श्रेणी के व्यापार-व्यवसाय से सुखी व सम्पन्न होगा। जातक को माता-पिता का सुख एवं पिता की सम्पत्ति मिलेगी। ऐसे जातक को पत्नी व संतान का सुख भी उत्तम मिलता है।

दृष्टि—मिथुन राशि के चौथे स्थान पर स्थित होकर बुध की दृष्टि पराक्रम स्थान (मीन राशि) पर होगी। ऐसा जातक प्रबल पराक्रमी व पुरुषार्थी होगा एवं महत्वाकांक्षी होगा। उसकी महत्वाकांक्षाएं पूर्ण होती रहेगी।

निशानी—जातक को मित्रों से बड़ा लाभ होता रहेगा। लोमेश संहिता अ. 9/ श्लोक 1 के अनुसार ऐसा जातक देखने में अत्यन्त सुन्दर होता है। उसके अनेक भाई-बहन होते हैं। जिनके सहित वह सुखी रहता है।

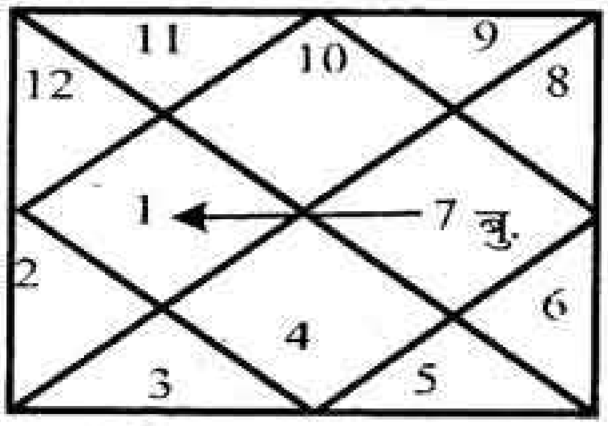
दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक के भाग्योदय का चरम विकास होगा। जातक का पराक्रम बढ़ेगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध+चंद्र**—बुध के साथ चंद्रमा जातक को भाग्यशाली जीवनसाथी देगा। विवाह के बाद जातक की किस्मत चमकेगी।
2. **बुध+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होगा। नवम स्थान में कन्या राशिगत यह युति वस्तुतः अष्टमेश, सूर्य की षष्टेश+भाग्येश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह पराक्रम स्थान को देखेंगे। यहां पर बुध उच्च राशि का होगा। फलतः ऐसा जातक प्रबल भाग्यशाली होगा। राजा के समान महान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली होगा एवं उसे पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
3. **बुध+मंगल**—बुध के साथ मंगल का होना जातक को माता-पिता की संपत्ति व सुख दिलायेगा।
4. **बुध+गुरु**—बुध के साथ बृहस्पति भाइयों व परिजनों से प्रेम बढ़ायेगा।
5. **बुध+शुक्र**—बुध के साथ शुक्र **'नीचभंग राजयोग'** बनायेगा। जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली जीवन जीयेगा।
6. **बुध+शनि**—यहां बुध के साथ शनि हो, तो 'भावार्थ रत्नाकर' के अनुसार जातक परम भाग्यवान् होता है क्योंकि लग्नेश, धनेश शनि की युति उच्च के भाग्येश के साथ भाग्य वृद्धि में सहायक होगी।

7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु भाग्य में अचानक उन्नति करायेगा। जातक को पैतृक सम्पत्ति से किनारा करना पड़ेगा।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु की युति जातक के भाग्योदय में सहायक है।

मकरलग्न में बुध की स्थिति दशम स्थान में



मकरलग्न में बुध षष्टेश एवं भाग्येश है। बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से यहां राजयोग कारक एवं शुभ फल देने वाला ग्रह है। बुध यहां दशम स्थान में तुला (मित्र) राशि से होकर '**कुलदीपक योग**' बना रहा है। ऐसा जातक बुद्धिमान, वाक्पटु, मृदु एवं विनोदी स्वभाव का होकर व्यापार-प्रिय होता है। ऐसे जातक को रोजी-रोजगार की तकलींफ नहीं होगी। जातक को राज (सरकार) से मान-सम्मान की प्राप्ति होगी।

दृष्टि–मिथुन राशि से पाचवें एवं कन्या राशि से दूसरे स्थान पर स्थित होकर बुध की दृष्टि चतुर्थ भाव (मेष राशि) पर होगी। जातक को उत्तम वाहन एवं उत्तम भवन का सुख मिलेगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अ. 9/श्लोक 2 के अनुसार–**'भाग्येशे दशमे तुर्ये, मंत्री सेनापतिः भवेत्'** ऐसा जातक राजमंत्री, सेनापति या सरकार में उच्च पद-प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक का रोजी-रोजगार, व्यापार बढ़ेगा। जातक की उन्नति होगी एवं उसे भाग्योदय के नये अवसर प्राप्त होंगे।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ चंद्रमा राज सम्मान का सूचक है। जातक को विवाह के बाद रोजी-रोजगार के नये अवसर प्राप्त होंगे।
2. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होगा। दशम स्थान में तुला राशिगत यह युति वस्तुतः अष्टमेश सूर्य की षष्टेश+भाग्येश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह सुख भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। सूर्य यहां नीच का होगा। '**कुलदीपक योग**' के कारण जातक अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा। जातक उत्तम वाहन का स्वामी होगा। उसे माता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

3. **बुध+मंगल**—बुध के साथ मंगल भौतिक सुखों में वृद्धि करेगा। जातक के पास एक से अधिक वाहन होंगे।

4. **बुध+गुरु**—बुध के साथ बृहस्पति मित्रों से लाभ दिलायेगा।

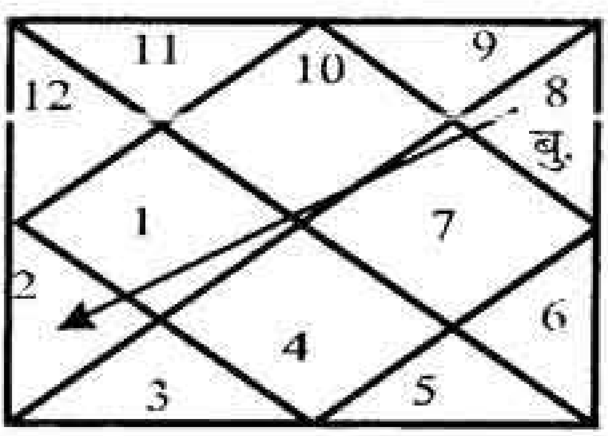
5. **बुध+शुक्र**—बुध के साथ शुक्र होने से **'मालव्य योग'** बनेगा। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्यशाली होगा। जातक के पास चार पहियों की गाड़ी होगी।

6. **बुध+शनि**—बुध के साथ शनि होने से **'शश योग'** बनेगा। जातक राजा के समान वैभवशाली व पुरुषार्थी होगा।

7. **बुध+राहु**—बुध के साथ राहु राजयोग में बाधक है।

8. **बुध+केतु**—बुध के साथ केतु राज सरकार से सम्मान दिलायेगी।

मकरलग्न में बुध की स्थिति एकादश स्थान में



मकरलग्न में बुध षष्टेश एवं भाग्येश है। बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से यहां राजयोग कारक एवं शुभ फल देने वाला ग्रह है। बुध यहां एकदश स्थान में वृश्चिक (सम) राशि में होगा। ऐसे जातक को उच्च विद्या का योग बनता है। जातक को व्यापार से लाभ होगा। **'लोमेश संहिता'** के अनुसार ऐसा मनुष्य बड़ा ही भाग्यशाली, जनप्रिय, गुरुभक्त, स्वाभिमानी, धैर्यवान् एवं अनेक सद्गुणों से युक्त होता है।

दृष्टि—यहां बुध मिथुन राशि से छठे, कन्या राशि से तीसरे स्थान पर स्थित होकर पंचम भाव (वृष राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। जातक को कन्या संतति की बाहुल्यता रहेगी।

निशानी—जातक का मस्तिष्क ऊर्जावान् होगा एवं बुद्धि रचनात्मक होगी।

दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

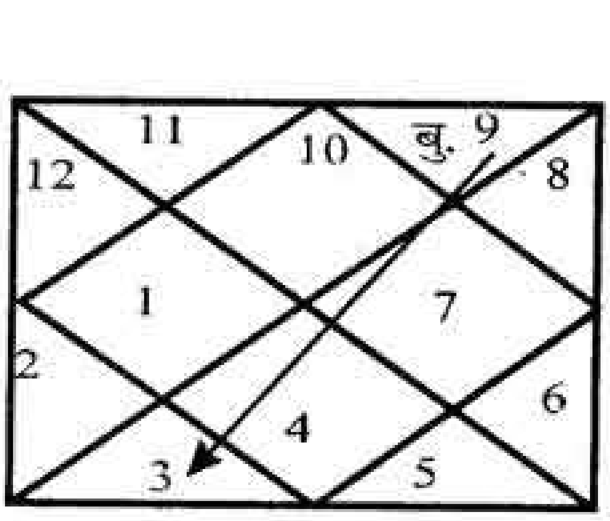
1. **बुध+चंद्र**—यहां बुध के साथ चंद्रमा नीच का होगा। जातक का भाग्योदय विवाह के तत्काल बाद होगा। जातक की पत्नी पढ़ी-लिखी होगी।

2. **बुध+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होगा। एकादश स्थान में वृश्चिक राशिगत यह युति वस्तुतः अष्टमेश सूर्य की षष्टेश+भाग्येश

बुध के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह पंचम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक बुद्धिमान होगा। व्यापारी वर्गी होगा तथा व्यापार द्वारा प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करेगा। जातक शिक्षित होगा एवं जातक की संतति भी शिक्षित होगी। जातक समाज का अग्रगण्य लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल यहां स्वगृही होगा। फलत: जातक को उत्तम मकान एवं वाहन का सुख मिलेगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ बृहस्पति जातक को बड़े भाई का सुख एवं व्यापार में लाभ देगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र जातक को सरकारी नौकरी दिलायेगा या व्यापार से उत्तम लाभ दिलायेगा।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि जातक को धनवान बनायेगा तथा बड़ा व्यापार करायेगा।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु की युति लाभ में बाधक है।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु मिश्रित फलदायक साबित होगा।

मकरलग्न में बुध की स्थिति द्वादश स्थान में



मकरलग्न में बुध षष्टेश एवं भाग्येश है। बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से यहां राजयोग कारक एवं शुभ फल देने वाला ग्रह है। बुध यहां द्वादश स्थान में धनु राशि में है। बुध की इस स्थिति के कारण हर्षनामक **'विपरीत राजयोग'** एवं **'भाग्यभंग योग'** बनेगा। ऐसा जातक धनी, मानी, अभिमानी तथा ऐश्वर्य सम्पन्न होगा, पर भाग्योदय हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा। जातक के व्यापार-व्यवसाय में काफी उतार-चढ़ाव आयेगा।

दृष्टि–मिथुन राशि से सातवें व कन्या राशि से चौथे स्थान पर स्थित होकर बुध की दृष्टि अपने ही घर छठे भाव (मिथुन राशि) पर होगी। फलत: जातक ऋण, रोग व शत्रुओं का नाश करने में समर्थ होगा।

निशानी–ऐसे जातक द्वारा निर्णय प्राय: उतावलेपन में लिये जायेंगे, जो गलत होंगे।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

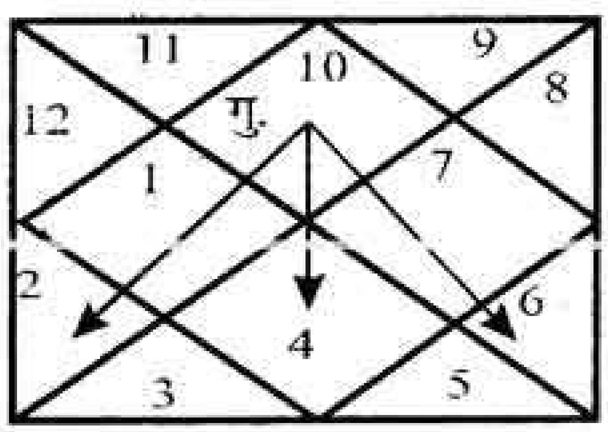
बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ चंद्रमा '**विवाहभंग योग**' बनाता तथा जातक को विवाह सुख से वंचित करता है।
2. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होगा। द्वादश स्थान में धनु राशिगत यह युति वस्तुत: अष्टमेश सूर्य की षष्टेश+भाग्येश बुध के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह छठे भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। षष्टेश बुध बारहवें स्थान पर होने से '**हर्ष योग**' बनेगा। फलत: जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। अष्टमेश सूर्य के बारहवें जाने से '**सरल योग**' बनेगा जो कि जातक को रोग से लड़ने की शक्ति व सामर्थ्य देगा तथा जातक दीर्घजीवी होगा। जातक समाज का अग्रगण्य प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल की युति '**सुखहीन योग**' एवं '**लाभभंग योग**' की सृष्टि करेगी। ऐसे जातक को मंगल संबंधी कार्यों में हानि एवं भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ता है।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ बृहस्पति जातक के धन को परोपकार में खर्च करेगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र की युति होने से विद्या में बाधा, संतान सुख में कमी एवं '**राजबाधा योग**' बनता है।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि '**लग्नभंग योग**' एवं '**धनहीन योग**' बनायेगा। जातक को आर्थिक विषमताओं का सामना करना पड़ेगा।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु यात्रा में हानि करायेगा।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु जातक के भाग्योदय में विलम्ब करायेगा।

❑❑❑

मकरलग्न में बृहस्पति की स्थिति

मकरलग्न में बृहस्पति की स्थिति प्रथम स्थान में



मकरलग्न में बृहस्पति तृतीयेश एवं व्ययेश है। अतः बृहस्पति यहां अशुभ फलदायक एवं परम पापी है। गुरु यहां लग्न में नीच राशि का होगा। मकर राशि के अंशों में गुरु परम नीच का होगा। बृहस्पति की यह स्थिति **'कुलदीपक योग'** एवं **'केसरी योग'** बनाती है। ऐसे जातक कृशकाय होते हैं। जातक की पत्नी सुन्दर व धर्मभीरू होगी। जातक पढ़ा-लिखा व शिक्षित होगा।

दृष्टि–लग्नस्थ बृहस्पति की दृष्टि पंचम स्थान (वृष राशि), सप्तम स्थान (कर्क राशि) एवं भाग्य स्थान (कन्या राशि) पर होगी। जातक पुत्रवान होगा। जातक का गृहस्थ सुख उत्तम होगा। जातक भाग्यशाली होगा परन्तु संघर्ष की स्थिति बनी रहेगी।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 3 श्लोक 6 के अनुसार तृतीयेश यदि लग्न में हो तो जातक अपने पराक्रम में खूब धन कमाता है। ऐसा जातक सदैव रोगी, साहसी परन्तु दूसरों की सेवा करने वाला होता है।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में शुभ फलों की प्राप्ति होगी।

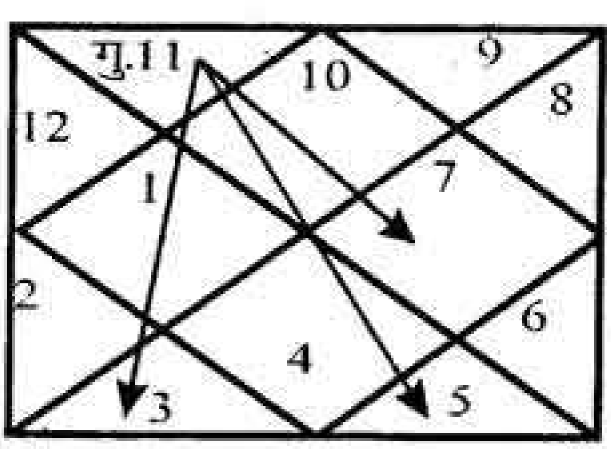
बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बृहस्पति+चंद्र**–आपका जन्म मकरलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न के प्रथम भाव में गुरु+चंद्र की युति 'मकर राशि' में होगी। यह युति वस्तुत सप्तमेश चंद्रमा की व्ययेश+तृतीयेश बृहस्पति के साथ युति होगी। बृहस्पति यहां नीच राशि में होगा। लग्नस्थ दोनों ग्रह क्रमशः **'कुलदीपक योग'**, **'यामिनीनाथ योग'** की सृष्टि करते हुए पंचम भाव, सप्तम भाव एवं

भाग्य भवन को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक के विवाह के तत्काल बाद भाग्योदय होगा। दूसरा भाग्योदय प्रथम संतति के बाद होगा। जातक की गिनती समाज के अग्रगण्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों में होगी।

2. **बृहस्पति+सूर्य**–बृहस्पति के साथ सूर्य जातक को आध्यात्मिक शक्ति से ओत-प्रोत करेगा।
3. **बृहस्पति+मंगल**–बृहस्पति के साथ मंगल '**रुचक योग**' एवं '**नीचभंग राजयोग**' बनायेगा। ऐसा जातक राजा के समान धनी व यशस्वी होगा।
4. **बृहस्पति+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध की युति जातक को भाग्यशाली बनायेगी।
5. **बृहस्पति+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र उत्तम राजयोग एवं उत्तम विद्या व सुंदर संतति देगा।
6. **बृहस्पति+शनि**–बृहस्पति के साथ यहां शनि होने पर '**नीचभंग राजयोग**' एवं '**शश योग**' बनाता है। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी एवं धनी होता है।
7. **बृहस्पति+राहु**–यहां दोनों ग्रह मकर राशि में है। बृहस्पति यहां नीच राशि में होकर भी '**कुलदीपक योग**', '**केसरी योग**' बना रहा है, तो राहु के सम राशि में होने से '**चाण्डाल योग**' बना। ऐसा जातक स्थाई धंधे, रोजगार की तलाश में इधर-उधर भटकता रहेगा। चित्त अशान्त रहेगा।
8. **गुरु+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु जातक के चेहरे पर अप्रिय निशान बनायेगा।

मकरलग्न में बृहस्पति की स्थिति द्वितीय स्थान में



मकरलग्न में बृहस्पति तृतीयेश एवं व्ययेश है। अत: बृहस्पति यहां अशुभ फलदायक एवं परम पापी है। बृहस्पति यहां द्वितीय स्थान में कुंभ (सम) राशि में है। ऐसे जातक को धनसंग्रह तथा कुटुम्ब सुख में दिक्कतें आती हैं तथा संतान सुख में भी दिक्कतें आती है। जातक दूसरों का धन हड़पने में रुचि रखता है। खासकर स्त्री-धन पर जातक की नीयत खराब रहती है।

दृष्टि–द्वितीयस्थ बृहस्पति की दृष्टि छठे स्थान (मिथुन राशि), अष्टम स्थान (सिंह राशि) एवं दशम स्थान (तुला राशि) पर होगी। जातक के गुप्त शत्रु बहुत होंगे। जातक रोगी तथा स्थूलकाय होगा। जातक अपने रोजगार से संतुष्ट नहीं होगा।

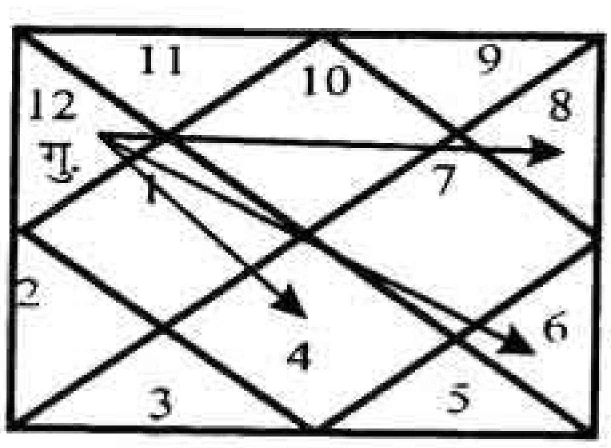
निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 3 श्लोक 7 के अनुसार ऐसे जातक को गुदाभंजन का शौक होता है। वे समलैंगिक होते हैं।

दशा—बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा संघर्षकारी साबित होगी। जातक का पराक्रम बढ़ेगा पर व्यर्थ का खर्च भी बहुत होगा।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बृहस्पति+चंद्र**—आपका जन्म मकरलग्न में हुआ है। 'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न के द्वितीय भाव में गुरु+चंद्र की युति 'कुंभ राशि' में होगी। यह युति वस्तुतः सप्तमेश चंद्रमा की व्ययेश+तृतीयेश बृहस्पति के साथ युति है। यहां बैठकर दोनों ग्रह षष्टम, अष्टम स्थान एवं दशम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक को ऋण-रोग व शत्रु का भय नहीं रहेगा। जातक रोग व शत्रु का नाश करने में पूर्णतः सक्षम होगा। उसे राज्यपक्ष (सरकार) कोर्ट-कचहरी में विजय मिलेगी। यह योग जातक के लिए 60% शुभ फलदायक है।
2. **बृहस्पति+सूर्य**-बृहस्पति के साथ सूर्य धन हानि में वृद्धि करेगा। ऐसा जातक अपनी आमदनी से संतुष्ट नहीं होगा।
3. **बृहस्पति+मंगल**—बृहस्पति के साथ मंगल जातक को धनी बनायेगा।
4. **बृहस्पति+बुध**—बृहस्पति के साथ बुध जातक को भाग्यशाली बनायेगा।
5. **बृहस्पति+शुक्र**—बृहस्पति के साथ शुक्र होने से जातक निश्चित रूप से धनी होगा। जातक की वाणी विनम्र होगी।
6. **बृहस्पति+शनि**—बृहस्पति के साथ शनि जातक को महाधनी बनायेगा। ऐसा जातक बड़ी उम्र के लोगों के मार्गदर्शन में आगे बढ़ेगा।
7. **बृहस्पति+राहु**—यहां दोनों ग्रह कुंभ राशि में हैं। बृहस्पति यहां सम राशि में है, तो राहु अपनी मूलत्रिकोण राशि में होने से '**चाण्डाल योग**' बना जातक को धनाभाव बना रहेगा। आर्थिक विषमताएं जातक को परेशान करती रहेंगी। जातक की वाणी कठोर (कर्कश) होगी।
8. **बृहस्पति+केतु**—बृहस्पति के साथ केतु आर्थिक संघर्ष की द्योतक है।

मकरलग्न में बृहस्पति की स्थिति तृतीय स्थान में



मकरलग्न में बृहस्पति तृतीयेश एवं व्ययेश है। अतः बृहस्पति यहां अशुभ फलदायक एवं परम पापी है। बृहस्पति यहां तृतीय स्थान में स्वगृही होगा। ऐसे जातक को पिता का सुख व सम्पत्ति मिलेगी। जातक को पत्नी, संतान, भाई-बहनों का सुख मिलेगा। जातक धार्मिक होगा एवं आध्यात्म विद्या में पूर्ण रुचि रखेगा।

दृष्टि–तृतीयस्थ बृहस्पति की दृष्टि सप्तम भाव (कर्क राशि), भाग्य भवन (कन्या राशि) एवं लाभ भवन (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक की पत्नी पतिव्रता होगी। जातक भाग्यशाली होगा। जातक को व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा।

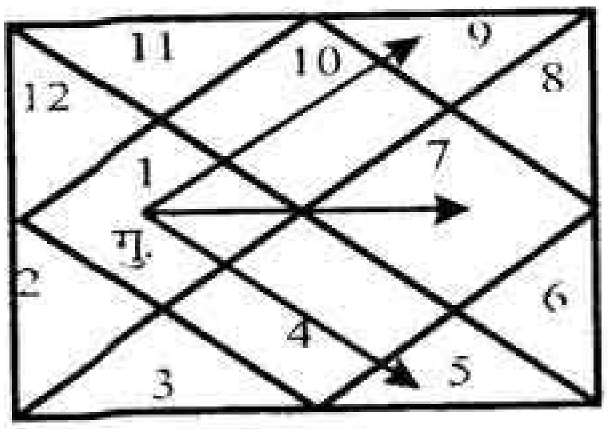
निशानी– **'लोमेश संहिता'** के अनुसार तृतीयेश यदि तृतीय स्थान में हो तो ऐसा मनुष्य बड़ा पराक्रमी, पुत्र सुख से युक्त, धनवान्, हृष्ट-पुष्ट बलवान् एवं अद्‌भुत सुख व ऐश्वर्य भोगने वाला होता है।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बृहस्पति+चंद्र**–आपका जन्म मकरलग्न में हुआ है। 'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न के तृतीय भाव में गुरु+चंद्र की युति 'मीन राशि' के अंतर्गत होगी। यह युति वस्तुतः सप्तमेश चंद्रमा की व्ययेश+तृतीयेश बृहस्पति के साथ युति है। यहां बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव, नवम भाव एवं एकादश भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। यहां बृहस्पति स्वगृही होगा। फलतः जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा। जातक का वैवाहिक जीवन सुखमय होगा तथा जातक को व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा। जातक के मित्र, परिजन जातक के सहायक होंगे। जातक महान पराक्रमी होगा।
2. **बृहस्पति+सूर्य**-बृहस्पति के साथ सूर्य जातक को विशेष पराक्रमी बनायेगा। परन्तु भाइयों में नहीं बनेगी।
3. **बृहस्पति+मंगल**–बृहस्पति के साथ मंगल जातक को भाइयों से लाभ देगा। जातक महान् पराक्रमी होगा। जातक के चार या उससे अधिक भाई हो सकते हैं।
4. **बृहस्पति+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध की युति होने से जातक स्वयं भाग्यशाली होगा। जातक के मित्र भी भाग्यशाली होंगे।
5. **बृहस्पति+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र **'किम्बहुना नामक राजयोग'** बनायेगा। जातक महान प्रतापी होगा। उसके बहुत से रिश्तेदार, मित्र व शुभचिंतक होंगे।
6. **बृहस्पति+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि मित्रों से धन लाभ करायेगा। जातक को जनसंपर्क से लाभ होगा।
7. **बृहस्पति+राहु**–यहां दोनों ग्रह मीन राशि में हैं। बृहस्पति यहां स्वगृही होगा तथा राहु के अपनी नीच राशि में होने से **'चाण्डाल योग'** बना। परिजनों में वैमनस्य रहेगा। मित्र बृहस्पति दगा देंगे फिर भी राहु के कारण जातक प्रबल पराक्रमी होगा।
8. **बृहस्पति+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु जातक को यशस्वी, लेखक व साहित्यकार बनायेगा।

मकरलग्न में बृहस्पति की स्थिति चतुर्थ स्थान में



मकरलग्न में बृहस्पति तृतीयेश एवं व्ययेश है। अत: बृहस्पति यहां अशुभ फलदायक एवं परम पापी है। बृहस्पति यहां चतुर्थ स्थान में मेष (मित्र) राशि का होकर, **'कुलदीपक योग'**, **'केसरी योग'** बनायेगा। जातक अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा। जातक सबका चहेता व प्यारा होगा। ऐसा जातक सदैव सुखमय जीवन व्यतीत करेगा परन्तु यश, धन, पद-प्रतिष्ठा का उतना लाभ नहीं मिलेगा जितना मिलना चाहिए।

दृष्टि–चतुर्थ भावगत बृहस्पति की दृष्टि अष्टम भाव (सिंह राशि), दशम भाव (तुला राशि) एवं द्वादश भाव (धनु राशि) पर होगी। फलत: जातक ऋण, रोग व शत्रु पर विजय प्राप्त करने में सक्षम होगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 3/श्लोक 2' के अनुसार ऐसे जातक की पत्नी क्रूर व क्रोधी स्वभाव की होगी।

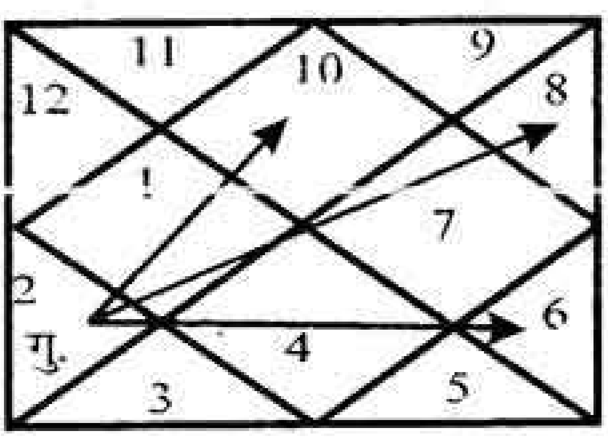
दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा सामान्य फल देगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बृहस्पति+चंद्र**–आपका जन्म मकरलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न के चतुर्थ भाव में गुरु+चंद्र की युति 'मेष राशि' में होगी। यहां यह युति वस्तुत: सप्तमेश चंद्रमा की व्ययेश+तृतीयेश बृहस्पति के साथ युति होगी। यह युति केन्द्रवर्ती होने के कारण **'यामिनीनाथ योग'** एवं **'कुलदीपक योग'** की सृष्टि होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टम भाव, दशम भाव एवं व्यय भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक का धन शुभ कार्य एवं परोपकार कार्य में खर्च होगा। जातक का दुर्घटनाओं व संकट से बचाव होता रहेगा। जातक को कोर्ट-कचहरी में विजय मिलेगी।
2. **बृहस्पति+सूर्य**-बृहस्पति के साथ सूर्य हो तो **'राजयोग'** शक्तिशाली होगा क्योंकि मकर लग्न में अकेला गुरु निर्बल होता है।
3. **बृहस्पति+मंगल**–बृहस्पति के साथ मंगल **'रुचक योग'** बनायेगा। ऐसा जातक बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा।
4. **बृहस्पति+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध जातक को पराक्रमी, बुद्धिजीवी एवं महातेजस्वी बनायेगा।

5. **बृहस्पति+शुक्र**—बृहस्पति के साथ शुक्र जातक का राजयोग बलवान बनाता है। जातक का राजा द्वारा सम्मान होगा।
6. **बृहस्पति+शनि**—बृहस्पति के साथ शनि जातक को मित्र से लाभ देगा पर जातक की माता बीमार रहेगी।
7. **बृहस्पति+राहु**—यहां दोनों ग्रह मेष राशि में है। बृहस्पति यहां मित्र राशि में, तो राहु सम राशि में होने से '**चाण्डाल योग**' बना। '**केसरी योग**' एवं '**कुलदीपक योग**' भी बृहस्पति बना रहा है। जातक बुद्धिमान व समझदार होगा पर उसकी माता बीमार रहेगी। वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।
8. **बृहस्पति+केतु**—बृहस्पति के साथ केतु जातक की माता को लम्बी बीमारी देगा।

मकरलग्न में बृहस्पति की स्थिति पंचम स्थान में



मकरलग्न में बृहस्पति तृतीयेश एवं व्ययेश है। अत: बृहस्पति यहां अशुभ फलदायक एवं परम पापी है। बृहस्पति यहां पंचम भाव में वृष (शत्रु) राशि में होगा। ऐसे जातक को पिता एवं ज्येष्ठ सहोदर का पूरा सुख मिलेगा। जातक को उच्च शैक्षणिक उपाधि मिलेगी। जातक को पुत्र संतान का सुख प्राप्त होगा। जातक को उच्च पद-प्रतिष्ठा मिलेगी।

दृष्टि—पंचमस्थ बृहस्पति की दृष्टि भाग्य भवन (कन्या राशि), लाभ भवन (वृश्चिक राशि) एवं लग्न भाव (मकर राशि) पर होगी। जातक भाग्यशाली होगा तथा उसे व्यापार से लाभ होगा। जातक स्व विवेक एवं बुद्धिबल से आगे बढ़ेगा।

निशानी—'लोमेश संहिता' अध्याय 3/ श्लोक 2 के अनुसार यदि तृतीयेश पंचम स्थान में हो तो जातक की पत्नी क्रूर व क्रोधी स्वभाव की होगी।

दशा—बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी। नई जानकारियां मिलेंगी। नवीन ज्ञान की प्राप्ति होगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बृहस्पति+चंद्र**—आपका जन्म मकरलग्न में हुआ है। 'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न के पंचम भाव में गुरु+चंद्र की युति 'वृष राशि' में होगी। वृष राशि में यह युति वस्तुत: सप्तमेश चंद्रमा की व्ययेश+तृतीयेश बृहस्पति के साथ युति होगी। यहां चंद्रमा उच्च का होगा। यहां से दोनों शुभ ग्रह भाग्य भवन, लाभ स्थान एवं लग्न स्थान को देखेंगे। फलत: जातक का भाग्योदय प्रथम संतान

के बाद होगा। जातक को व्यापार-व्यवसाय से लाभ होगा। जातक व्यापार से कमायेगा। ऐसे जातक का सर्वांगीण विकास होगा। उनकी गणना समाज के अग्रगण्य प्रतिष्ठित लोगों में होगी।

2. **बृहस्पति+सूर्य**–बृहस्पति के साथ सूर्य जातक को प्रथम संतति हाथ नहीं लगने देगा। जातक की एकाध संतान की अपरिपक्व अवस्था में मृत्यु संभव है।

3. **बृहस्पति+मंगल**–बृहस्पति के साथ मंगल जातक का भाग्योदय प्रथम संतान के बाद होगा।

4. **बृहस्पति+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध जातक को आध्यात्मिक एवं भाग्यशाली बनायेगा।

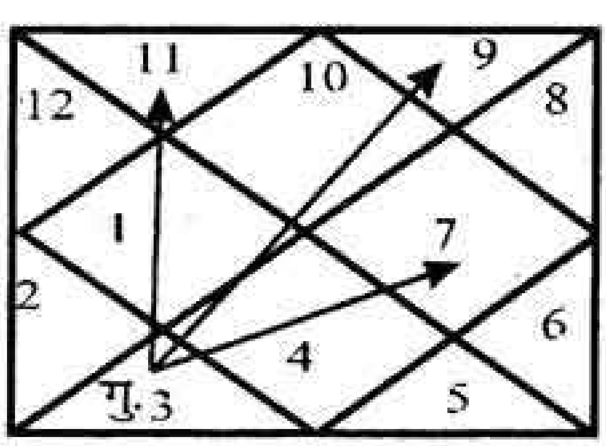
5. **बृहस्पति+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र स्वगृही होने से जातक का राजयोग शक्तिशाली होगा एवं उसकी विद्या उत्कृष्ट होगी।

6. **बृहस्पति+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि होने से जातक परिश्रमी, पुरुषार्थी एवं यशस्वी होगा।

7. **बृहस्पति+राहु**–यहां दोनों ग्रह वृष राशि में हैं। बृहस्पति यहां शत्रु राशि में तो राहु उच्च राशि में होने से **'चाण्डाल योग'** बना। जातक को विद्या प्राप्ति में बाधा आयेगी एवं पुत्र संतति को लेकर चिंता बनी रहेगी।

8. **बृहस्पति+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु जातक को विद्या प्राप्ति में प्रारंभिक रुकावट देगा।

मकरलग्न में बृहस्पति की स्थिति षष्टम स्थान में



मकरलग्न में बृहस्पति तृतीयेश एवं व्ययेश है। अतः गुरु यहां अशुभ फलदायक एवं परम पापी है। गुरु यहां छठे भाव में मिथुन (शत्रु) राशि में होकर विमल नामक **'विपरीत राजयोग'** बनायेगा। ऐसा जातक धनी-मानी होगा। जीवन के समस्त ऐश्वर्य, भौतिक सुखों की प्राप्ति जातक को सहज में हो जायेगी। यहां **'पराक्रमभंग योग'** होने के कारण जातक अपने इष्ट-मित्रों व संबंधियों द्वारा प्रताड़ित होगा। जातक को ऋण, रोग व शत्रु परेशान करते रहेंगे।

दृष्टि–षष्टमस्थ बृहस्पति की दृष्टि दशम स्थान (तुला राशि), द्वादश स्थान (धनु राशि) एवं धन भाव (कुंभ राशि) पर होगी। जातक की राजनीति में रुचि रहेगी। यात्रा में नुकसान की संभावना रहेगी। धन प्राप्ति के प्रयासों में कठिनाई महसूस करेंगे।

निशानी– **'लोमेश संहिता'** अध्याय 3/श्लोक 3 के अनुसार जातक के भाई ही जातक का शत्रु होता है। जातक को मामा का सुख नहीं होता।

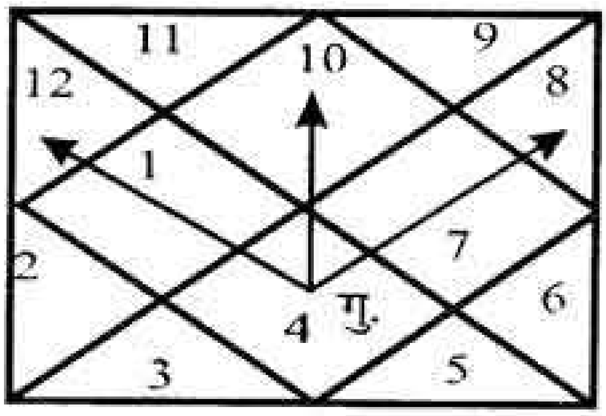
दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बृहस्पति+चंद्र**–आपका जन्म मकरलग्न में हुआ है। 'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न के छठे भाव में गुरु+चंद्र की युति 'मिथुन राशि' में होगी। यह युति वस्तुत: चंद्रमा की व्ययेश+तृतीयेश बृहस्पति के साथ युति है। चंद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री है। यहां पर खड्ढे में गिरे बृहस्पति के कारण **'पराक्रमभंग योग'** तथा चंद्रमा के कारण **'विवाहभंग योग'** भी बना। यहां बैठकर दोनों ग्रह दशम भाव, व्यय भाव एवं धन भाव को देखेंगे। फलत: जातक को यथेष्ट धन की प्राप्ति होती रहेगी। जातक को मित्रों से धोखा मिलेगा। जातक का अपने जीवन साथी से मनमुटाव होगा। जातक खर्चीली प्रवृत्ति का होगा पर **'गजकेसरी योग'** के कारण जातक सभी संकटों से पार निकल जायेगा तथा एक सफल व्यक्ति कहलायेगा।
2. **बृहस्पति+सूर्य**-बृहस्पति के साथ सूर्य सरल नामक **'विपरीत राजयोग'** बनायेगा। जातक धनी होगा तथा उसे भौतिक सुख-सुविधाएं पूर्ण रूप से प्राप्त होगी।
3. **बृहस्पति+मंगल**–बृहस्पति के साथ मंगल **'सुखहीन योग'** व **'लाभभंग योग'** बना रहा है। जातक को भाग्योदय हेतु अति कठोर परिश्रम करना पड़ेगा।
4. **बृहस्पति+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध **'विपरीत राजयोग'** बनायेगा। जातक महाधनी एवं ऐश्वर्यशाली होगा।
5. **बृहस्पति+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र **'संतानहीन योग'** एवं **'राजभंग योग'** बनायेगा। जातक को सरकार से परेशानी होगी।
6. **बृहस्पति+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि **'लग्नभंग योग'** एवं **'धनहीन योग'** बनायेगा। जातक को आर्थिक मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा।
7. **बृहस्पति+राहु**–यहां दोनों ग्रह मिथुन राशि में हैं। बृहस्पति यहां शत्रु राशि में है, तथा विमल नामक **'विपरीत राजयोग'** बना रहा है। राहु मूलत्रिकोण राशि में स्वगृही होकर **'चाण्डाल योग'** बना रहा है। जातक धनवान एवं अभिमानी होगा। जातक के गुप्त शत्रु बहुत होंगे। जीवन में परेशानियां बहुत आयेगी।
8. **बृहस्पति+केतु**–जातक को गुप्त रोग या बायें पैर में कष्ट संभव है।

मकरलग्न में बृहस्पति की स्थिति सप्तम स्थान में

मकरलग्न में बृहस्पति तृतीयेश एवं व्ययेश है। अत: बृहस्पति यहां अशुभ फलदायक एवं परम पापी है। बृहस्पति यहां उच्च का होगा। कर्क राशि के 5 अंशों



में बृहस्पति परमोच्च का होता है। बृहस्पति के कारण यहां '**कुलदीपक योग**', '**केसरी योग**' एवं '**हंस योग**' बना। यहां बृहस्पति भले ही सप्तम में उच्च का हो, पर जातक का सप्तम भाव पीड़ित रहता है। ऐसे जातक का गृहस्थ जीवन अशान्त रहता है। जातक के गुप्त शत्रु भी जातक को परेशान करते रहेंगे। यहां अकेला बृहस्पति कमजोर है। किसी भी अन्य ग्रह के साथ होने से बृहस्पति बलवान हो जायेगा। जातक परिवार का नाम रोशन करेगा।

दृष्टि–सप्तमस्थ बृहस्पति लाभ स्थान (मीन राशि), लग्न स्थान (मकर राशि) एवं तृतीय स्थान (वृश्चिक राशि) को देखेगा। जातक को व्यापार में लाभ होगा। जातक को प्रयास में सफलता मिलेगी एवं जातक पराक्रमी होगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 3/श्लोक 5 के अनुसार–'**तृतीयेशेऽष्टमे द्यूने राजद्वारे मृतिभवेत्**' तृतीयेश यदि सातवें हो तो ऐसे जातक की मृत्यु राजदंड पाकर होती है।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा मिले-जुले परिणाम देगी। जातक का पराक्रम बढ़ेगा।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बृहस्पति+चंद्र**–आपका जन्म मकरलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न के सप्तम भाव में गुरु+चंद्र की युति कर्क राशि में हो रही है। कर्क राशि में यह युति वस्तुत: सप्तमेश चंद्रमा की व्ययेश+तृतीयेश बृहस्पति के साथ युति है। चंद्रमा यहा स्वगृही होगा तथा गुरु उच्च का होगा। '**गजकेसरी योग**' की यह स्थिति सर्वोत्तम स्थिति है इस स्थिति के कारण '**हंसयोग**', '**कुलदीपक योग**' एवं '**यामिनीनाथ योग**' की सृष्टि होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह लाभ स्थान, लग्न स्थान एवं पराक्रम स्थान को देखेंगे। फलत: जातक एक तेजस्वी व्यक्तित्व का धनी होगा। जातक की पत्नी सुन्दर एवं धनवान घराने से होगी। जातक व्यापार से धन कमायेगा तथा महान पराक्रमी, यशस्वी होगा तथा राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।
2. **बृहस्पति+सूर्य**-बृहस्पति के साथ सूर्य जातक का जीवनसाथी के साथ बिछोह (तलाक) करायेगा।
3. **बृहस्पति+मंगल**–बृहस्पति के साथ मंगल नीच का होने से '**नीचभंग राजयोग**' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी होगा। जातक का ससुराल पक्ष धनी होगा।

4. **बृहस्पति+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध जातक को सुन्दर पत्नी देगा। पर पत्नी वैचारिक मतभेद रहेंगे।

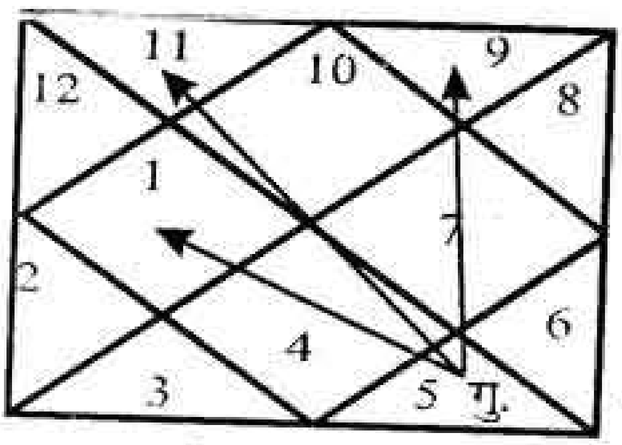
5. **बृहस्पति+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र होने के कारण जातक का जीवनसाथी सुडौल व सुन्दर होगा।

6. **बृहस्पति+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि होने के कारण जातक का जीवनसाथी जातक से बड़ी उम्र का दिखेगा।

7. **बृहस्पति+राहु**–यहां दोनों ग्रह कर्क राशि में हैं। बृहस्पति यहां उच्च का होकर '**हंसयोग**' बना रहा है, तो राहु शत्रु राशि में होकर '**चाण्डाल योग**' बना रहा है। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं धनी होगा। परन्तु जातक के गृहस्थ सुख में न्यूनता रहेगी। **द्विभार्यायोग** बनता है।

8. **बृहस्पति+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु गृहस्थ सुख में बाधक है।

मकरलग्न में बृहस्पति की स्थिति अष्टम स्थान में



मकरलग्न में बृहस्पति तृतीयेश एवं व्ययेश है। अत: बृहस्पति यहां अशुभ फलदायक एवं परम पापी है। गुरु यहां आठवें स्थान में सिंह (मित्र) राशि में होगा। गुरु के कारण '**पराक्रमभंग योग**' एवं विमल नामक '**विपरीत राजयोग**' बनेगा। ऐसा जातक धनी, मानी, अभिमानी व शत्रुहन्ता होते हैं। ऐसे जातक पूर्णज्ञानी होता है पर ऐन वक्त पर जब खास जरूरत हो, जातक बृहस्पति द्वारा प्रदत्त विद्या भूल जायेगा।

दृष्टि–अष्टमस्थ बृहस्पति की दृष्टि व्यय भाव (धनु राशि), धन भाव (कुंभ राशि) एवं चतुर्थ भाव (मेष राशि) पर होगी। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा तथा उसे धन प्राप्ति हेतु किये गये प्रयत्नों में असफलता मिलेगी। जातक को माता व संतान का सुख कमजोर होगा।

निशानी–'**लोमेश संहिता**' अध्याय 3/श्लोक 5 के अनुसार यदि तृतीयेश आठवें स्थान हो तो ऐसे जातक की मृत्यु राजदण्ड पाकर होती है।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा अशुभ फल देगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

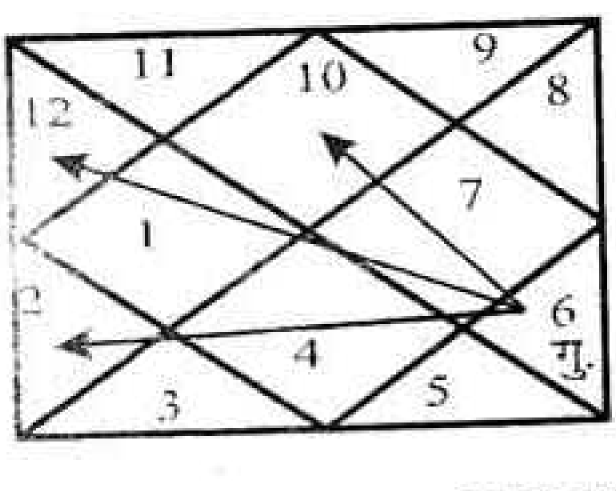
1. **बृहस्पति+चंद्र**–आपका जन्म मकरलग्न में है। '**भोजसंहिता**' के अनुसार मकरलग्न के अष्टम भाव में गुरु+चंद्र की युति सिंह राशि में होगी। सिंह राशि

में यह युति वस्तुतः सप्तमेश चंद्रमा की व्ययेश+तृतीयेश बृहस्पति के साथ युति है। बृहस्पति के कारण **'पराक्रमभंग योग'** तथा चंद्रमा के कारण **'विवाहभंग योग'** बनता है। यहां बैठकर दोनों शुभ ग्रह व्यय भाव धन भाव एवं सुख स्थान को देखेंगे। फलतः जातक का अपनी पत्नी से मनमुटाव रहेगा। जातक के मित्र उसे धोखा देंगे। धन का अपव्यय होगा। विपरीत परिस्थितियों में भी इस शुभ योग के कारण जातक को अंतिम सफलता मिलेगी।

2. **बृहस्पति+सूर्य**-बृहस्पति के साथ सूर्य सरल नामक **'विपरीत राजयोग'** बनायेगा। जातक महाधनी होगा तथा उसे आधुनिक सभी सुख-सुविधाएं सहज ही प्राप्त होंगी।
3. **बृहस्पति+मंगल**–बृहस्पति के साथ मंगल **'सुखहीन योग'** व **'लाभभंग योग'** बनायेगा। जातक को भाग्य की उन्नति हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा।
4. **बृहस्पति+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध **'विपरीत राजयोग'** बनायेगा। जातक धनी होगा एवं उसे सभी भौतिक सुख सुविधाएं प्राप्त होंगी।
5. **बृहस्पति+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र **'संतानहीन योग'** एवं **'राजभंग योग'** बनायेगा। ऐसे में जातक को संतान संबंधी चिंता बनी रहेगी।
6. **बृहस्पति+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि **'लग्नभंग योग'** एवं **'धनहीन योग'** बनाता है। ऐसे जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलता। जातक आर्थिक परेशानी में रहेगा।
7. **बृहस्पति+राहु**–यहां दोनों ग्रह सिंह राशि में हैं। बृहस्पति मित्र राशि में विमल नाम **'विपरीत राजयोग'** बना रहा है, तो राहु शत्रु राशि में बैठकर **'चाण्डाल योग'** बना रहा है। जातक धनवान एवं अभिमानी होगा, पर अचानक दुर्घटना का भय बना रहेगा। जातक समाज का अग्रगण्य व्यक्ति होगा।
8. **बृहस्पति+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु जातक के पैरों में चोट पहुंचायेगा।

विशेष–यदि सूर्य यहां तृतीय स्थान या द्वादश भाव में हो तो जातक की आयु क्षीण होगी।

मकरलग्न में बृहस्पति की स्थिति नवम स्थान में



मकरलग्न में बृहस्पति तृतीयेश एवं व्ययेश है। अतः बृहस्पति यहां अशुभ फलदायक एवं परम पापी है। बृहस्पति यहां नवम स्थान में कन्या (शत्रु) राशि में होगा। ऐसे जातक को रिश्तेदार, परिजनों व सहोदर एवं माता-पिता का सुख मिलेगा।

पर सभी से वैचारिक मतभेद रहेंगे। जातक को मान-सम्मान, पद, प्रतिष्ठा, समाज में उच्च पद मिलेगा। जातक धार्मिक एवं आध्यात्मिक बुद्धि से सम्पन्न व्यक्ति होगा।

दृष्टि–नवम भावगत बृहस्पति की दृष्टि लग्न स्थान (मकर राशि), पराक्रम स्थान (मीन राशि) एवं पंचम स्थान (वृष राशि) पर होगी। जातक के परिश्रम सार्थक होंगे। जातक पराक्रमी होगा एवं जातक को पुत्र रत्न (उत्तम संतति) की प्राप्ति होगी।

निशानी–**'लोमेश संहिता'** अध्याय 3/श्लोक 4 के अनुसार यदि तृतीयेश भाग्य स्थान में हो तो जातक का भाग्योदय स्त्री से होता है। ऐसे जातक का पिता चोर होता है।

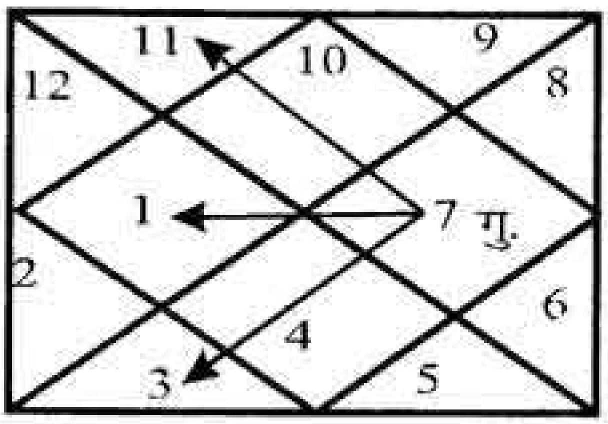
दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा जातक का पराक्रम बढ़ायेगी तथा भाग्योदय के नये अवसर प्रदान करेगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बृहस्पति+चंद्र**–आपका जन्म मकरलग्न में है। **'भोजसंहिता'** के अनुसार मकरलग्न के नवम भाव में गुरु+चंद्र की युति कन्या राशि में हुई है। कन्या राशि में यह युति वस्तुत: सप्तमेश चंद्रमा की व्ययेश+तृतीयेश बृहस्पति के साथ युति है। चंद्रमा यहां शत्रु क्षेत्री है। इन दोनों शुभ ग्रहों की दृष्टि लग्न स्थान, पराक्रम स्थान एवं पंचम भाव पर है। फलत: जातक के व्यक्तित्व विकास में यह युति सहायक होगी। जातक शिक्षित होगा तथा उसकी संतान भी शिक्षित होगी। जातक का स्वयं का भाग्योदय प्रथम संतति के तत्काल बाद होगा। जातक महान पराक्रमी व यशस्वी होगा।
2. **बृहस्पति+सूर्य**-बृहस्पति के साथ सूर्य जातक को तेजस्वी बनायेगा।
3. **बृहस्पति+मंगल**–बृहस्पति के साथ मंगल जातक को बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी बनायेगा।
4. **बृहस्पति+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध उच्च का होगा। जातक वैभवशाली, गौरवशाली जीवन जीयेगा।
5. **बृहस्पति+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र नीच का होकर भी उत्तम विद्या, श्रेष्ठ पराक्रम एवं राजसी जीवन देगा।
6. **बृहस्पति+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि, जातक को परिश्रम का लाभ देगा। जातक धनी होगा।
7. **बृहस्पति+राहु**–यहां दोनों ग्रह कन्या राशि में है। बृहस्पति शत्रु राशि में है, तो राहु यहां स्वगृही होकर **'चाण्डाल योग'** बना रहा है। जातक को भाग्योदय हेतु काफी परेशानियों-दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा। जातक का जनसम्पर्क विस्तृत होगा।

8. **बृहस्पति+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु जातक के भाग्य में तेजी लायेगा। जातक कीर्तिवान् होगा।

मकरलग्न में बृहस्पति की स्थिति दशम स्थान में



मकरलग्न में बृहस्पति तृतीयेश एवं व्ययेश है। अत: बृहस्पति यहां अशुभ फलदायक एवं परम पापी है। बृहस्पति यहां सातवें स्थान में तुला (शत्रु) राशि में होगा। ऐसे जातक को पिता, सहोदर भ्राता, पत्नी व संतान का पूर्ण सुख मिलेगा। जातक पराक्रमी एवं पुरुषार्थी होगा। पर धन धीमी गति से जायेगा। जातक को रोजी-रोजगार, व्यापार-व्यवसाय में उन्नति मिलेगी। जातक का राजनीति में भी प्रभाव रहेगा।

दृष्टि–दशम भावगत बृहस्पति की दृष्टि धन स्थान (कुंभ राशि), चतुर्थ स्थान (मेष राशि) एवं षष्टम स्थान (मिथुन राशि) पर होगी। जातक धनी होगा तथा उसे भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी। जातक का निजी भवन होगा। शत्रु परास्त होंगे।

निशानी–**'लोमेश संहिता'** अध्याय 3/श्लोक 2 के अनुसार यदि तृतीयेश दशम स्थान में हो तो जातक की पत्नी क्रूर व क्रोधी स्वभाव की होगी।

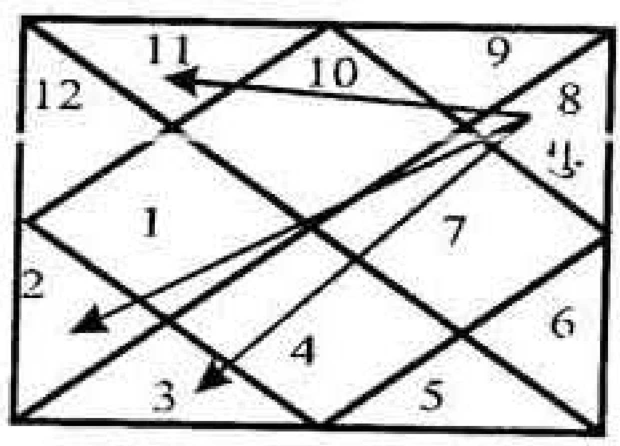
दशा–गुरु की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बृहस्पति+चंद्र**–आपका जन्म मकरलग्न में हुआ है। 'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न के दशम भाव में गुरु+चंद्र की युति तुला राशि में है। तुला राशि में यह युति वस्तुत: सप्तमेश चंद्रमा की व्ययेश+तृतीयेश बृहस्पति के साथ युति है। केन्द्रवर्ती गुरु+चंद्र के कारण **'यामिनीनाथ योग'** एवं **'कुलदीपक योग'** की सृष्टि हुई। ये दोनों ग्रह यहां धन स्थान, सुख स्थान एवं षष्टम स्थान को देखेंगे। फलत: ऐसे जातक को यथेष्ट धन की प्राप्ति होती रहेगी। उसको उत्तम वाहन भी मिलेगा। भौतिक सुख-संसाधनों की कमी नहीं रहेगी। जातक अपने शत्रुओं व रोगों का शमन करने में पूर्णत: सक्षम होगा।
2. **बृहस्पति+सूर्य**-बृहस्पति के साथ नीच का सूर्य जातक को राजकीय सम्प्रभुता देगा।
3. **बृहस्पति+मंगल**–बृहस्पति के साथ **'दिक्बली'** मंगल जातक को राजकीय शक्ति देगा। जातक बड़ी सम्पत्ति का स्वामी होगा।
4. **बृहस्पति+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध, जातक को आध्यात्मिक शक्ति से युक्त करेगा।

5. **बृहस्पति+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र होने से **'मालव्य योग'** बनेगा। जातक राजा के तुल्य पराक्रमी एवं वैभवशाली होगा।
6. **बृहस्पति+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि **'शश योग'** बनायेगा। ऐसा जातक राजा तुल्य पराक्रमी एवं ऐश्वर्य सम्पन्न होगा।
7. **बृहस्पति+राहु**–यहां दोनों ग्रह तुला राशि में है। बृहस्पति यहां शत्रु राशि में है, तो राहु मित्र राशि में बैठकर **'चाण्डाल योग'** बना रहा है। गुरु **'कुलदीपक योग'**, **'केसरी योग'** बना रहा है। जातक पराक्रमी एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा तथा अपने कुल का नाम रोशन करेगा। जातक का राजनीति में भी हस्तक्षेप रहेगा।
8. **बृहस्पति+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु की युति राजसुख में बाधक है।

मकरलग्न में बृहस्पति की स्थिति एकादश स्थान में



मकरलग्न में बृहस्पति तृतीयेश एवं व्ययेश है। अत: बृहस्पति यहां अशुभ फलदायक एवं परम पापी है। गुरु यहां एकादश स्थान में वृश्चिक (मित्र) राशि में होगा। ऐसे जातक को विद्या-बुद्धि, स्त्री-संतान, जमीन-जायदाद के उत्तम सुख मिलेंगे। जातक को बड़े भाई का सुख, सामाजिक, पद-प्रतिष्ठा, मान-सम्मान भी बराबर मिलता रहेगा।

दृष्टि–एकादश भावगत बृहस्पति की दृष्टि पराक्रम स्थान (मीन राशि), पंचम स्थान (वृष राशि) एवं सप्तम स्थान (कर्क राशि) पर होगी। जातक पराक्रमी होगा। संतान एवं विद्या सुख उत्तम, पत्नी का सुख भी उत्तम श्रेणी का होगा।

निशानी–**'लोमेश संहिता'** अध्याय 3/श्लोक 6 के अनुसार तृतीयेश यदि एकादश स्थान में हो तो जातक अपने उद्यम, पराक्रम से कमाकर धनवान होता है। जातक साहसी होता है, तथा दूसरों की सेवा करने में रुचि रखता है।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी। जातक को धन लाभ होगा एवं उसका व्यापार बढ़ेगा।

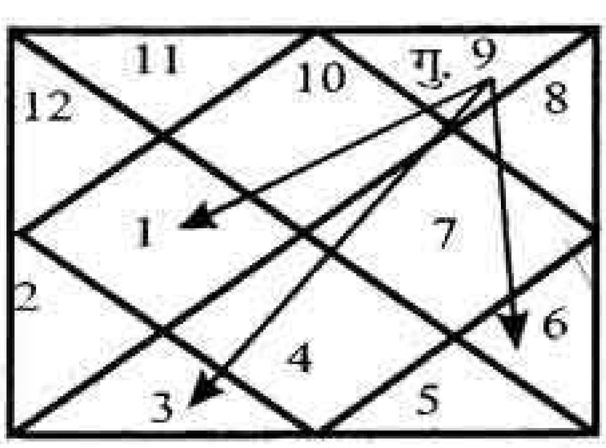
बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बृहस्पति+चंद्र**–आपका जन्म मकरलग्न में है। **'भोजसंहिता'** के अनुसार मकरलग्न में गुरु+चंद्र की युति एकादश स्थान में वृश्चिक राशि के अंतर्गत होगी। भोजसंहिता के अनुसार यह युति सप्तमेश चंद्रमा की व्ययेश+तृतीयेश बृहस्पति के साथ युति है। चंद्रमा यहां वृश्चिक राशि में नीच का होगा। इन

दोनों ग्रहों की दृष्टि पराक्रम भाव, पंचम भाव एवं सप्तम भाव पर होगी। फलतः जातक का भाग्योदय विवाह के बाद तत्काल बाद होगा। जातक दूसरा भाग्योदय प्रथम संतति के बाद होगा। जातक सुशिक्षित एवं संस्कारी होगा। जातक महान् पराक्रमी एवं यशस्वी होगा।

2. **बृहस्पति+सूर्य**–बृहस्पति के साथ सूर्य जातक को पुत्र संतति का सुख देगा।
3. **बृहस्पति+मंगल**–बृहस्पति के साथ मंगल जातक को भौतिक सुख-सुविधाएं एवं संतति सुख देगा।
4. **बृहस्पति+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध जातक को भाग्यशाली बनाता है।
5. **बृहस्पति+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र राजयोग देता है। जातक उच्च विद्या एवं उत्तम संतति प्राप्त करेगा।
6. **बृहस्पति+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि जातक को प्रबल पुरुषार्थी बनायेगा। जातक उद्योगपति होगा।
7. **बृहस्पति+राहु**–यहां दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में हैं। बृहस्पति यहां मित्र राशि में है, तो राहु नीच राशि में बैठकर **'चाण्डाल योग'** बना रहा है। जातक समाज का अग्रगण्य प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। व्यापार में हानि होगी तथा संतान को लेकर चिंता बनी रहेगी।
8. **बृहस्पति+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु की युति लाभ में बाधक है।

मकरलग्न में गुरु की स्थिति द्वादश स्थान में



मकरलग्न में बृहस्पति तृतीयेश एवं व्ययेश है। अतः बृहस्पति यहां अशुभ फलदायक एवं परम पापी है। बृहस्पति यहां द्वादश स्थान में धनु राशि में स्वगृही होगा। फलतः विमल नामक **'विपरीत राजयोग'** मुखरित होगा। ऐसा जातक धनी, मानी व अभिमानी होगा। ऐसे जातक विनम्र होते हैं तथा अपने शत्रुओं या विरोधियों का मुंहतोड़ जबाव नहीं दे पाते। जातक क्षमाशील व भावुक होते हैं।

दृष्टि–द्वादश भावगत बृहस्पति की दृष्टि चतुर्थ स्थान (तुला राशि), छठे स्थान (सिंह राशि) एवं नवम स्थान (वृष राशि) पर होगी। ऐसे जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति आसानी से नहीं होगी। जातक के गुप्त शत्रु उसे परेशान करेंगे। जातक को भाग्योदय हेतु जी-तोड़ परिश्रम करना पड़ेगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 3/श्लोक 4 के अनुसार तृतीयेश यदि बारहवें स्थान में हो तो जातक का भाग्योदय स्त्री द्वारा होता है एवं जातक का पिता चोर होता है।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

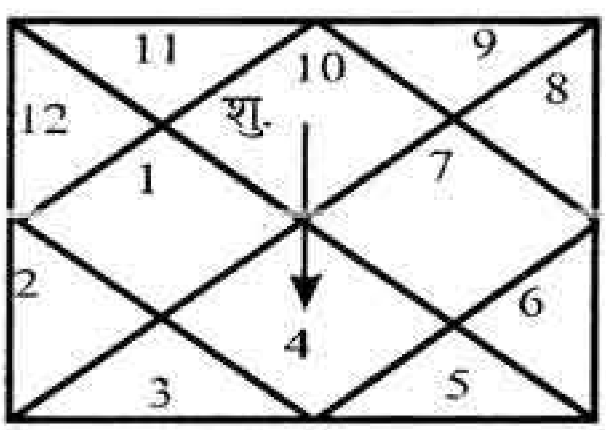
बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बृहस्पति+चंद्र**–आपका जन्म मकरलग्न में है। मकरलग्न में गुरु+चंद्र की युति द्वादश स्थान में 'धनु राशि' के अंतर्गत हो रही है। 'भोजसंहिता' के अनुसार गुरु+चंद्र की युति वस्तुतः सप्तमेश चंद्रमा की व्ययेश+तृतीयेश के साथ युति है। बृहस्पति यहां स्वगृही होगा। '**कीर्तिभंग योग**' एवं '**विवाहभंग योग**' यहां इतना प्रभावशाली नहीं रहेगा। इन दोनों शुभग्रहों की दृष्टि सुख स्थान, षष्टम स्थान एवं अष्टम स्थान पर होगी। फलतः जातक का दुर्घटना व अपघातों से बचाव होता रहेगा। जातक को शत्रु भी ज्यादा परेशान नहीं कर पायेंगे। जातक ऋण-रोग व शत्रुओं के कुप्रभाव से बचा रहेगा। जातक पराक्रमी, सुखी एवं सम्पन्न व्यक्ति होगा।
2. **बृहस्पति+सूर्य**-बृहस्पति के साथ सूर्य '**विपरीत राजयोग**' बनाता है। जातक धनी तथा परोपकारी होगा। जातक को नेत्र पीड़ा रहेगी।
3. **बृहस्पति+मंगल**–बृहस्पति के साथ मंगल विलम्ब विवाह करायेगा।
4. **बृहस्पति+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध '**भाग्यभंग योग**' बनाता है। जातक को भाग्योदय हेतु परेशानी उठानी पड़ेगी।
5. **बृहस्पति+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र '**संततिहीन योग**' एवं '**राजभंग योग**' बनाता है। जातक को संतान की चिंता एवं राजदंड का भय रहेगा।
6. **बृहस्पति+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि '**लग्नभंग योग**' एवं '**धनहीन योग**' बनायोगा। जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।
7. **बृहस्पति+राहु**–यहां दोनों ग्रह धनु राशि में हैं। बृहस्पति यहां स्वगृही है, तो राहु नीच राशि में बैठकर '**चाण्डाल योग**' बना रहा है। बृहस्पति के कारण विमल नामक '**विपरीत राजयोग**' बन रहा है। जातक एक धनी एवं अभिमानी व्यक्ति होगा। जातक की फिजूलखर्ची की आदत तथा व्यर्थ की यात्राओं से घर वाले परेशान रहेंगे।
8. **बृहस्पति+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु व्यर्थ की यात्राएं करायेगा। जातक समाजसेवी होगा।

❑❑❑

मकरलग्न में शुक्र की स्थिति

मकरलग्न में शुक्र की स्थिति प्रथम स्थान में



मकरलग्न में शुक्र पंचमेश एवं राज्येश होने से राजयोग कारक है। शुक्र लग्नेश शनि का मित्र है अत: शुभ फल ही देगा। शुक्र यहां प्रथम स्थान में मकर (मित्र) राशि में है। शुक्र के कारण **'कुलदीपक योग'**, **'पद्मसिंहासन योग'** बना। ऐसा जातक विनम्र और खुशमिजाज होता है। जातक का जीवनसाथी स्वस्थ, सुडौल व सुंदर होगा। ऐसा व्यक्ति विद्या-बुद्धि, संतान, सुन्दर पत्नी एवं सुन्दर भवन का स्वामी होकर कुटुम्ब-परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करता है।

दृष्टि–लग्नस्थ शुक्र की दृष्टि सप्तम भाव (कर्क राशि) पर होगी। जातक का वैवाहिक जीवन सुखी होता है।

निशानी–ऐसा जातक कंजूस होता है।

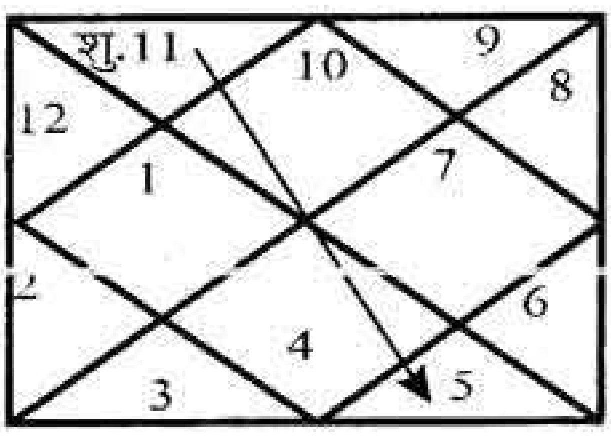
दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में जातक को व्यापार से लाभ होगा। जातक को विद्या, पद व प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्रमा जातक को सुन्दर पत्नी देगा। जातक की पत्नी पतिव्रता एवं रति में रम्भा होगी। वैवाहिक जीवन सुखमय होगा।
2. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य जातक की मनोवृत्ति में गिरगिट की तरह बदलाव लाता रहेगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल **'रुचक योग'** बनायेगा। जातक राजा की तरह पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली जीवन जीयेगा।

4. **शुक्र+बुध**—शुक्र के साथ बुध होने से जातक भाग्यशाली एवं बुद्धिशाली होगा।
5. **शुक्र+गुरु**—शुक्र के साथ बृहस्पति जातक को धार्मिक एवं कुटुम्ब प्रिय व्यक्ति बनायेगा।
6. **शुक्र+शनि**—शुक्र के साथ शनि **'शश योग'** बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं धनी होगा।
7. **शुक्र+राहु**—शुक्र के साथ राहु जातक को हठी एवं कामी बनायेगा।
8. **शुक्र+केतु**—शुक्र के साथ केतु जातक के चलते कार्य में रुकावट डालेगा।

मकरलग्न में शुक्र की स्थिति द्वितीय स्थान में



मकरलग्न में शुक्र पंचमेश एवं राज्येश होने से राजयोग कारक है। शुक्र लग्नेश शनि का मित्र है अतः शुभ फल ही देगा। शुक्र यहां द्वितीय स्थान में कुंभ (मित्र) राशि में है। ऐसा जातक धनवान होता है उसे विद्या-बुद्धि, स्त्री-संतान सुख, कुटुम्ब सुख पूर्ण होता है। जातक का आजीविका का साधन अच्छा होता है। जातक दीर्घजीवी होगा एवं जातक का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

दृष्टि—द्वितीयस्थ शुक्र की दृष्टि अष्टम भाव (सिंह राशि) पर होगी। जातक रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।

निशानी—जातक की वाणी विनम्र एवं मिष्ट होती है। उसकी बहुत-सी लड़कियां होती हैं। लोमेश संहिता के अनुसार उसे खांसी-श्वास की बीमारी होती है।

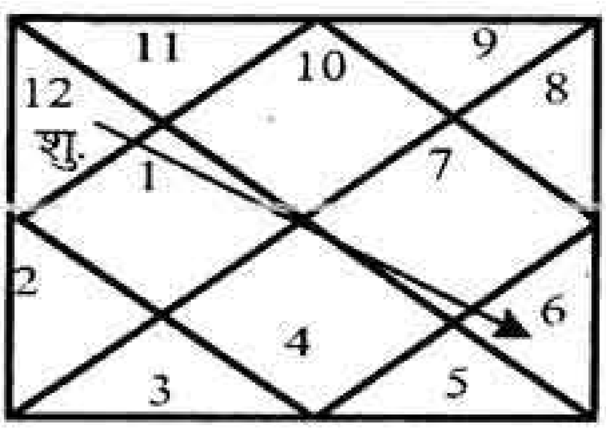
दशा—शुक्र की दशा-अंतर्दशा जातक को धन व मान प्रदान करेगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र+चंद्र**—शुक्र के साथ चंद्रमा जातक को राजयोग देगा। ऐसा जातक विवाह के बाद महाधनी होगा।
2. **शुक्र+सूर्य**—शुक्र के साथ सूर्य धन संग्रह में 40% बाधक का कार्य करेगा। जातक धनी एवं प्रभावशाली व्यक्ति होगा।
3. **शुक्र+मंगल**—शुक्र के साथ मंगल की युति जातक को स्थाई सम्पत्ति एवं बड़ी भू-सम्पत्ति देगी।
4. **शुक्र+बुध**—शुक्र के साथ बुध **'नीचभंग राजयोग'** बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी होगा।

5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति '**किम्बहुना नामक**' श्रेष्ठ राजयोग बनायेगा। जातक धनी–मानी एवं ऐश्वर्य सम्पन्न जीवन जीयेगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि होने से जातक को परिश्रम का पूरा–पूरा लाभ मिलेगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु जातक को धनवान बनाने में बाधक का कार्य करेगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु जातक के आर्थिक जीवन में परेशनियां उत्पन्न करेगा।

मकरलग्न में शुक्र की स्थिति तृतीय स्थान में



मकरलग्न में शुक्र पंचमेश एवं राज्येश होने से राजयोग कारक है। शुक्र लग्नेश शनि का मित्र है अतः शुभ फल ही देगा। शुक्र यहां तीसरे स्थान में उच्च राशि में होगा। मीन राशि के 27 अंशों में शुक्र परमोच्च का होता है। ऐसे जातक प्रबल पराक्रमी, धैर्यवान् एवं कर्त्तव्यनिष्ठ होते हैं। जातक को माता–पिता, स्त्री–संतान, वाहन सुख प्राप्त होगा एवं स्त्री–मित्रों से लाभ रहेगा।

दृष्टि–तृतीयस्थ शुक्र की दृष्टि अपने ही घर कन्या राशि पर होगी। जातक भाग्यशाली होगा तथा उसे पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक कला-संगीत अभिनय का प्रेमी होगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' के अनुसार ऐसा जातक चुगलखोर व कंजूस होता है।

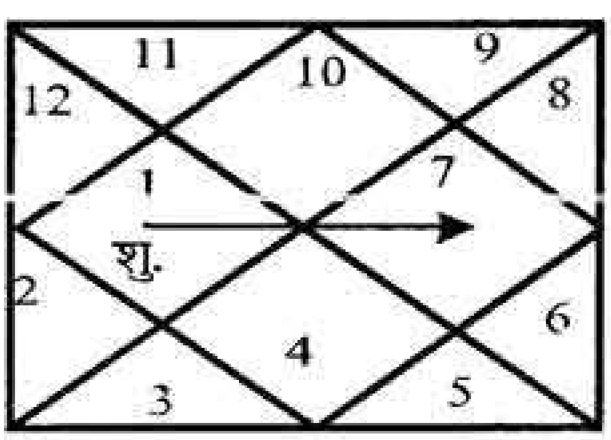
दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्रमा जातक को स्त्री मित्रों से लाभ देगा। जातक की बहनें अधिक होंगी।
2. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य जातक को भाई–बहनों का सुख देगा। जातक पराक्रमी होगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल जातक को पराक्रमी बनायेगा। इष्ट–मित्रों से लाभ होगा।

4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध **'नीचभंग राजयोग'** बनायेगा। जातक प्रबल पराक्रमी, यशस्वी राजा होगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति **'किम्बहुना नामक राजयोग'** बनायेगा। जातक राजा या राजपुरुष से कम वैभवशाली नहीं होगा। जातक के परिजन व मित्र वफादार होंगे।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि की युति जातक को परम पुरुषार्थी एवं यशस्वी बनायेगी।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु का योग भाइयों में विद्वेष कलह करायेगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु का योग समाज में जातक की कीर्ति बढ़ायेगा।

मकरलग्न में शुक्र की स्थिति चतुर्थ स्थान में



मकरलग्न में शुक्र पंचमेश एवं राज्येश होने से राजयोग कारक है। शुक्र लग्नेश शनि का मित्र है अत: शुभ फल ही देगा। शुक्र यहां चतुर्थ स्थान में मेष (सम) राशि का होगा। शुक्र के कारण **'कुलदीपक योग'**, **'पद्मसिंहासन योग'** बनेगा। शुक्र यहां **'दिग्बली'** होगा। ऐसा जातक मध्यम परिवार में जन्म लेकर भी कीचड़ में कमल की तरह खिलता हुआ जीवन की ऊंचाइयों को छूता है। जातक को धन, यश, पद-प्रतिष्ठा, मकान-वाहन, स्त्री-संतान, माता-पिता, नौकर-चाकर का सुख मिलता है।

दृष्टि–चतुर्थ भावगत शुक्र की दृष्टि दशम स्थान (तुला राशि) पर होगी। ऐसा जातक राजमंत्री, राजगुरु अथवा राज्य में उच्च पद को प्राप्त करेगा। जातक राजनीति में सफल व्यक्ति होगा।

निशानी–**'लोमेश संहिता'** के अनुसार **'सुतेशे मातृभवने चिरंमातृ सुखं भवेत्,** ऐसे जातक की माता की आयु लम्बी होती है तथा जातक का मातृ सुख बहुत समय तक मिलता है।

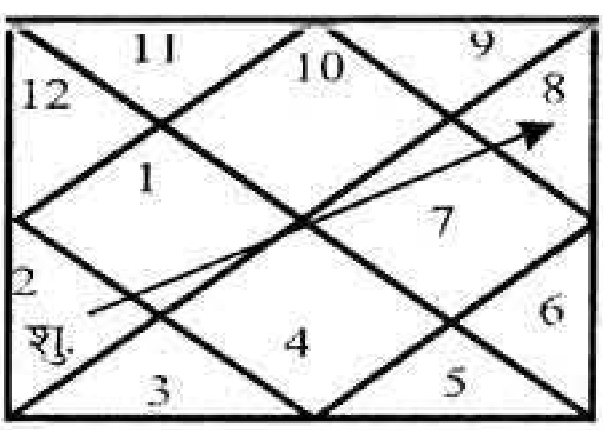
दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में जातक को मनोवांछित उपलब्धियां मिलेंगी। जातक सुख व ऐश्वर्य को प्राप्त करेगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्रमा जातक को सुन्दर एवं कलात्मक रुचि वाला जीवनसाथी देगा।

2. **शुक्र+सूर्य**—शुक्र के साथ सूर्य जातक की माता को अल्पायु करेगा।
3. **शुक्र+मंगल**—शुक्र के साथ मंगल **'रुचक योग'** बनायेगा। जातक गांव-शहर का मुखिया एवं धनी व्यक्ति होगा।
4. **शुक्र+बुध**—शुक्र के साथ बुध जातक को एक से अधिक वाहन का स्वामी बनायेगा।
5. **शुक्र+गुरु**—शुक्र के साथ बृहस्पति जातक को अनेक मित्रों वाला, जनप्रिय व्यक्ति बनायेगा।
6. **शुक्र+शनि**—शुक्र के साथ नीच का शनि जातक को पुरुषार्थ का लाभ देगा।
7. **शुक्र+राहु**—शुक्र के साथ राहु जातक की माता को मृत्यु देगा।
8. **शुक्र+केतु**—शुक्र के साथ केतु जातक की माता को लम्बी बीमारी देगा।

मकरलग्न में शुक्र की स्थिति पंचम स्थान में



मकरलग्न में शुक्र पंचमेश एवं राज्येश होने से राजयोग कारक है। शुक्र लग्नेश शनि का मित्र है अतः शुभ फल ही देगा। शुक्र यहां पंचम स्थान में स्वगृही होगा। शुक्र की यह स्थिति राजयोग कारक एवं प्रतिष्ठावर्धक है। जातक को धन, पद-प्रतिष्ठा, यश, माता-पिता, स्त्री-संतान एवं विद्या का सुख एवं प्रत्येक कार्य में यश नैसर्गिक रूप से प्राप्त होगा। जातक को उच्च शैक्षणिक उपाधि मिलेगी। जातक संगीत, साहित्य व कला प्रेमी होगी।

दृष्टि—पंचमस्थ शुक्र की दृष्टि लाभ स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलतः जातक को व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा। जातक आत्मनिर्भर होगा तथा उसे बड़े भाई का सुख मिलेगा।

निशानी—'लोमेश संहिता' के अनुसार, **'सुतेशः पंचमे यस्य तस्य पुत्र न जीवति'**, यदि पंचमेश पंचम भाव में स्थित हो तो उस जातक की प्रथम संतति यदि लड़का हो तो जीवित नहीं रहता।

दशा—'भावार्थ रत्नाकर' के अनुसार **'मकरे जायमानस्य पंचमस्थे भृगु शुभः'** मकर लग्न में पंचम में स्थित शुक्र अपनी दशा में जातक को खूब धन-ऐश्वर्य देगा।

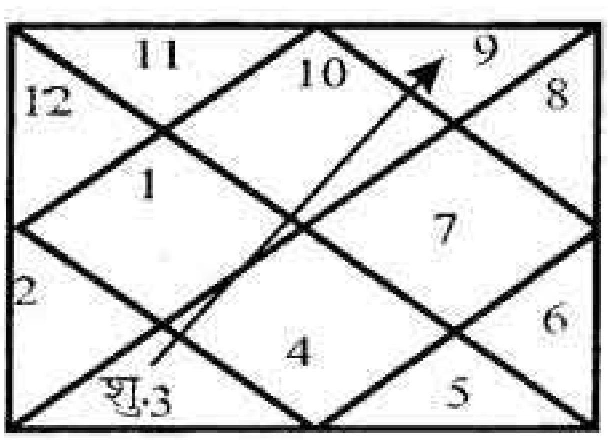
शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र+चंद्र**—शुक्र के साथ चंद्रमा **'किम्बहुना नामक राजयोग'** बनायेगा। जातक

उत्तम विद्या प्राप्त कर, विश्व में नाम रोशन करेगा। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा। ऐसे जातक के **'बहुपुत्र योग'** होता है।

2. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य विद्या में बाधा एवं संतति से चिंता करायेगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल जातक को ठेकेदारी से लाभ, सरकारी काम से लाभ एवं उत्तम धन देगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध होने से जातक परम मेधावी होगा। जातक की कन्या संतति अधिक होगी।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति होने से जातक को मित्रों से लाभ एवं पुत्र संतति का लाभ भी होगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि जातक को राज्य (सरकार) से लाभ देगा। ऐसे जातक को संतान द्वारा धन व यश की प्राप्ति होगी।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु विद्या प्राप्ति में बाधा डालेगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु गर्भपात करायेगा।

मकरलग्न में शुक्र की स्थिति षष्टम स्थान में



मकरलग्न में शुक्र पंचमेश एवं राज्येश होने से राजयोग कारक है। शुक्र लग्नेश शनि का मित्र है अत: शुभ फल ही देगा। शुक्र यहां छठे स्थान में मिथुन (मित्र) राशि में होगा। शुक्र की इस स्थिति के कारण **'संतानहीन योग'** व **'राजभंग योग'** बनेगा। ऐसे जातक को पिता, राज्य एवं संतान पक्ष में कठिनाइयां पैदा होती रहेंगी। ऋण, रोग एवं शत्रु जातक परेशान करते रहेंगे। जातक की प्रारम्भिक विद्या में एक बार रुकावट आयेगी।

दृष्टि–षष्टम भावगत शुक्र की दृष्टि व्यय स्थान (धनु राशि) पर होगी। जातक कामी व खर्चीले स्वभाव का होगा। जातक को जीवन में अचानक धन व यश की हानि होती रहेगी। स्त्री-मित्रों से नुकसान है।

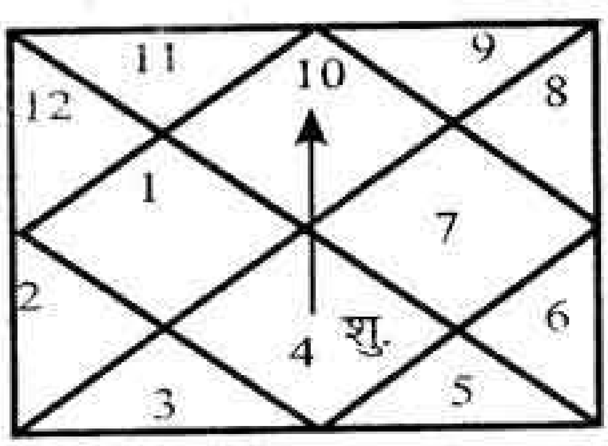
निशानी–'लोमेश संहिता' के अनुसार– **'सुतेशे पष्ठरिफस्थे पुत्र शत्रुत्वयाप्नुयात्'** जातक का पुत्र पिता से शत्रुवत् व्यवहार करता है। ऐसा जातक किसी दूसरे लड़के को धन के बल पर गोद लेता है।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा अनिष्ट फलदायक साबित होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध :–

1. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्रमा **'विवाहभंग योग'** कराता है। जातक को जीवन में विवाह सुख विलम्ब से मिलेगा।
2. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य **'विपरीत राजयोग'** के कारण जातक को धनवान बनायेगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल जातक को भूमि पक्ष में नुकसान देगा तथा माता के सुख में कमी लायेगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध जातक को **'विपरीत राजयोग'** के कारण धनवान तो बनायेगा पर जातक के सही भाग्योदय में कसर रहेगी।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति **'पराक्रमभंग योग'** एवं **'विपरीत राजयोग'** बनायेगा। जातक को मित्र दगा देंगे। जातक धनी तो होगा पर यशस्वी नहीं होगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि जातक की कुण्डली में **'लग्नभंग योग'** एवं **'धनहीन योग'** बनायेगे। जातक का व्यक्तित्व काफी संघर्ष के बाद बनेगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु का योग गुप्त बीमारी देगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु गुप्तेन्द्री की शल्य चिकित्सा करायेगा।

मकरलग्न में शुक्र की स्थिति सप्तम स्थान में



मकरलग्न में शुक्र पंचमेश एवं राज्येश होने से राजयोग कारक है। शुक्र लग्नेश शनि का मित्र है अत: शुभ फल ही देगा। शुक्र यहां सप्तम स्थान में कर्क (शत्रु) में होगा। शत्रु के कारण **'कुलदीपक योग'** एवं **'पद्मसिंहासन योग'** बनेगा। ऐसा जातक रसिक मिजाज एवं सौंदर्य प्रिय होता है। जातक शृंगार प्रिय, संभोग प्रिय एवं अन्य स्त्रियों के प्रति लालायित रहता है। ऐसा जातक दूसरों से मान-सम्मान बहुत चाहता है। जातक कुटुम्ब प्रेमी होता है तथा अपने कुल-कुटुम्ब का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।

दृष्टि–सप्तमस्थ शुक्र की दृष्टि लग्न स्थान (मकर राशि) पर होगी। जातक को परिश्रम का लाभ मिलता है। जातक को धन, पद-प्रतिष्ठा एवं यौवन का भरपूर सुख मिलता है।

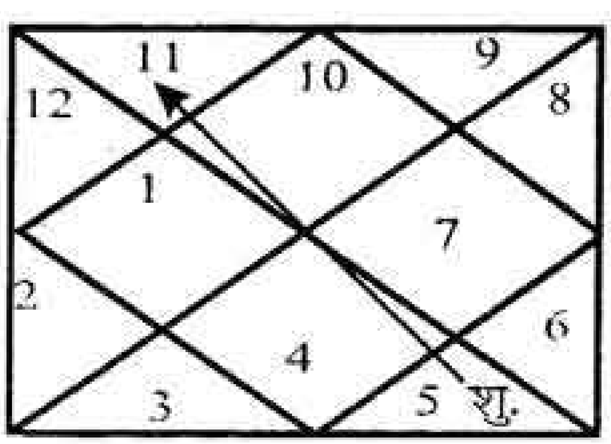
निशानी–ऐसा जातक सभी धर्मों में समान आस्था रखता है एवं सामाजिक कार्य में रुचि रखता है।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्रमा जातक को अत्यंत सुंदर कामी व रतिक्रिया में रम्भा के समान कमनीय पत्नी का पति बनायेगा।
2. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य गुप्तांग में बीमारी देगा। जातकी की पत्नी तर्कीली होगी।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल जातक को अत्यधिक कामी बनायेगा। जातक क्रूरता के साथ पशुतुल्य मैथुन करेगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध विवाह के तत्काल बाद जातक का भाग्योदय करायेगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति जातक को पतिव्रता स्त्री का पति बनायेगा। जातक का ससुराल पक्ष पराक्रमी होगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि '**लग्नाधिपति योग**' बनायेगा। जातक को परिश्रम का लाभ मिलेगा। जातक पुरुषार्थ के द्वारा भारी धन कमायेगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु जातक को लाईलाज गुप्त रोग देगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु होने से से जातक को नपुसंकता की प्राप्ति होगी।

मकरलग्न में शुक्र की स्थिति अष्टम स्थान में



मकरलग्न में शुक्र पंचमेश एवं राज्येश होने से राजयोग कारक है। शुक्र लग्नेश शनि का मित्र है अत: शुभ फल ही देगा। शुक्र यहां अष्टम स्थान में सिंह (शत्रु) राशि में होगा। फलत: '**संतानहीन योग**' एवं '**राजभंग योग**' की सृष्टि होगी। ऐसे जातक को स्त्री-संतान, नौकरी-व्यापार में बाधाएं आयेंगी। जातक प्रेम-प्रसंग में बदनाम होगा। जातक की स्त्री मित्र घातक होंगी। जातक ऋण, रोग व शत्रु से दु:खी होगा।

दृष्टि–अष्टमस्थ शुक्र की दृष्टि धन स्थान (कुम्भ राशि) पर होगी। जातक का धन रोग व शत्रुओं से बीच-बचाव में खर्च होगा।

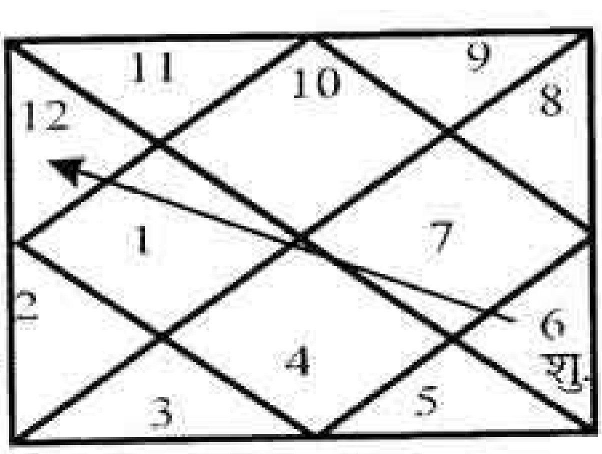
निशानी–'**लोमेश संहिता**' के अनुसार 'बहुपुत्र्यो न संशय:' ऐसे जातक के बहुत-सी लड़कियां होंगी। जातक खांसी व श्वास का रोगी होगा।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा प्रतिकूल फल देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्रमा '**विवाहभंग योग**' करायेगा। जातक की दो पत्नियां होंगी।
2. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य स्वगृही सरल नामक '**विपरीत राजयोग**' बनायेगा। जातक धनी होगा पर प्रतिष्ठा नहीं होगी।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल '**सुखहीन योग**' एवं '**लाभभंग योग**' करायेगा। जातक को अनेक व्यापार-धंधे बदलने के बाद भी संतोष नहीं मिलेगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध '**भाग्यभंग योग**' एवं हर्ष नामक '**विपरीत राजयोग**' बनायेगा। जातक धनी तो होगा पर उसके भाग्य में रुकावट रहेगी।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति '**पराक्रमभंग योग**' एवं विमल नामक '**विपरीत राजयोग**' बनायेगा। जातक को मित्रों से अपकीर्ति मिलेगी।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि '**लग्नभंग योग**' एवं '**धनहीन योग**' बनायेगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु गुप्तेन्द्री में रोग देगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु जातक के शरीर में पेट के नीचे के हिस्से में शल्य चिकित्सा करायेगा।

मकरलग्न में शुक्र की स्थिति नवम स्थान में



मकरलग्न में शुक्र पंचमेश एवं राज्येश होने से राजयोग कारक है। शुक्र लग्नेश शनि का मित्र है अत: शुभ फल ही देगा। शुक्र यहां नवम स्थान में नीच का होगा। कन्या राशि के 27 अंशों में शुक्र परम नीच का होगा। शुक्र भाई-बहन, माता-पिता, स्त्री-संतान सबका सुख देगा। जातक को नौकरी-रोजगार, व्यापार-व्यवसाय को लेकर परेशानी नहीं रहेगी। जातक को उच्च शैक्षणिक उपाधि मिलेगी। राजनीति में जातक का वर्चस्व व दबदबा रहेगा।

दृष्टि–नवम भावगत स्वगृही शुक्र की दृष्टि पराक्रम स्थान (कुम्भ राशि) पर होगी। जातक पराक्रमी होगा एवं उसका जनसम्पर्क विस्तृत होगा।

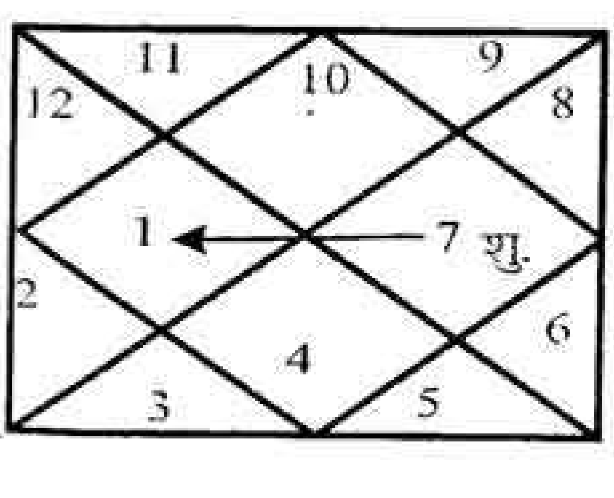
निशानी–ऐसे जातक का पुत्र भी राजा के समान ऐश्वर्यवान् होगा। **'लोमेश संहिता'** के अनुसार जातक स्वयं ग्रंथकर्त्ता, लेखक या पत्रकार होगा।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्रमा स्त्री-मित्र के सहयोग से भाग्य में अकल्पनीय उछाल देगा।
2. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य संघर्ष के साथ भाग्योदय करायेगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल जातक को बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी या उद्योगपति बनायेगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध होने से **'नीचभंग राजयोग'** बनेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी व ऐश्वर्यशाली होगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति जातक को मित्रों से लाभ देगा। जातक कुटुम्बियों से प्रेमवत संबंध बनाये रखेगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि जातक को विद्या से लाभ दिलायेगा। जातक को राज सरकार से मान-सम्मान मिलेगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु जातक को भाग्योदय में संघर्ष देगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु होने से जातक का भाग्योदय 32 वर्ष की आयु के बाद होगा।

मकरलग्न में शुक्र की स्थिति दशम स्थान में



मकरलग्न में शुक्र पंचमेश एवं राज्येश होने से राजयोग कारक है। शुक्र लग्नेश शनि का मित्र है अत: शुभ फल ही देगा। शुक्र यहां दशम स्थान में तुला राशि में स्वगृही होगा। शुक्र के कारण **'कुलदीपक योग'**, **'पद्मसिंहासन योग'** एवं **'मालव्य योग'** बनेगा। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली होता है। जातक व्यवहारकुशल, उदार ह्रदय वाला होता है तथा उसे उत्तम वाहन, उत्तम नौकर एवं उत्तम भव का सुख मिलता है। जातक प्रजावान होगा, उसे उत्तम संतति का सुख भी मिलेगा।

दृष्टि—दशमस्थ शुक्र चतुर्थ भाव (मेष राशि) को देख रहा है। ऐसे जातक को माता की सम्पत्ति, कुटुम्ब का सुख मिलेगा।

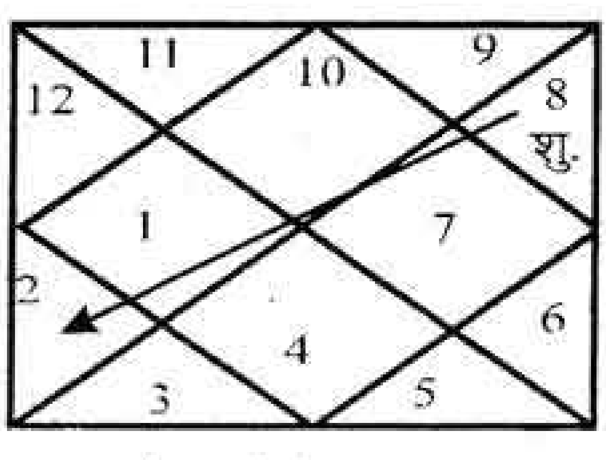
निशानी—जातक ग्रंथकार या लेखक होगा एवं उसका एक पुत्र भी होगा जो कि राजा के समान ही ऐश्वर्य सम्पन्न होता है।

दशा—शुक्र की दशा-अंतर्दशा में जातक को वांछित सम्पत्ति व सफलता की प्राप्ति होगी। जातक परिवार के साथ धार्मिक यात्राएं करेगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र+चंद्र**—शुक्र के साथ चंद्रमा जातक को अत्यधिक सुंदर पत्नी देगा एवं जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।
2. **शुक्र+सूर्य**—शुक्र के साथ सूर्य **'नीचभंग राजयोग'** बनायेगा। जातक निश्चय ही राजा के समान पराक्रमी व ऐश्वर्य वाली होगा।
3. **शुक्र+मंगल**—शुक्र के साथ मंगल जातक को माता से सम्पत्ति एवं उत्तम भवन दिलायेगा।
4. **शुक्र+बुध**—शुक्र के साथ बुध जातक को अनेक वाहन दिलायेगा।
5. **शुक्र+गुरु**—शुक्र के साथ बृहस्पति जातक को महान पराक्रमी बनायेगा। जातक धनी होगा।
6. **शुक्र+शनि**—शुक्र के साथ शनि यहां **'किम्बहुना नामक राजयोग'** बनायेगा। जातक राजा के तुल्य पराक्रमी एवं वैभवशाली होगा।
7. **शुक्र+राहु**—शुक्र के साथ राहु की युति राजयोग में बाधक है।
8. **शुक्र+केतु**—शुक्र के साथ केतु व्यापार में बदलाव (परिवर्तन) कराता रहेगा।

मकरलग्न में शुक्र की स्थिति एकादश स्थान में



मकरलग्न में शुक्र पंचमेश एवं राज्येश होने से राजयोग कारक है। शुक्र लग्नेश शनि का मित्र है अत: शुभ फल ही देगा। शुक्र यहां एकादश स्थान में वृश्चिक (सम) राशि में होगा। ऐसे जातक को धन-यश, पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। जातक को स्त्री-संतान, कुटुम्ब एवं विद्या का सुख मिलता है। **'लोमेश संहिता'** के अनुसार—**'सुतेश लाभभवने पंडितो जनवल्लभ:। ग्रंथकर्त्ता महादक्षी बहुपुत्र धनान्वित:'** ऐसा जातक बड़ा विद्वान्, ग्रंथकार, पत्रकार, बहुत होशियार, धन-धान्य से युक्त एवं जनप्रिय व्यक्ति होता है।

दृष्टि–एकादश भावगत शुक्र की दृष्टि पंचम भाव (वृष राशि) पर होगी। जातक उत्तम संतति से युक्त, उत्तम आध्यात्म विद्या का जानकार होगा। तंत्र-मंत्र, ज्योतिष का जानकार होगा।

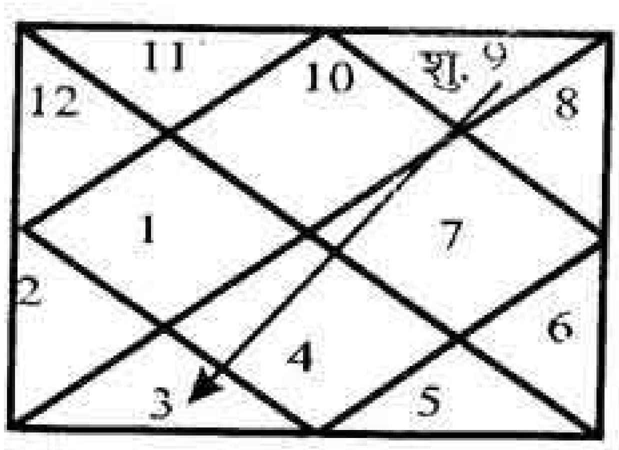
निशानी–जातक की प्रथम संतति कन्या होगी।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में शुभ फलों की प्राप्ति होगी। जातक को विद्या, संतान सुख एवं पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्रमा नीच का होकर जातक को सुंदर पत्नी दिलायेगा। जातक की पत्नी भाग्यशाली होगी।
2. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य होने से व्यापार-व्यवसाय के शुद्ध मुनाफे में 40% घाटा रहेगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल होने से जातक उद्योगपति तथा बड़ी जमीन जायदाद का स्वामी होगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध जातक को भाग्यशाली बनायेगा। ऐसा जातक अवसरों का पूरा लाभ उठाता है।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति होने से जातक को मित्रों से सहयोग मिलता रहेगा। भागीदारी के धंधे में लाभ होगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि जातक को उत्तम सम्पत्ति से मालामाल कर देगा। जातक को व्यपार से लाभ होगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु लाभ में भारी बाधक तत्त्व का काम करेगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु व्यापार में परिवर्तन कराता रहेगा।

मकरलग्न में शुक्र की स्थिति द्वादश स्थान में



मकरलग्न में शुक्र पंचमेश एवं राज्येश होने से राजयोग कारक है। शुक्र लग्नेश शनि का मित्र है अत: शुभ फल ही देगा। शुक्र यहां द्वादश स्थान में धनु (सम) राशि में होगा। शुक्र की इस स्थिति से '**संतानहीन योग**' एवं '**राजभंग योग**' की सृष्टि होगी। ऐसे जातक को हानि-लाभ, मान-अपमान, उतार-चढ़ाव का अनुभव जीवन में होता रहेगा। जातक व्यर्थ की यात्राएं करेगा।

दृष्टि–द्वादश भावगत शुक्र की दृष्टि षष्ट भाव (मिथुन राशि) पर होगी। जातक को ऋण रोग व शत्रु परेशान करते रहेंगे।

निशानी–ऐसे जातक का पुत्र पिता से शत्रुवत् व्यवहार करेगा। जातक संतान को लेकर परेशान रहेगा।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में जातक को अनिष्ट फल मिलेगा।

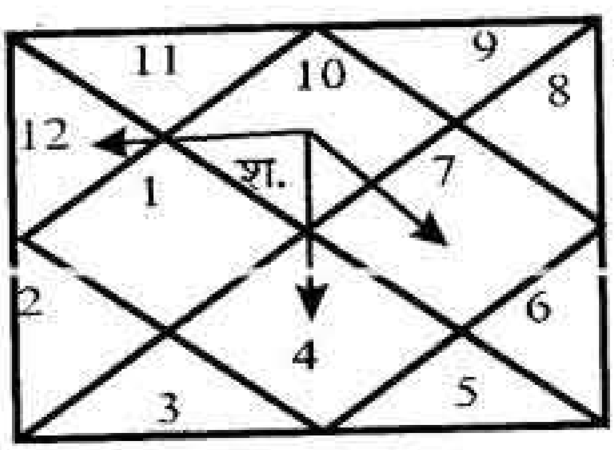
शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्रमा '**विवाहभंग योग**' बनाता है। जातक के दो विवाह संभव हैं। पत्नी से नहीं बनेगी।
2. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य सरल नामक '**विपरीत राजयोग**' बनाता है। जातक धनवान होगा पर उसका स्वभाव खर्चीला होगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल '**सुखहीन योग**' एवं '**लाभभंग योग**' बनाता है। जातक की उन्नति बड़ी कठिनाई से होगी।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध '**भाग्यभंग योग**' बनायेगा। जातक को विरोध सहन करना पड़ेगा। भाग्योदय कठिनाई से होगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ गुरु '**पराक्रमभंग योग**' एवं विमल नामक '**विपरीत राजयोग**' बनाता है। जातक धनवान तो होगा पर यशस्वी नहीं होगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि '**लग्नभंग योग**' व '**धनहीन योग**' बनाता है। ऐसे जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलता।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु दुर्घटना या सेक्स स्कैण्डल में फंसा सकता है। सावधानी अनिवार्य है।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु सेक्स के मामले में बदनामी देगा।

❑❑❑

मकरलग्न में शनि की स्थिति

मकरलग्न में शनि की स्थिति प्रथम स्थान में



मकरलग्न में शनि लग्नेश एवं धनेश है। शनि यहां द्वितीय स्थान का स्वामी तथा मारकेश होते हुए भी स्वयं मारक का काम नहीं करेगा। शनि यहां प्रथम स्थान में स्वगृही होगा, शनि की इस स्थिति से '**शश योग**' बनता है। ऐसा जातक राजा तुल्य, ऐश्वर्यशाली, पराक्रमी व धनी होगा। जातक हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला, पराक्रमी, यशस्वी, विद्यावान व बुद्धिमान होगा। पाराशर ऋषि के अनुसार ऐसे जातक को '**द्विभार्या परगोऽपि वा**' दो पत्नी अथवा अन्य स्त्रियों से पत्नी तुल्य संबंध रहता है।

दृष्टि–स्वगृही शनि की दृष्टि पराक्रम स्थान (मीन राशि), सप्तम भाव (कर्क राशि) एवं दशम भाव (तुला राशि) पर होगी। जातक पराक्रमी होगा, अपने कुटुम्ब का पालन करेगा। जातक का पत्नी से मनमुटाव होगा। जातक का व्यापार उत्तम होगा।

निशानी–जातक जिद्दी होगा और अपनी प्रत्येक जिद्द धन बल पर प्राप्त करने में सफल होगा। जातक चंचल चित्त वाला एवं घुमक्कड़ होगा।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक को धन, यश, मान-सम्मान की प्राप्ति होगी। नौकरी-व्यापार में लाभ होगा।

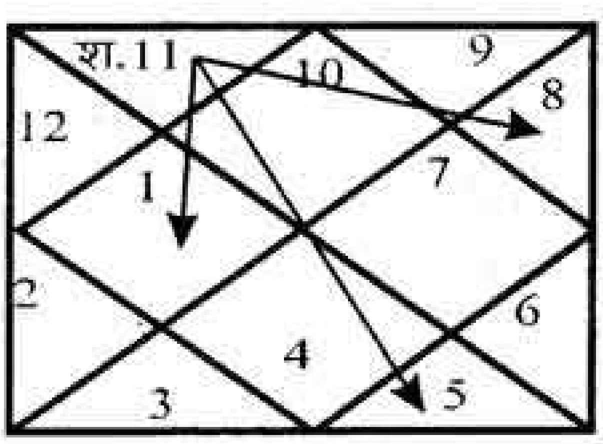
शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चंद्रमा '**कलत्रमूलधन योग**' बनायेगा। ऐसे जातक को ससुराल से धन मिलेगा।
2. **शनि+सूर्य**–यहां दोनों ग्रह मकर राशि में होगें। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री तो शनि स्वगृही होकर '**शश योग**' बनायेगा। अष्टमेश व द्वितीयेश की यह युति लग्न

स्थान में विस्फोटक है। जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली एवं पराक्रमी होगा। परन्तु जातक को व्यक्तित्व विकास हेतु काफी परिश्रम करना पड़ेगा।

3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल की युति होने से '**किम्बहुना नामक राजयोग**' बनेगा। जातक निश्चय ही राजा किवां राजमंत्री होगा। जातक I.S., IPS, RJS वगैरा उच्च अनुशासन प्रिय कार्यों में, न्याय के कार्यों में लगा रहेगा। जातक सैद्धान्तिक जीवन जीयेगा। अपने सिद्धान्त व स्थापित मूल्यों की रक्षा के लिए कुछ भी करने में नहीं हिचकिचायेगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध जातक को भाग्यशाली बनायेगा। जातक प्रखर बुद्धिशाली होगा। '**शत्रुमूल धनयोग**' के कारण जातक शत्रु से पैसा कमायेगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ बृहस्पति होने पर '**नीचभंग राजयोग**' बनेगा। जातक राजा, राजमंत्री या राजगुरु तुल्य प्रतिष्ठित पद को प्राप्त करेगा। जातक अपने राज्य व शहर की राजनीति में महत्त्वपूर्ण पद को प्राप्त करेगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र जातक को परम सौभाग्यशाली बनायेगा। जातक की संतति तेजस्वी होगी। '**राजमूल धनयोग**' बनेगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु की युति जातक को पराक्रमी व जिद्दी व्यक्तित्व का धनी बनायेगी।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु होने से जातक उम्र से बड़ा दिखेगा।

मकरलग्न में शनि की स्थिति द्वितीय स्थान में



मकरलग्न में शनि लग्नेश एवं धनेश है। शनि यहां द्वितीय स्थान का स्वामी एवं मारकेश होते हुए भी स्वयं मारक का काम नहीं करेगा। शनि यहां अपनी मूल त्रिकोण राशि में होगा। जातक कुटुम्ब सुख वाला होगा। पाराशर ऋषि कहते हैं–'**धनेशे धनगे जातो धनवान् गर्वसंयुतः**' धनेश धन स्थान में हो तो जातक महाधनी एवं घमण्डी होगा। ऐसा जातक एकाधिक स्त्रियों वाला एवं पुत्र सुख से हीन होगा। जातक विद्वान् होगा एवं जबान का पक्का होगा।

दृष्टि–द्वितीयस्थ शनि की दृष्टि चतुर्थ स्थान (मेष राशि), अष्टम स्थान (सिंह राशि) एवं लाभ स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक के पास बड़ी भू-सम्पत्ति होगी। जातक लम्बी उम्र का स्वामी तथा व्यापार प्रिय होगा। जातक व्यापार से धन कमायेगा।

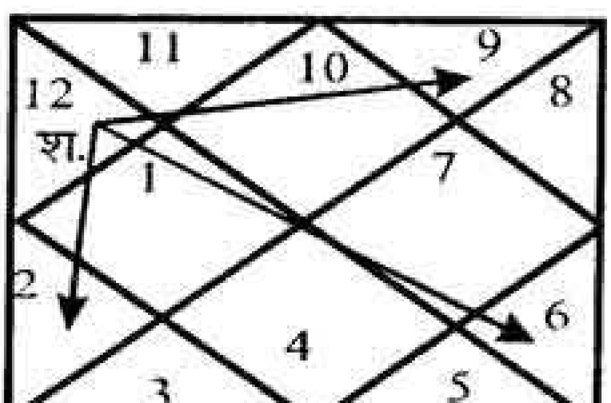
निशानी–जातक की वाणी अहंकार प्रिय होगी।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक धनी होगा एवं उसे उत्तम स्वास्थ्य का लाभ मिलेगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चंद्रमा **'कलत्रमूल धनयोग'** बनायेगा। जातक को ससुराल से धन मिलेगा।
2. **शनि+सूर्य**–यहां दोनों ग्रह कुंभ राशि में होंगे। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री तो शनि यहां अपनी मूल त्रिकोण राशि में स्वगृही होगा। अष्टमेश व द्वितीयेश की यह युति धन स्थान में विस्फोटक है। धन संग्रह में बाधाएं आयेगी। पिता की मृत्यु के बाद जातक धनवान होगा।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल **'मातृमूल धनयोग'** के कारण जातक को बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी बनायेगा। जातक की भाषा घमण्डी होगी। जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध जातक को भाग्यशाली बनायेगा। **'शत्रुमूल धनयोग'** के कारण जातक को शत्रुओं से पैसा मिलेगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ गुरु जातक को मित्रों से धन दिलायेगा क्योंकि यहां **'मित्रमूल धनयोग'** बनेगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र **'राजमूल धनयोग'** बनाता है। जातक को राज सरकार से, संतति से धन लाभ होगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु धन संग्रह में बाधक है।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु जातक का धन व्यर्थ में खर्च करायेगा।

मकरलग्न में शनि की स्थिति तृतीय स्थान में



मकरलग्न में शनि लग्नेश एवं धनेश है। शनि यहां द्वितीय स्थान का स्वामी तथा मारकेश होते हुए भी स्वयं मारक का काम नहीं करेगा। शनि यहां तृतीय स्थान में मीन (सम) राशि में होगा। ऐसा जातक सिंह के समान जबरदस्त पराक्रमी होगा। जातक अनेक मित्रों वाला, बुद्धिमान व सुखी होता है। जातक कुटम्बियों एवं मित्रों का शुभचिंतक होगा। जातक पत्नी-संतान एवं माता-पिता के सुखों से युक्त सद्गृहस्थ होगा।

दृष्टि—तृतीयस्थ शनि की दृष्टि पंचम भाव (वृष राशि), नवम भाव (कन्या राशि) एवं व्यय भाव (धनु राशि) पर होगी। जातक प्रजावान, विद्यावान तथा भाग्यशाली होगा। खर्चीले स्वभाव का होगा।

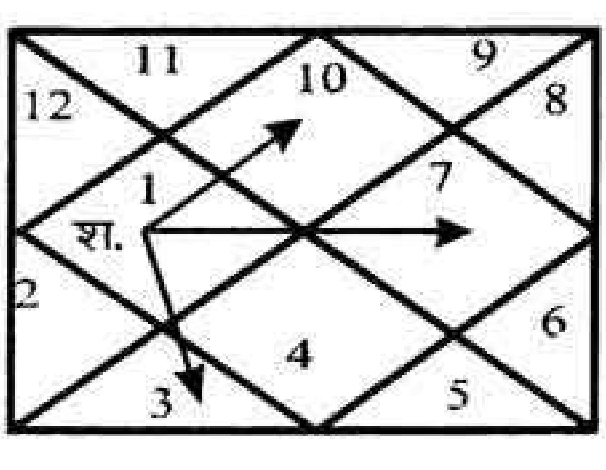
निशानी—जातक को छोटे भाई का सुख प्राप्त नहीं होगा। कन्या संतति अधिक होंगी।

दशा—शनि की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी। जातक स्व पराक्रम से धन अर्जित करेगा तथा उत्तम स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करेगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+चंद्र**—शनि के साथ चंद्रमा जातक को पराक्रमी बनायेगा। जातक को भाई-बहनों का सुख प्राप्त होगा।
2. **शनि+सूर्य**—यहां दोनों ग्रह मीन राशि में होंगे। सूर्य यहां मित्र क्षेत्री तो शनि सम राशि में है। अष्टमेश व द्वितीयेश यह युति पराक्रम स्थान में विस्फोटक है। परिवार में कलह-विवाद बना रहेगा। जातक के मित्र अविश्वासनीय होंगे। जातक को छोटे-बड़े दोनों भाइयों का सुख नहीं प्राप्त होगा।
3. **शनि+मंगल**—शनि के साथ मंगल होने के कारण जातक के अनेक मित्र होंगे। जातक को मित्रों से धन लाभ होगा पर खटपट भी होती रहेगी।
4. **शनि+बुध**—शनि के साथ नीच का बुध जातक को भाग्यशाली बनायेगा। जातक को भागीदारी से लाभ होता है।
5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ स्वगृही गुरु होने से जातक के परिजन व मित्र धनवान होंगे। जातक का उठना-बैठना ऊंची सोसाइटी में होगा।
6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ उच्च का शुक्र जातक को राजपद एवं बड़ा सम्मान देगा। जातक को उच्च विद्या के कारण विदेश जाना पड़ेगा।
7. **शनि+राहु**—शनि के साथ राहु जातक को विवादास्पद व्यक्ति बनायेगा।
8. **शनि+केतु**—शनि के साथ केतु परिजनों से, मित्रों से मनमुटाव उत्पन्न करेगा।

मकरलग्न में शनि की स्थिति चतुर्थ स्थान में



मकरलग्न में शनि लग्नेश एवं धनेश है। शनि यहां द्वितीय स्थान का स्वामी एवं मारकेश होते हुए भी स्वयं मारक का काम नहीं करेगा। शनि यहां चतुर्थ स्थान में नीच का होगा। मेष राशि के अंशों में शनि परमनीच का होगा। ऐसे जातक को माता,

भवन व भूमि का सुख कमजोर होगा। जीवन में भौतिक सुख-सुविधाएं संघर्ष के बाद प्राप्त होंगी।

दृष्टि–चतुर्थ भावगत शनि की दृष्टि छठे भाव (मिथुन राशि), दशम भाव (तुला राशि) अपने ही घर लग्न स्थान (मकर राशि) पर होगी। जातक के गुप्त शत्रु होंगे। जातक नौकरी करेगा। जातक को परिश्रम का लाभ तो मिलेगा पर प्रथम प्रयास में नहीं दूसरे-तीसरे प्रयास में सफलता मिलेगी।

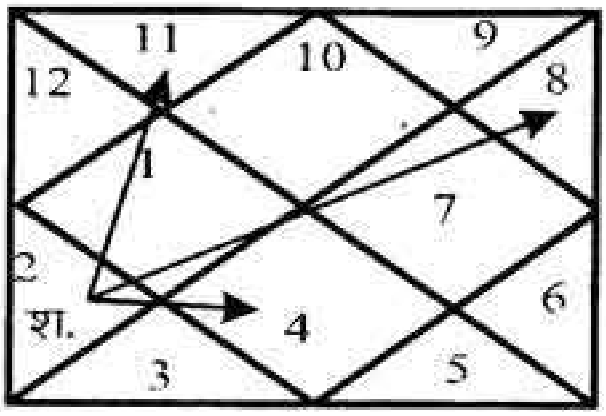
निशानी–यदि अन्य शुभ योग न हो तो जातक चतुर्थ श्रेणी का कर्मचारी होगा।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी। उन्नति अवश्य देगी पर जातक को मीठे फलों की प्राप्ति यथेष्ट परिश्रम के बाद होगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चंद्रमा जातक को ससुराल पक्ष से धन दिलायेगा।
2. **शनि+सूर्य**–यहां दोनों ग्रह मेष राशि में होंगे। सूर्य यहां उच्च का होकर '**रविकृत राजयोग**' तो शनि यहां नीच का होकर '**नीचभंग राजयोग**' बना रहा है। अष्टमेश व द्वितीयेश की चतुर्थ स्थान में यह युति जातक के माता-पिता के सुख को नष्ट करके राजयोग देगी। जातक महाधनी एवं बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी तथा गांव का प्रमुख होगा।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल होने पर '**नीचभंग राजयोग**' एवं 'रुचक योग' की सृष्टि होगी। जातक बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा। जातक के पास अनेक वाहन होंगे। आमदनी के जरिए भी बहुत होंगे। जातक राजा तुल्य पराक्रमी होगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध होने से जातक के गुप्त व प्रकट शत्रु होंगे। पर शत्रुओं में धन मिलेगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ बृहस्पति होने से जातक को मित्रों से धन प्राप्त होता रहेगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र होने से जातक को राजकीय सम्मान, राजा से सम्मान मिलेगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु होने से जातक की माता छोटी आयु में गुजरेगी।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु जातक को माता के सुख से वंचित करेगा।

मकरलग्न में शनि की स्थिति पंचम स्थान में



मकरलग्न में शनि लग्नेश एवं धनेश है। शनि यहां द्वितीय स्थान का स्वामी एवं मारकेश होते हुए भी स्वयं मारक का काम नहीं करेगा। शनि यहां पंचम स्थान में वृष (मित्र) राशि का होता है। जातक विदेशी भाषा पढ़ेगा। जातक विदेश व्यापार, धंधे से कमायेगा। जातक मंत्री का परम प्रिय व्यक्ति होगा। जातक शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में सफल होगा।

दृष्टि–पंचमस्थ शनि की दृष्टि सप्तम भाव (कर्क राशि), लाभ स्थान (वृश्चिक राशि) एवं अपने ही घर कुम्भ राशि (धन स्थान) पर होगी। जातक अपनी पसंद का या अंतर्जातीय विवाह करेगा। जातक विदेश व्यवसाय से कमायेगा। जातक धनवान तथा उसके पुत्र भी धनी होंगे।

निशानी–ऐसे जातक प्रजावान् होता है। उसको कन्या संतति अधिक होगी। पाराशर ऋषि के अनुसार–'**प्रथमापत्यनाशः स्यान्मानी क्रोधी नृपप्रियः**' उसका ज्येष्ठ संतति का नाश होगा।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा अत्यन्त शुभ फल देगी। जातक को शनि की दशा में धन व प्रतिष्ठा, पुत्र-संतति सुख की प्राप्ति होगी।

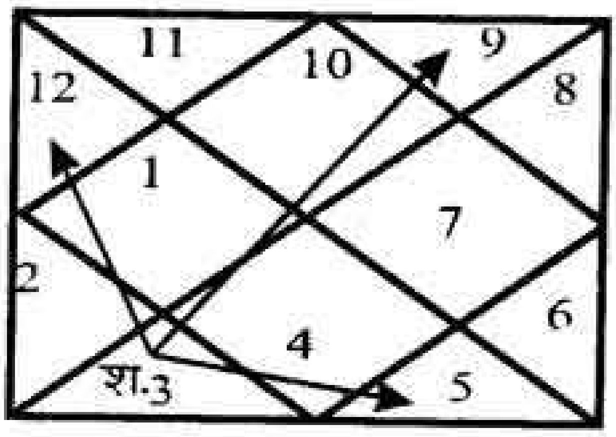
शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चंद्रमा जातक को विद्या से धनार्जन करायेगा। जातक को सरकारी नौकरी मिलेगी।
2. **शनि+सूर्य**–यहां दोनों वृष राशि में होंगे। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री तो शनि मित्र क्षेत्री होगा। अष्टमेश द्वितीयेश की यह युति पंचम स्थान में विस्फोटक है। विद्या प्राप्ति में बाधा होगी । प्रथम संतति हाथ नहीं लगेगी। संतान को लेकर चिंता बनी रहेगी।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल जातक को माता से या भूमि से धन दिलायेगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध शत्रुओं से धन लाभ करायेगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ बृहस्पति जातक को मित्रों से लाभ तथा उत्तम संतति देगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र स्वगृही होने से जातक को विद्या का लाभ देगा। जातक उच्च शिक्षा के माध्यम से विदेश जायेगा।

7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु जातक के संतान एवं विद्या प्राप्ति में बाधा डालेगा।

8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु प्रारंम्भिक विद्या प्राप्ति में बाधक है।

मकरलग्न में शनि की स्थिति षष्टम स्थान में



मकरलग्न में शनि लग्नेश एवं धनेश है। शनि यहां द्वितीय स्थान का स्वामी एवं मारकेश होते हुए भी स्वयं मारक का काम नहीं करेगा। शनि यहां छठे स्थान में मिथुन (मित्र) राशि में होगा। शनि की इस स्थिति **'लग्नभंग योग'**, **'धनहीन योग'** बनेगा। ऐसे जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा। जातक को धन प्राप्ति हेतु किये गये प्रयासों में सफलता नहीं मिलेगी। ऐसे जातक के शत्रु बहुत होंगे। गुप्त रोगों की संभावना रहेगी। पाराशर ऋषि के अनुसार जातक के शरीर में कुछ न कुछ बीमारी रहती है। जातक देहसुख से हीन होता है।

दृष्टि–छठे भाव में स्थित शनि की दृष्टि अष्टम भाव (सिंह राशि), व्यय भाव (धनु राशि) एवं पराक्रम स्थान (मीन राशि) पर होगी। जातक शत्रु पर विजय प्राप्त करेगा। जातक खर्चीले स्वभाव का तथा कर्जदार होगा। जातक के मित्र जातक को दगा देंगे।

निशानी–जातक नकारात्मक या निराशावादी दृष्टिकोण से युक्त व्यक्ति होगा।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा प्रतिकूल फल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चंद्रमा **'विवाहभंग योग'** बनायेगा। जातक को गृहस्थ सुख में कमी अखरेगी।

2. **शनि+सूर्य**–यहां दोनों ग्रह मिथुन राशि में होंगे। सूर्य यहां सम राशि में होकर सरल नामक **'विपरीत राजयोग'** बना रहा है। जबकि शनि मित्र क्षेत्री होकर **'लग्नभंग योग'**, **'धनहीन योग'** बना रहा है। अष्टमेश द्वितीयेश की यह युति छठे भाव में विस्फोटक है। जातक धनी, मानी-अभिमानी होगा पर अचानक शत्रु प्रकोप से जातक को धनबल व शरीबल नष्ट हो जायेगा।

3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल **'सुखहीन योग'** व **'लाभभंग योग'** बनायेगा। जातक को उन्नति हेतु कठोर प्रयास करने पड़ेंगे।

4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध की युति विपरीत राजयोग बनायेगी एवं शत्रु से धन दिलायेगी।

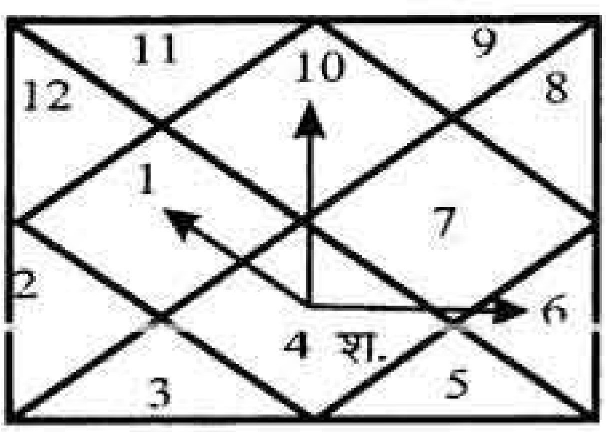
5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ बृहस्पति '**पराक्रमभंग योग**' बनायेगा। जातक धनी तो होगा पर बदनाम भी होगा।

6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ शुक्र राजदण्ड दिला सकता है। '**संतानहीन योग**' के कारण पुत्र संतति की चिंता रहेगी।

7. **शनि+राहु**—शनि के साथ राहु धन के मामले में धोखा देगा तथा जातक के शरीर को भी कष्ट पहुंचायेगा।

8. **शनि+केतु**—शनि के साथ केतु जातक के स्वास्थ्य के लिए घातक है।

मकरलग्न में शनि की स्थिति सप्तम स्थान में



मकरलग्न में शनि लग्नेश एवं धनेश है। शनि यहां द्वितीय स्थान का स्वामी एवं मारकेश होते हुए भी स्वयं मारक का काम नहीं करेगा। शनि यहां सप्तम स्थान में कर्क (शत्रु) राशि में होगा। जातक को दैहिक स्वास्थ्य, सौंदर्य की प्राप्ति होगी। जातक को '**लग्नाधिपति योग**' के कारण परिश्रम का लाभ मिलेगा। जातक को गृहस्थ में कमी महसूस होगी। जातक का अपने जीवन साथी से वैमनस्य रहेगा।

दृष्टि—सप्तमस्थ शनि की दृष्टि भाग्य स्थान (कन्या राशि), अपने ही घर लग्न स्थान (मकर राशि) एवं चतुर्थ स्थान (मेष राशि) पर होगी। जातक भाग्यशाली होगा। पर उसे भाग्योदय हेतु संघर्ष करना पड़ेगा। जातक को भौतिक सुख, जमीन-जायदाद की प्राप्ति होगी।

निशानी—जातक को पेट की तकलीफ (कब्ज) की बीमारी रहेगी।

दशा—शनि की दशा-अंतर्दशा अशुभ फल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+चंद्र**—शनि के साथ चंद्रमा जातक को ससुराल से, पत्नी से धन दिलायेगा। संभवत: जातक की पत्नी कमाऊं महिला होगी।

2. **शनि+सूर्य**—यहां दोनों ग्रह कर्क राशि में होंगे। सूर्य यहां मित्र राशि में तो शनि शत्रु राशि में होगा। अष्टमेश, द्वितीयेश की यह युति सप्तम स्थान में विस्फोटक है। विलम्ब विवाह, पत्नी से वियोग एवं गृहस्थ सुख में अशांति तथा कलह का वातावरण रहेगा। पत्नी विकल अंगों वाली हो सकती है।

3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल होने से जातक को भूमि से लाभ होगा। पत्नी से धन लाभ, माता से धन लाभ दिलवा सकता है पर जातक के परिवार में कलह की स्थिति रहेगी।

4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध रहने से शत्रु से धन लाभ होगा। शत्रु पर विजय से जातक की उन्नति होगी।

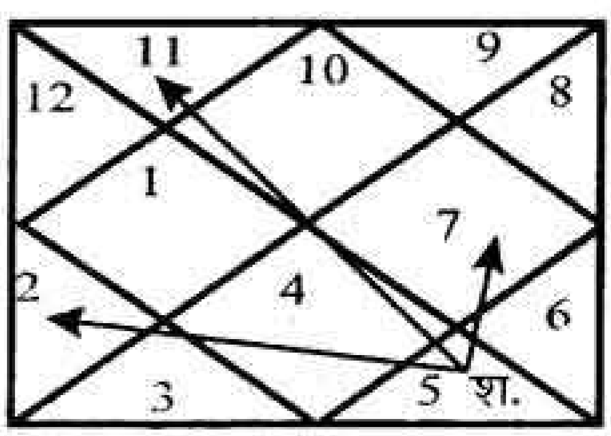
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ बृहस्पति होने मित्रों से धन लाभ, ससुराल की प्रतिष्ठा से जातक को लाभ होगा।

6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र विद्या से लाभ, संतान से लाभ, राज (सरकार) से लाभ का संकेत देता है।

7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु विवाह विच्छेदक होता है।

8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु विवाह सुख में विलम्ब का द्योतक है।

मकरलग्न में शनि की स्थिति अष्टम स्थान में



मकरलग्न में शनि लग्नेश एवं धनेश है। शनि यहां द्वितीय स्थान का स्वामी एवं मारकेश होते हुए भी स्वयं मारक का काम नहीं करेगा। शनि यहां अष्टम स्थान में सिंह (शत्रु) राशि में होगा। शनि की इस स्थिति में '**लग्नभंग योग**' एवं '**धनहीन योग**' बनेगा। ऐसे जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलता। जातक को आर्थिक विषमताओं का सामना करना पड़ता है। ऐसे जातक को स्त्री सुख अल्प एवं बड़े भाई का सुख नहीं होता।

दृष्टि–अष्टमस्थ शनि की दृष्टि दशम भाव (तुला राशि), धन भाव (कुम्भ राशि) एवं पंचम भाव (वृष राशि) पर होगी। जातक को रोजगार, धन एवं विद्या की प्राप्ति हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा।

निशानी–जातक परस्त्रीगामी होता है। 'बृहत्पाराशर होराशास्त्र' के अनुसार '**रोगी चौरो महाक्रोधी द्यूती च परदारगः**' जातक क्रोधी एवं जुआ खेलने का शौकीन होता है।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा अप्रिय फल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चंद्रमा '**विवाहभंग योग**' की सृष्टि करता है। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं होगा।

2. **शनि+सूर्य**–यहां दोनों ग्रह सिंह राशि में होंगे। सूर्य यहां स्वगृही होकर सरल नामक **'विपरीत राजयोग'** बना रहा है जबकि शनि शत्रु क्षेत्री होकर **'लग्नभंग योग'**, **'धनहीन योग'** बना रहा है। अष्टमेश, द्वितीयेश की यह युति अष्टम भाव में विस्फोटक है। जातक धनी-मानी, अभिमानी होगा पर अचानक दुर्घटना में जातक का धनबल, शरीरबल नष्ट हो जायेगा।

3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल **'सुखहीन योग'** व **'लाभभंग योग'** बनाता है। जातक को विवाह का पूर्ण सुख नहीं मिलेगा।

4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध भाग्योदय में बाधक है। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।

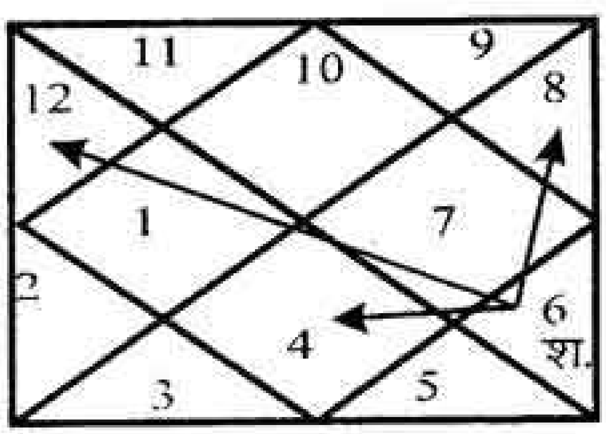
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ गुरु जातक को धनी तो बनायेगा परन्तु मित्र दगा देंगे।

6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र विद्या में बाधा एवं 'संततिहीन योग' के कारण संतान से चिंता करायेगा।

7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु जातक को शत्रु से चोट पहुंचायेगा।

8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु शत्रु से सावधान रहने का संकेत देता है।

मकरलग्न में शनि की स्थिति नवम स्थान में



मकरलग्न में शनि लग्नेश एवं धनेश है। शनि यहां द्वितीय स्थान का स्वामी एवं मारकेश होते हुए भी स्वयं मारक का काम नहीं करेगा। शनि यहां नवम स्थान (कन्या) राशि मित्र के घर में होगा। ऐसा जातक धनवान एवं भाग्यवान होता है। पाराशर ऋषि के अनुसार **'लग्नेशे भाग्यगे जातो भाग्यवान् जनवल्लभः'** जातक भाग्यवान, लोगों का प्रिय, ईश्वर में विश्वास रखने वाला, चतुर वक्ता, स्त्री, पुत्र और धन सुख से युक्त होता है।

दृष्टि–नवम भावगत शनि की दृष्टि लाभ स्थान (वृश्चिक राशि), पराक्रम स्थान (मीन राशि) एवं सप्तम भाव (कर्क राशि) पर होगी। जातक को व्यापार से लाभ होता है। जातक पराक्रमी होता है। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।

निशानी–जातक की बाल्यवस्था दु:खी एवं पीछे का जीवन सुखी होता है।

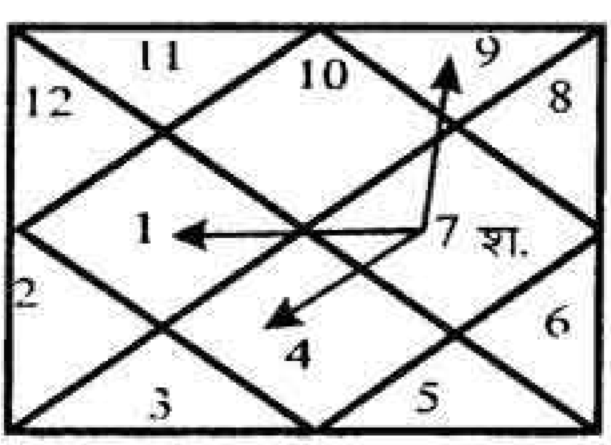
दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा। जातक तीर्थयात्रा करेगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चंद्रमा पत्नी या ससुराल से धन दिलायेगा।

2. **शनि+सूर्य**–यहां दोनों ग्रह कन्या राशि में होंगे। सूर्य यहां सम राशि में तो शनि मित्र राशि में है। अष्टमेश द्वितीयेश की यह युति भाग्य स्थान में विस्फोटक है। जातक के जीवन में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। वास्तविक भाग्योदय हेतु निरन्तर संघर्ष बना रहेगा। भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल होने से जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक की माता उसके भाग्योदय में सहायक होगी।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध होने से जातक सौभाग्यशाली होगा। परिश्रम का पूरा लाभ मिलेगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ बृहस्पति जातक को परिजनों, रिश्तेदारों एवं मित्रों से लाभ दिलायेगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र होने से जातक की विद्या से लाभ होगा, विद्या प्राप्ति के बाद जातक विदेश जायेगा। जातक का भाग्योदय परदेश में होगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु जातक के भाग्योदय में रुकावट डालेगा।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु संघर्ष के बाद जातक का भाग्योदय करायेगा।

मकरलग्न में शनि की स्थिति दशम स्थान में



मकरलग्न में शनि लग्नेश एवं धनेश है। शनि यहां द्वितीय स्थान का स्वामी एवं मारकेश होते हुए भी स्वयं मारक का काम नहीं करेगा। शनि यहां दशम स्थान में तुला राशि में उच्च का होगा। तुला राशि के अंशों में शनि परमोच्च का होगा। शनि की इस स्थिति में **'शश योग'** बनेगा। जातक राजनीति में अग्रगण्य एवं चक्रवर्ती राजा के समान पराक्रमी होगा। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। उसके पास अनेक वाहन एवं भवन होंगे।

दृष्टि–दशमस्थ शनि की दृष्टि व्यय स्थान (धनु राशि), चतुर्थ स्थान (मेष राशि) एवं सप्तम भाव (कर्क राशि) पर होगी। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। जातक भूमि से लाभ प्राप्त करने वाला होता है, जातक उत्तम संतति एवं विवाह सुख को प्राप्त करता है।

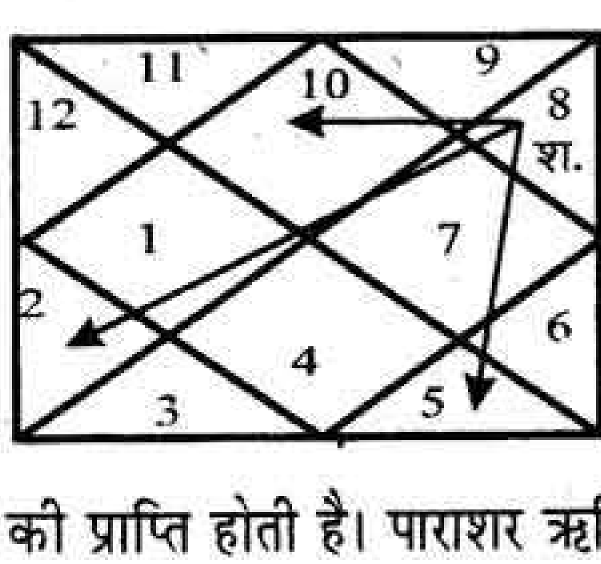
निशानी–'बृहत्पाराशर होराशास्त्र' के अनुसार–**'लग्नेशे दशमे जातः पितृसौख्यसमन्वितः'** जातक पिता के सुख से युक्त, राजमान्य, लोगों में विख्यात, स्वपराक्रम से धन अर्जित करने वाला होता है।

दशा—शनि की दशा-अंतर्दशा में अति उत्तम फलों एवं भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+चंद्र**—शनि के साथ चंद्रमा होने से **'कलत्रमूल धनयोग'** बनेगा। जातक को ससुराल की सम्पत्ति वारिस में मिलेगी।
2. **शनि+सूर्य**—यहां दोनों ग्रह तुला राशि में होंगे। सूर्य यहां नीच का तो शनि नीच का होने से **'नीचभंग योग'** बना। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्यशाली व धनी होगा। अष्टमेश व द्वितीयेश की युति दशम भाव में विस्फोटक है। जातक की नौकरी में बाधा, राजदण्ड एवं झूठी बदनामी का योग है।
3. **शनि+मंगल**—शनि के साथ मंगल की युति **'मातृमूल धनयोग'** बनायेगी। जातक को माता एवं भूमि से धन मिलेगा। जातक महाधनी होगा।
4. **शनि+बुध**—शनि के साथ बुध **'शत्रुमूल धनयोग'** बनाता है। जातक को अपने शत्रुओं की सम्पत्ति मिलेगी।
5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ बृहस्पति **'मित्रमूल धनयोग'** बनाता है। जातक को परिजनों एवं मित्रों की सम्पत्ति मिलेगी।
6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ शुक्र होने से **'राजमूल धनयोग'** बनेगा। जातक को विद्या से, राज (सरकार) से धन की प्राप्ति होगी। जातक की संतान उसकी आज्ञा में रहेगी व वह सपूत होगी। जातक की संतानं जातक को कमा कर देगी।
7. **शनि+राहु**—शनि के साथ राहु राजयोग में गड़बड़ करायेगा। सरकारी पूछताछ खुलेगी।
8. **शनि+केतु**—शनि के साथ केतु सरकार से विवाद उत्पन्न करायेगा।

मकरलग्न में शनि की स्थिति एकादश स्थान में



मकरलग्न में शनि लग्नेश एवं धनेश है। शनि यहां द्वितीय स्थान का स्वामी एवं मारकेश होते हुए भी स्वयं मारक का काम नहीं करेगा। शनि यहां एकादश स्थान में वृश्चिक (शत्रु) राशि में होगा। ऐसे जातक को उत्तम विद्या की प्राप्ति होती है। जातक को प्रचुर मात्रा में धन, यश-पद, प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। पाराशर ऋषि के अनुसार, **'लग्नेशे लाभगे जातः सदा लाभ**

समन्वित:' जातक जिस कार्य में हाथ डालेगा उसमें उसे बराबर सफलता मिलेगी। जातक गुणी होगा। जातक गुणीजनों की कद्र करेगा एवं उदार मनोवृत्ति वाला होगा।

दृष्टि—एकादश स्थान में स्थित शनि की दृष्टि लग्न भाव (मकर राशि), पंचम भाव (वृष राशि), एवं अष्टम भाव (सिंह राशि) पर होती है। जातक को **'लग्नाधिपति योग'** के कारण परिश्रम का पूरा लाभ मिलेगा। जातक को उत्तम संतति की प्राप्ति होगी। जातक के शत्रु होगे पर शत्रुओं का नाश होगा।

निशानी—ऐसा जातक बहुत ही यशस्वी एवं मानी होगा।

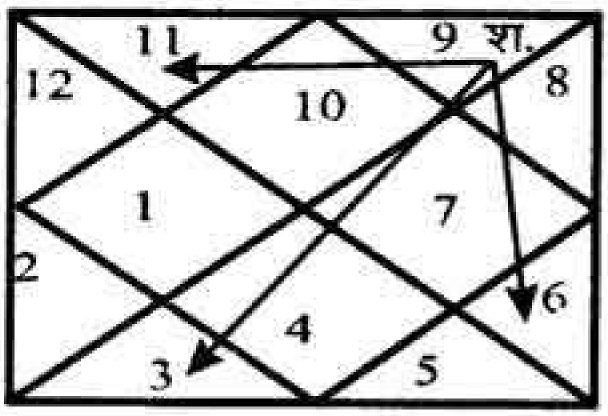
दशा—शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक की उन्नति होगी एवं उसके शत्रुओं का नाश होगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+चंद्र**—शनि के साथ चंद्रमा ससुराल पक्ष से लाभ दिलायेगा।
2. **शनि+सूर्य**—यहां दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में होंगे। सूर्य यहां मित्र राशि में तो, शनि यहां शत्रु राशि में होगा। अष्टमेश, द्वितीयेश की यह युति एकादश स्थान में विस्फोटक है। जातक को व्यापार-व्यवसाय में बाधा, लाभ में रुकावट होगी। भागीदारी में नुकसान। पिता की मृत्यु के बाद जातक बड़े उद्योग का स्वामी होगा।
3. **शनि+मंगल**—शनि के साथ मंगल जातक को माता की सम्पत्ति, भूमि-भवन से लाभ दिलायेगा।
4. **शनि+बुध**—शनि के साथ बुध भाग्योदय कारक होगा। जातक के शत्रु जातक से दबकर उसके अनुकूल हो जायेंगे।
5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ बृहस्पति जातक को मित्रों से लाभ एवं परिजनों का प्रेम दिलायेगा।
6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ शुक्र होने से जातक को राज सरकार से लाभ होगा। विद्या से लाभ होगा, संतान से लाभ दिलायेगा।
7. **शनि+राहु**—शनि के साथ राहु की युति लाभ में बाधक है।
8. **शनि+केतु**—शनि के साथ केतु संभावित लाभ को शून्य में बदल देगा।

मकरलग्न में शनि की स्थिति द्वादश स्थान में

मकरलग्न में शनि लग्नेश एवं धनेश है। शनि यहां द्वितीय स्थान का स्वामी, मारकेश होते हुए भी स्वयं मारक का काम नहीं करेगा। शनि यहां द्वादश स्थान में



धनु (सम) राशि में होगा। शनि की इस स्थिति से '**लग्नभंग योग**' एवं '**धनहीन योग**' बनेगा। ऐसे जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलता तथा उसे आर्थिक विषमताओं का सामना करना पड़ेगा। जातक के जीवन में सुख-दु:ख का चक्र चलता रहता है। जातक व्यर्थ का खर्च बहुत करेगा। जातक परोपकारी होगा।

दृष्टि—द्वादशस्थ शनि की दृष्टि धन भाव (कुंभ राशि), छठे भाव (मिथुन राशि) एवं नवम भाव (कन्या राशि) पर होगी। जातक दूसरों का ऋणी, कर्जदार होगा। जातक के गुप्त शत्रु बहुत होंगे एवं भाग्योदय में रुकावटें आती रहेंगी।

निशानी—पाराशर ऋषि के अनुसार—**'परभाग्यरतः तस्य ज्येष्ठापत्य सुखं नहि'** ऐसे जातक दूसरों के आश्रय पर जीते हैं। उनकी ज्येष्ठ संतति जीवित नहीं रहती।

दशा—शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक को भारी कष्टों-अवरोधों का सामना करना पड़ेगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+चंद्र**—शनि के साथ चंद्रमा ससुराल से विवाद में धन का खर्च करायेगा। पत्नी खर्चीली होगी।
2. **शनि+सूर्य**—यहां दोनों ग्रह धनु राशि में होंगे। सूर्य यहां मित्र क्षेत्री होकर सरल नामक '**विपरीत राजयोग**' बना रहा है। तो शनि सम क्षेत्री होकर '**लग्नभंग योग**' व '**धनहीन योग**' की सृष्टि कर रहा है। अष्टमेश व द्वितीयेश की यह युति द्वादश भाव में विस्फोटक है। जातक धनी-मानी व अभिमानी होगा पर जातक को यात्रा से धनहानि व शरीर हानि होगी। नेत्र पीड़ा होगी।
3. **शनि+मंगल**—शनि के साथ मंगल माता के ईलाज में, भूमि-भवन के रखरखाव में जातक का धन खर्च करायेगा।
4. **शनि+बुध**—शनि के साथ बुध जातक के भाग्योदय में बाधक है, फिर भी जातक **विपरीत राजयोग** के कारण धनी होगा।
5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ बृहस्पति जातक को मित्रों से, रिश्तेदारों से वांछित सहयोग नहीं दिलायेगा।
6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ शुक्र जातक को राज सरकार से वांछित सहयोग नहीं दिलायेगा।

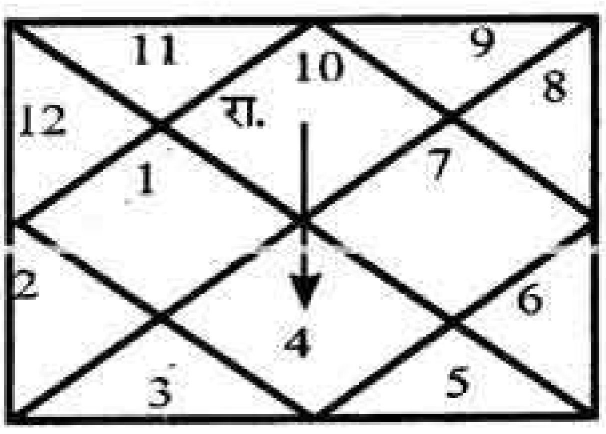
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु व्यर्थ की यात्रा, भटकाव एवं परेशानी पैदा करेगा। जातक पर कर्जा रहेगा।

8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु जातक को परिश्रम का लाभ नहीं होने देगा। जातक को खराब स्वप्न आयेंगे। बुरे विचार आते रहेंगे।

❑❑❑

मकरलग्न में राहु की स्थिति

मकरलग्न में राहु की स्थिति प्रथम स्थान में



मकरलग्न वालों के लिए राहु सम राशि में होने से यह लग्नेश शनि से सम भाव रखता है। राहु शुभ-अशुभ ग्रहों के साहचर्य और स्थिति से शुभ-अशुभ फल देगा। राहु यहां प्रथम भाव में मकर (सम) राशि में है। जातक का दैहिक सौन्दर्य स्वल्प होगा। जातक को दैहिक व मानसिक परेशानी रहेगी। जातक के चेहरे पर चोट भी लग सकती है। ऐसा जातक बड़ा सावधान, चतुर व हिम्मत वाला होता है तथा सदैव उन्नति के लिए प्रयत्नशील रहता है। जातक अनेक प्रकार के धंधे करेगा।

दृष्टि–लग्नस्थ राहु की दृष्टि सप्तम भाव (कर्क राशि) पर होगी। जातक को गृहस्थ सुख कमजोर होगा। जातक के पत्नी से नित-नूतन विवाद होते रहेंगे। जीवनसाथी दुर्बल देह वाली होगी।

निशानी–जातक कुतर्की, जिद्दी व हठी होगा।

दशा–राहु का दशा-अंतर्दशा अनिष्ट फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्रमा जातक को सुन्दर पत्नी देगा। परन्तु जातक अपनी उम्र से बड़ा दिखेगा तथा वह धंधा बदलता रहेगा।
2. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य की युति होने से जातक को स्वास्थ्य में हानि एवं दीर्घ रोग की संभावना रहेगी।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल होने से **'रुचक योग'** बनेगा। जातक महाधनी एवं पराक्रमी, खतरनाक लड़ाकू (योद्धा) होगा।

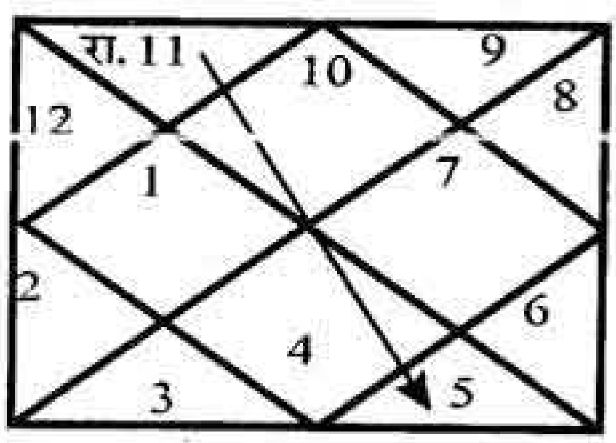
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध '**कुलदीपक योग**' बनायेगा। जातक भाग्योदय में रुकावट महसूस करेगा।

5. **राहु+गुरु**–यहां दोनों ग्रह मकर राशि में है। बृहस्पति यहां नीच राशि में होकर भी '**कुलदीपक योग**', '**केसरी योग**' बना रहा है, तो राहु सम राशि में होने से '**चाण्डाल योग**' बना। ऐसा जातक स्थाई धंधे, रोजगार की तलाश में इधर-उधर भटकता रहेगा। जातक का चित्त अशान्त रहेगा।

6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र जातक को कामी व जिद्दी बनायेगा।

7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि '**शश योग**' के कारण जातक को राजातुल्य पराक्रमी व हठी बनायेगा।

मकरलग्न में राहु की स्थिति द्वितीय स्थान में



मकरलग्न वालों के लिए राहु सम राशि में होने से यह लग्नेश शनि से सम भाव रखता है। राहु शुभ-अशुभ ग्रहों के साहचर्य और स्थिति से शुभ-अशुभ फल देगा। राहु यहां द्वितीय स्थान में अपनी मूलत्रिकोण कुंभ राशि में हर्षित है। धन के घड़े में छेद होने के कारण जातक आर्थिक परेशानियां जरूर उठायेगा। परन्तु जातक का कोई काम रुका नहीं रहेगा। जातक की वाणी रूखी होगी जिसके कारण कुटुम्ब सुख में कमी रहेगी। अपनी गुप्त युक्तियों के कारण जातक अन्त में अपनी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ कर लेता है।

दृष्टि–द्वितीयस्थ राहु की दृष्टि अष्टम स्थान (सिंह राशि) पर होगी। जिसके कारण जातक के शत्रु बहुत होगे जो कि पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति में रुकावट डालेगे।

निशानी–जातक जीवन में कर्जदार जरूर होगा। जातक प्रकट रूप से धनी व प्रतिष्ठित दिखेगा पर यथार्थ में ऐसा होगा नहीं।

दशा–राहु का दशा-अंतर्दशा में धन हानि होगी। कुटुम्बियों से विरोध होगा एवं शत्रु बढ़ेंगे।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्रमा जातक के धन का अपव्यय करायेगा। पत्नी को लेकर रुपया खर्च होगा।

2 **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य होने से आयु, धन व यश की हानि होगी।

3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल होने से जातक बात-बात पर अपशब्द व लड़ाकू भाषा बोलेगा। जिससे धन व यश दोनों ही नष्ट होंगे।

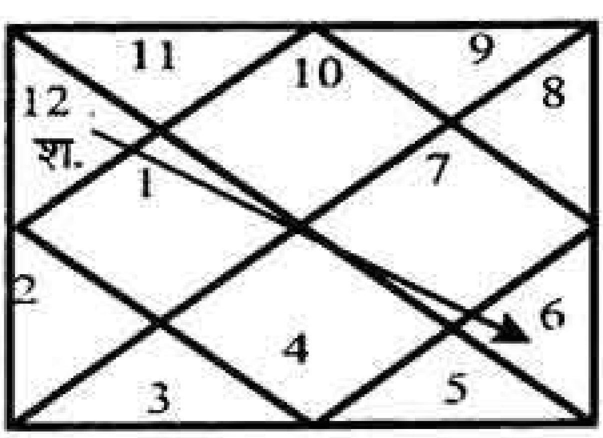
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध धन प्राप्ति के अवसर भी देगा एवं उसके एकत्रित धन को नष्ट भी करेगा।

5. **राहु+गुरु**–यहां दोनों ग्रह कुंभ राशि में है। बृहस्पति यहां सम राशि में है, तो राहु अपनी मूलत्रिकोण राशि में होने से **'चाण्डाल योग'** बना जातक को धनाभाव बना रहेगा एवं आर्थिक विषमताएं परेशान करती रहेंगी। जातक की वाणी कठोर (कर्कश) होगी।

6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र विद्या द्वारा धन प्राप्ति के संकेत देता है। सरकार द्वारा भी लाभ होगा।

7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि जातक को महाधनी बनायेगा, परन्तु जातक के अर्जित धन का 40% हिस्सा व्यर्थ में खर्च होता रहेगा।

मकरलग्न में राहु की स्थिति तृतीय स्थान में



मकरलग्न वालों के लिए राहु सम राशि में होने से यह लग्नेश शनि से सम भाव रखता है। राहु शुभ-अशुभ ग्रहों के साहचर्य और स्थिति से शुभ-अशुभ फल देगा। राहु यहां मीन (नीच) राशि में है। तृतीय स्थान में **'फलदीपिका'** के अनुसार तृतीय स्थान में राहु राजयोग कारक है। ऐसा जातक महान पराक्रमी होता है परन्तु उसे अपने भाई-बहन, कुटुम्बियों की ओर से चिंता व परेशानी रहती है। ऐसा जातक बाहर से हिम्मती दिखाई देता है पर अंदर ही अंदर कमजोर होता है। पर अंतिम रूप में सफलतम व्यक्ति होते हैं। शत्रु पर विजय मिलती है।

दृष्टि–तृतीयस्थ राहु की दृष्टि भाग्य स्थान (कन्या राशि) पर होने से जातक को भाग्योदय हेतु निरन्तर बाधाओं का सामना करना पड़ेगा। जीवन में उतार-चढ़ाव बहुत आयेंगे।

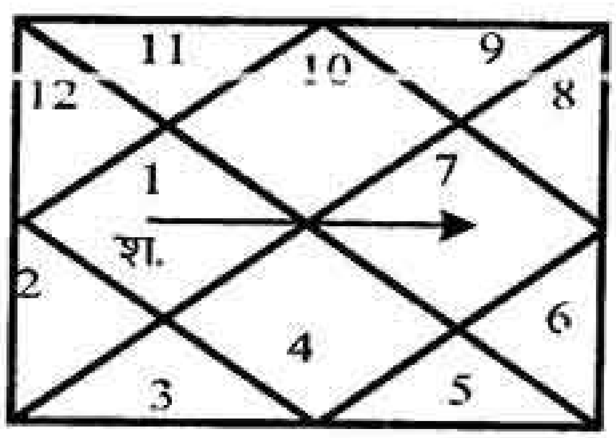
निशानी–जातक के कुटुम्बी ही जातक के विरोधी होंगे।

दशा–राहु का दशा-अंतर्दशा में जातक को आंतरिक विरोध का अनुभव होगा पर अंत में सफलता मिलती है।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+चंद्र**–जातक युद्ध प्रिय नहीं होगा। जातक का ससुराल पक्ष पराक्रमी होगा।
2. **राहु+सूर्य**–जातक कुटम्बियों के कारण मारा जायेगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल जातक को युद्ध प्रिय एवं लड़ाकू बनायेगा।
4. **राहु+बुध**–राहु के कुटम्बी जन ही जातक के शत्रु होंगे।
5. **राहु+गुरु**–यहां दोनों ग्रह मीन राशि में हैं। बृहस्पति यहां स्वगृही होगा तथा राहु अपनी नीच राशि में होने से **'चाण्डाल योग'** बना। परिजनों में वैमनस्य रहेगा। जातक के मित्र से दगा देंगे फिर भी राहु के कारण जातक प्रबल पराक्रमी होगा।
6. **राहु+शुक्र**–जातक युद्ध प्रिय नहीं होगा। जातक विद्यावान होगा।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि जातक को युद्ध प्रिय व झगड़ालू बनायेगा।

मकरलग्न में राहु की स्थिति चतुर्थ स्थान में



मकरलग्न वालों के लिए राहु सम राशि में होने से यह लग्नेश शनि से सम भाव रखता है। राहु शुभ-अशुभ ग्रहों के साहचर्य और स्थिति से शुभ-अशुभ फल देगा। राहु यहां चतुर्थ स्थान में मेष (सम) राशि में है। ऐसा जातक षड्यंत्रकारी, स्वार्थी एवं मिथ्यावादी होगा। माता, भूमि एवं मकान के मामले में विवाद रहेगा। जातक के घर में अशांति का वातावरण बना रहेगा। वाहन एवं नौकर खर्चीले होंगे। जातक का स्वयं का चरित्र संदेहास्पद होगा। ऐसा जातक अनेक युक्तियों एवं धैर्यबल से अपना काम निकालने में सफल होता है।

दृष्टि–चतुर्थ भावगत राहु की दृष्टि दशम भाव (तुला राशि) पर होगी। फलतः जातक राज्य (सरकार) पक्ष में पद-प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है। जातक राजनैतिक सम्पर्क (पहुंच) वाला होता है।

निशानी–यदि जातक सरकारी नौकरी में है तो अपने से उच्च अधिकारी से झगड़ा जरूर करेगा। प्राइवेट नौकरी में भी मालिक से झगड़ा करेगा।

दशा–राहु का दशा-अंतर्दशा में जातक को घरेलू संघर्षों का सामना करना पड़ेगा। माता की बीमारी या मृत्यु भी कष्टदायक रहेगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्रमा जातक की माता को कष्ट पहुंचायेगा। जातक को वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।

2 **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य माता-पिता दोनों को कष्ट पहुंचायेगा। माता-पिता की छोटी उम्र में मृत्यु होगी।

3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल जातक को बड़ी भूमि का स्वामी बनायेगा। परंतु भूमि पर मुकदमा जरूर चलेगा।

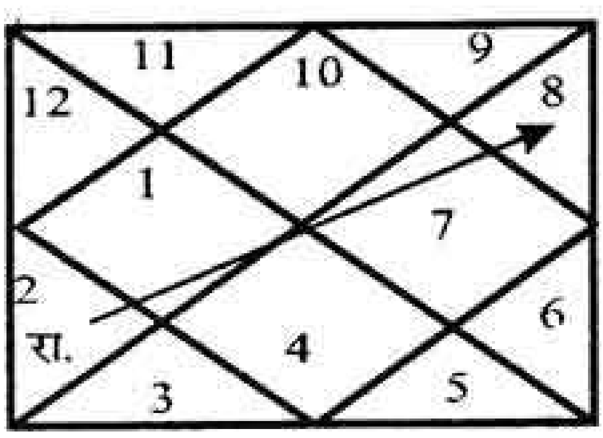
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध जातक को वाहन दुर्घटना से भय करायेगा।

5. **राहु+गुरु**–यहां दोनों ग्रह मेष राशि में हैं। गुरु यहां मित्र राशि में, तो राहु सम राशि में होने से '**चाण्डाल योग**' बना। '**केसरी योग**' एवं '**कुलदीपक योग**' भी गुरु बना रहा है। जातक बुद्धिमान व समझदार होगा पर उसकी माता बीमार रहेगी। वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।

6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र जातक की विद्या में रुकावट दिलायेगा। वाहन दुर्घटना का भय बना रहेगा।

7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि वाहन दुर्घटना करायेगा अथवा जातक का नौकर चोरी करके भाग जायेगा।

मकरलग्न में राहु की स्थिति पंचम स्थान में



मकरलग्न वालों के लिए राहु सम राशि में होने से यह लग्नेश शनि से सम भाव रखता है। राहु शुभ-अशुभ ग्रहों के साहचर्य और स्थिति से शुभ-अशुभ फल देगा। राहु यहां पंचम स्थान में वृषभ राशि में है। ऐसा जातक विद्यावान् होगा, परन्तु जातक को प्रारंभिक विद्या प्राप्ति में रुकावट आयेगी। जातक प्रजावान होगा परन्तु पुत्र-सुख में विलम्ब या बाधा रहेगी। ऐसे जातक की बुद्धि तेज होती है। जातक को अंत में संतान एवं विद्या दोनों पक्ष में सफलता मिलती है।

दृष्टि–पंचम भावगत राहु की दृष्टि एकादश स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी, फलत: जातक की व्यापार में, लाभ में रुकावट महसूस होगी।

निशानी–ऐसा जातक यंत्र-मंत्र-तंत्र तथा गुप्त विद्याओं का जानकार होगा।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्रमा जातक को आध्यात्मिक विद्या का स्वामी बनायेगा।

2 **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य प्रारंभिक विद्या प्राप्ति में बाधक है। जातक को संतान की चिंता रहेगी।

3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल व्यापार में लाभ करायेगा और उतार-चढ़ाव आते रहेंगे।

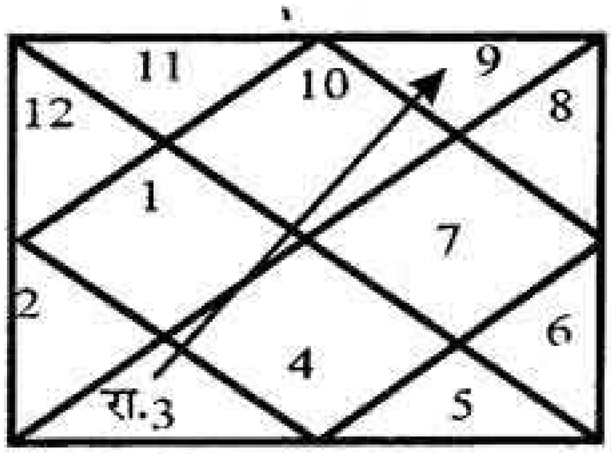
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध जातक के भाग्य में रुकावट डाल रहा है। संतान की चिंता रहेगी।

5. **राहु+गुरु**–यहां दोनों ग्रह वृष राशि में है। बृहस्पति यहां शत्रु राशि में तो राहु उच्च राशि में होने से **'चाण्डाल योग'** बना। विद्या में बाधा आयेगी। पुत्र संतति को लेकर चिंता बनी रहेगी।

6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र स्वगृही होने से जातक का राज (सरकार) में वर्चस्व रहेगा।

7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि जातक को परिश्रम का लाभ देगा पर जातक की विद्या अधूरी छूट जायेगी।

मकरलग्न में राहु की स्थिति षष्टम स्थान में



मकरलग्न वालों के लिए राहु सम राशि में होने से यह लग्नेश शनि से सम भाव रखता है। राहु शुभ-अशुभ ग्रहों के साहचर्य और स्थिति से शुभ-अशुभ फल देगा। राहु यहां छठे स्थान में अपनी मूल त्रिकोण मिथुन राशि में स्वगृही होकर राजयोग प्रदाता है। ऐसा जाताक शत्रु पक्ष पर विशेष प्रभाव रखता है। यह राहु लड़ाई-झगड़े, कोर्ट-कचहरी में विजय एवं सफलता प्रदान करता है। ऐसे जातक को यदि कोई शारीरिक व्याधि होती है तो उसका फौरन निदान हो जाता है।

दृष्टि–छठे स्थान में स्थित राहु की दृष्टि व्यय भाव (धनु राशि) पर होगी। फलत: जातक खर्चीले स्वभाव का होता है।

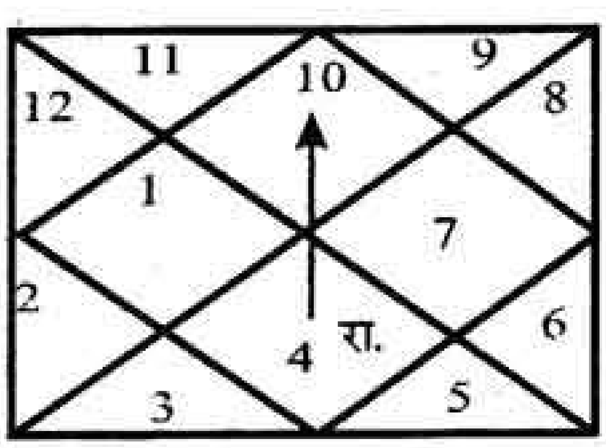
निशानी–ऐसे जातक में हिम्मत व निर्भयता का विशेष समावेश होता है। ऐसा जातक कूटनीतिज्ञ एवं कुशल राजनीतिज्ञ होता है।

दशा–राहु का दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी। जातक को शत्रुओं पर विजय एवं बाधाओं से मुक्ति मिलेगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्रमा **'विवाह बाधा योग'** बनाता है। जातक को विवाह का सुख प्राप्त नहीं रहेगा।
2. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य सरल नामक **'विपरीत राजयोग'** बनायेगा। जातक धनी होगा। पर गुप्त शत्रु बहुत होंगे।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल **'सुखहीन योग'** व **'लाभभंग योग'** बनायेगा। जातक को व्यापार में नुकसान होगा और माता की आयु छोटी होगी।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध हर्ष नामक **'विपरीत राजयोग'** बनायेगा। जातक धनी तो होगा पर भाग्य उसका साथ नहीं देगा।
5. **राहु+गुरु**–यहां दोनों ग्रह मिथुन राशि में हैं। बृहस्पति यहां शत्रु राशि में है, विमल नामक **'विपरीत राजयोग'** बना रहा है। राहु मूलत्रिकोण राशि में स्वगृही होकर **'चाण्डाल योग'** बना रहा है। जातक धनवान एवं अभिमानी होगा। जातक के गुप्त शत्रु बहुत होंगे। जीवन में परेशानियां बहुत आयेंगी।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र **'संतानहीन योग'** एवं **'राजभंग योग'** बनायेगा। जातक को नौकरी, रोजी-रोजगार की प्राप्ति हेतु परेशान होना पड़ेगा।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि जातक की कुण्डली में **'लग्नभंग योग'** एवं **'धनहीन योग'** बनायेगा। जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।

मकरलग्न में राहु की स्थिति सप्तम स्थान में



मकरलग्न वालों के लिए राहु सम राशि में होने से यह लग्नेश शनि से सम भाव रखता है। राहु शुभ-अशुभ ग्रहों के साहचर्य और स्थिति से शुभ-अशुभ फल देगा। राहु यहां सप्तम स्थान में कर्क (शत्रु) राशि में है। ऐसे जातक को स्त्री पक्ष से महान कष्ट मिलता है। जननेन्द्रिय में रोग होता है अथवा जातक अविवाहित होता है। जातक को कुछ-न-कुछ मानसिक परेशानी सदैव लगी रहेगी।

दृष्टि–सप्तमस्थ राहु की दृष्टि लग्न स्थान (मकर राशि) पर होगी फलतः जातक अस्थिर चित्त वृत्ति वाला होता है। अपनी कूटनीति, मनोबल एवं गुप्त युक्तियों द्वारा कठिन परिस्थितियों पर विजय प्राप्त करने में सफल हो जाता है।

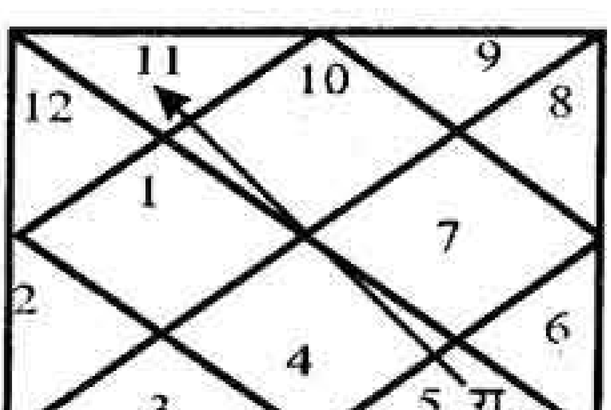
निशानी–जातक को पेट की तकलीफ रहेगी तथा शल्य चिकित्सा भी होगी।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी। जातक को गुप्त शक्तियों की प्राप्ति होगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चद्रंमा जातक को सुन्दर पत्नी देगा परन्तु पत्नी से मनमुटाव की स्थिति रहेगी।
2. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य विवाह-विच्छेद का योग बनाता है।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ नीच का मंगल पत्नी व दीर्घकालीन गृहस्थ सुख में बाधक है।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध विवाह में देरी, विलम्ब कराता है।
5. **राहु+गुरु**–यहां दोनों ग्रह कर्क राशि में हैं। बृहस्पति यहां उच्च का होकर '**हंस योग**' बना रहा है, तो राहु शत्रु राशि में होकर '**चाण्डाल योग**' बना रहा है। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं धनी होगा। परन्तु जातक के गृहस्थ सुख में न्यूनता रहेगी। **द्विभार्या योग** बनता है।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र जातक के गुप्तांग में बीमारी देगा। पर उसे शल्य चिकित्सा से लाभ होगा।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि '**लग्नाधिपति योग**' बनाता है। जातक को थोड़े से संघर्ष के बाद कार्य में सफलता मिलेगी।

मकरलग्न में राहु की स्थिति अष्टम स्थान में



मकरलग्न वालों के लिए राहु सम राशि में होने से यह लग्नेश शनि से सम भाव रखता है। राहु शुभ-अशुभ ग्रहों के साहचर्य और स्थिति से शुभ-अशुभ फल देगा। राहु यहां अष्टम स्थान में सिंह (शत्रु) राशि में होगे। जातक को स्वास्थ्य संबंधी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। जातक को उदर व गुदा संबंधी रोग भी हो सकते हैं तथा कई बार तो मृत्यु-तुल्य कष्टों का सामना भी करना पड़ेगा। गुप्त रोग, हृदय रोग का प्रकोप भी संभव है। धन व यश की हानि होगी।

दृष्टि–अष्टमस्थ राहु की दृष्टि धन भाव (कुंभ राशि) पर होगी। फलतः जातक के धन का अपव्यय होगा। धन संकलन में बाधाएं आयेगी।

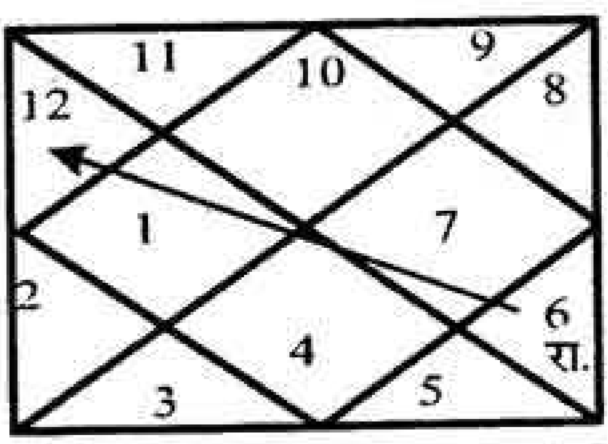
निशानी–जातक की वाणी अप्रिय व कुटिल होगी।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा जातक की आयु के लिए कष्टप्रद होगी। मारक या पाप ग्रह का अंतर घातक हो सकता है।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्रमा जीवनसाथी की आयु छोटी करेगा। जातक विधुर होगा तथा वह दूसरा विवाह करेगा, फिर भी उसका गृहस्थ सुख ठीक नहीं होगा।
2. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य सरल नामक **'विपरीत राजयोग'** बनायेगा। जातक धनी, मानी-अभिमानी होगा एवं दीर्घ आयु को प्राप्त करेगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल **'सुखहीन योग'** व **लाभभंग योग'** तो कराता ही है साथ में विलम्ब विवाह के योग एवं अविवाह की स्थिति भी बनाता है।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध **'भाग्यभंग योग'** एवं सरल नामक **'विपरीत राजयोग'** बनाता है। जातक के भाग्योदय में काफी परेशानी आयेगी।
5. **राहु+गुरु**–यहां दोनों ग्रह सिंह राशि में है। गुरु मित्र राशि में विमल नामक **'विपरीत राजयोग'** बना रहा है, तो राहु शत्रु राशि में बैठकर **'चाण्डाल योग'** बना रहा है। जातक धनवान एवं अभिमानी होगा, पर अचानक दुर्घटना का भय बना रहेगा। जातक समाज का अग्रगण्य व्यक्ति होगा।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र **'संतानहीन योग'** एवं **'राजभंग योग'** बनाता है। जातक को संतान से चिंता एवं राजदण्ड का भय रहेगा।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि **'लग्नभंग योग'** एवं **'धनहीन योग'** बनाता है। जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।

मकरलग्न में राहु की स्थिति नवम स्थान में



मकरलग्न वालों के लिए राहु सम राशि में होने से यह लग्नेश शनि से सम भाव रखता है। राहु शुभ-अशुभ ग्रहों के साहचर्य और स्थिति से शुभ-अशुभ फल देगा। राहु यहां नवम स्थान में कन्या राशि में स्वगृही होगा। ऐसे जातक को प्रारंभिक जीवन में कुछ कठिनाइयों के बाद जबरदस्त सफलता मिलेगी। जातक गुप्त शक्तियों एवं आत्म बल के माध्यम से किसी भी समस्या का निराकरण करने में सफल हो जाता है। ऐसा जातक अर्ध-नास्तिक होता है। जातक कभी ईश्वर को मानता है, कभी नहीं मानता।

दृष्टि–नवमस्थ राहु की दृष्टि पराक्रम स्थान (मीन राशि) पर होगी। जातक पराक्रमी होगा। भाइयों-कुटम्बियों में परस्पर प्रेम का अभाव रहेगा।

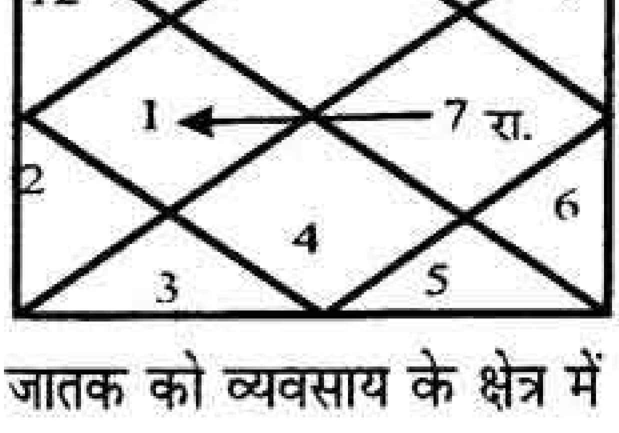
निशानी–ऐसा जातक जीवन में सब कुछ होते हुए भी किसी न किसी चीज का निरन्तर अभाव महसूस करता रहेगा।

दशा–राहु का दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा पर मिश्रित फल दृष्टि गोचर होंगे।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्रमा जातक के भाग्योदय में बाधा डालेगा। विवाह के बाद उज्ज्वल भविष्य संभव है।
2. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य जातक के पिता को कष्ट देगा। जातक को पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल जातक की माता को कष्ट देगा। जातक को माता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध होने से जातक राजा के समान प्रभावशाली, बुद्धिमान एवं भाग्यशाली होगा।
5. **राहु+गुरु**–यहां दोनों ग्रह कन्या राशि में हैं। गुरु शत्रु राशि में है, तो राहु यहां स्वगृही होकर **'चाण्डाल योग'** बना रहा है। जातक को भाग्योदय हेतु काफी परेशानियों-दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा। जातक का जनसम्पर्क विस्तृत होगा।
6. **राहु+शुक्र**–जातक का भाग्योदय संघर्ष के बाद होगा पर शानदार होगा।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि जातक को परिश्रम का लाभ देगा। यह युति अपव्यय भी करायेगी व सफलता भी देगी।

मकरलग्न में राहु की स्थिति दशम स्थान में



मकरलग्न वालों के लिए राहु सम राशि में होने से यह लग्नेश शनि से सम भाव रखता है। राहु शुभ-अशुभ ग्रहों के साहचर्य और स्थिति से शुभ-अशुभ फल देगा। राहु यहां दशम स्थान में तुला (मित्र) राशि में होगा। ऐसे जातक सरकार द्वारा कोर्ट-कचहरी द्वारा उत्पन्न परेशानियों का सामना करना पड़ता है। जातक को व्यवसाय के क्षेत्र में भी बाधाओं का सामना करना पड़ता है। जातक को

पिता की सुख भी अल्प होता है। अपनी गुप्त युक्तियों व चातुर्य के कारण जातक सभी समस्याओं का निराकरण करने में सफल होता है।

दृष्टि—दशमस्थ राहु की दृष्टि चतुर्थ भाव (तुला राशि) पर होगी। फलतः जातक को माता का सुख कमजोर होगा एवं जमीन-जायदाद को लेकर विवाद होगा।

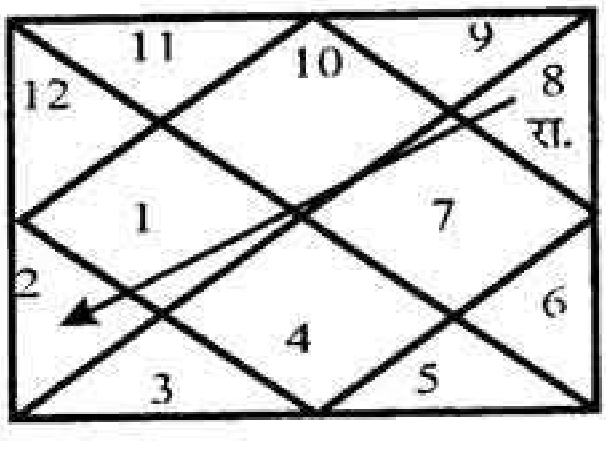
निशानी—ऐसे जातक की आजीविका का साधन जन्म स्थान से दूरस्थ प्रदेशों में होगा।

दशा—राहु का दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु+चंद्र**—राहु के साथ चंद्रमा जातक को विवाह के बाद तरक्की देगा। राहु सरकारी नौकरी में बाधक रहेगा।
2. **राहु+सूर्य**—राहु के साथ सूर्य जातक को पिता की सम्पत्ति व सुख से वंचित कर देगा।
3. **राहु+मंगल**—राहु के साथ मंगल जातक को माता एवं भाइयों का सुख तोड़ेगा।
4. **राहु+बुध**—राहु के साथ बुध व्यापार में नित-नूतन बदलाव कराता रहेगा।
5. **राहु+गुरु**—यहां दोनों ग्रह तुला राशि में हैं। बृहस्पति यहां शत्रु राशि में है, तो राहु मित्र राशि में बैठकर '**चाण्डाल योग**' बना रहा है। गुरु '**कुलदीपक योग**', '**केसरी योग**' बना रहा है। जातक पराक्रमी एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। जातक अपने कुल का नाम रोशन करेगा तथा राजनीति में भी उसका हस्तक्षेप रहेगा।
6. **राहु+शुक्र**—राहु के साथ शुक्र '**मालव्य योग**' बनायेगा। जातक राजा तुल्य वैभवशाली एवं समर्थ्यवान् होगा।
7. **राहु+शनि**—राहु के साथ '**शश योग**' बनायेगा। ऐसा जातक राजा के तुल्य पराक्रमी एवं वैभवशाली होगा।

मकरलग्न में राहु की स्थिति एकादश स्थान में



मकरलग्न वालों के लिए राहु समराशि में होने से यह लग्नेश शनि से सम भाव रखता है। राहु शुभ-अशुभ ग्रहों के साहचर्य और स्थिति से शुभ-अशुभ फल देगा। राहु यहां एकादश स्थान में वृश्चिक (नीच) राशि में होगा। फिर भी राहु यहां राजयोग कारक है। ऐसा जातक अपने जीवन में विशेष परिश्रम, साहस एवं बुद्धिबल से उच्च पद-प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है। व्यापार या

किसी भी नये कार्य के प्रारंभ में जातक को थोड़ी हानि उठानी पड़ती है पर संघर्ष के बाद सफलता सुनिश्चित है।

दृष्टि–एकादश भावगत राहु की दृष्टि पंचम भाव (वृष राशि) पर होगी। फलत: जातक को विद्या में रुकावट के साथ सफलता एवं पुत्र प्राप्ति में भी विलम्ब के बाद सफलता मिलेगी।

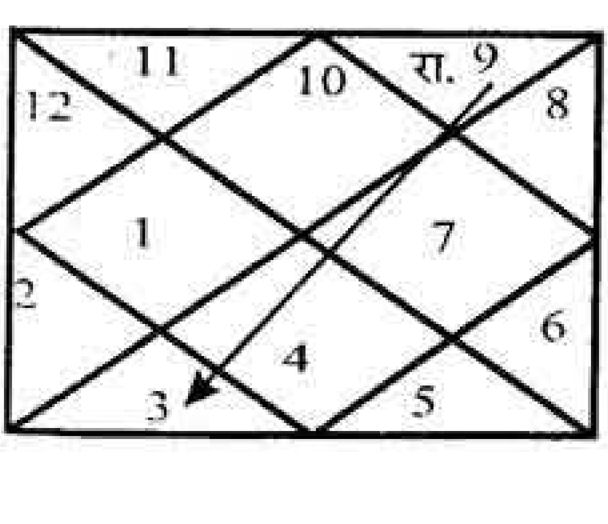
निशानी–प्रारम्भिक परेशानियों का अंत में सुखद फल मिलता है।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा प्रारंभ में बीस प्रतिशत संघर्ष पर अंत में अस्सी प्रतिशत सफलता देगी अर्थात् इस दशा में दु:ख-सुख का सम्मिश्रण 20% व 80% रहता है।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ नीच का चंद्रमा वैवाहिक जीवन में मनोमालिन्यता उत्पन्न करेगा।
2. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य जातक के पैतृक सुख के लिए घातक है।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल जातक को धनी तो बनायेगा, पर भाइयों-रिश्तेदारों से नहीं निभेगी।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध भाग्योदय में पग-पग पर बाधा उत्पन्न करेगा।
5. **राहु+गुरु**–यहां दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में हैं। बृहस्पति यहां मित्र राशि में है, तो राहु नीच राशि में बैठकर '**चाण्डाल योग**' बना रहा है। जातक समाज का अग्रगण्य तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। व्यापार में हानि होगी। जातक को संतान को लेकर चिंता बनी रहेगी।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र विद्या प्राप्ति में बाधा डालेगा, एवं संतान के विषय में चिंता देगा।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि धन प्राप्ति के प्रयासों में रोड़े उत्पन्न करेगा।

मकरलग्न में राहु की स्थिति द्वादश स्थान में



मकरलग्न वालों के लिए राहु सम राशि में होने से यह लग्नेश शनि से सम भाव रखता है। राहु शुभ-अशुभ ग्रहों के साहचर्य और स्थिति से शुभ-अशुभ फल देगा। राहु यहां द्वादश स्थान में धनु (नीच) राशि का होगा। ऐसे जातक को अपने दैनिक खर्चों

के लिए दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। जातक को बाहरी यात्रा से नुकसान होगा। जातक को विदेश यात्रा में धोखा होगा।

दृष्टि–द्वादश भावगत राहु की दृष्टि छठे स्थान (मिथुन राशि) पर होगी फलत: जातक के जीवन में गुप्त शत्रुओं का प्रकोप रहेगा।

निशानी–जातक को दु:स्वप्न आयेंगे। यदि लग्नेश शनि की स्थिति खराब हो तो दुर्घटना, अकाल मृत्यु का भय बना रहेगा।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा अशुभ फल देगी। शत्रुओं का प्रकोप बढ़ेगा। व्यर्थ की यात्राएं होंगी। विश्वासघात अधिक होगा।

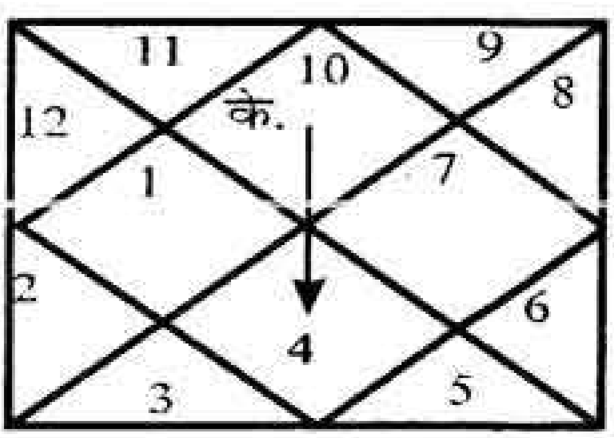
राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्रमा '**विवाहभंग योग**' बनाता है। ऐसे जातक का विवाह विलम्ब से होगा या दो विवाह होंगे।
2. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य विपरीत राजयोग के कारण जातक को धनी तो बनायेगा पर जातक को पिता का सुख प्राप्त नहीं होगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल '**सुखहीन योग**' एवं '**लाभभंग योग**' बनाता है। ऐसे जातक को भूमि, भवन व माता का सुख कमजोर रहेगा।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध भाग्य में बाधाएं उत्पन्न करेगा।
5. **राहु+गुरु**–यहां दोनों ग्रह धनु राशि में है। बृहस्पति यहां स्वगृही है, तो राहु नीच राशि में बैठकर '**चाण्डाल योग**' बना रहा है। बृहस्पति के कारण विमल नामक '**विपरीत राजयोग**' बन रहा है। जातक एक धनी एवं अभिमानी व्यक्ति होगा। जातक की फिजूल खर्ची की आदत एवं व्यर्थ की यात्राओं से घर वाले परेशान रहेंगे।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र '**संतानहीन योग**' एवं '**राजभंग योग**' बनाता है। जातक की पत्नी जातक से असंतुष्ट रहेगी।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि '**लग्नभंग योग**' एवं '**धनहीन योग**' बनाता है। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।

❑❑❑

मकरलग्न में केतु की स्थिति

मकरलग्न में केतु की स्थिति प्रथम स्थान में



मकरलग्न वालों के लिए केतु शुभ ग्रह है, क्योंकि लग्नेश शनि की राशि मकर केतु की मूल त्रिकोण राशि मानी गई है। जहां केतु प्रमुदित रहता है। केतु यहां मकर मूल त्रिकोण राशि में है। ऐसा जातक बड़े उग्र व जिद्दी स्वभाव का होता है। जातक के शरीर में चोट लगने की संभावना रहती है। जातक के स्वास्थ्य में किसी-न-किसी प्रकार की कमी बनी रहेगी। जातक महत्वाकांक्षी होगा और उन्नति मार्ग की ओर आगे बढ़ता रहेगा।

दृष्टि—लग्नस्थ केतु की दृष्टि सप्तम भाव (कर्क राशि) पर होगी। जातक का वैवाहिक जीवन कष्टदायक रहेगा।

निशानी—जातक क्रोधी स्वभाव का होगा।

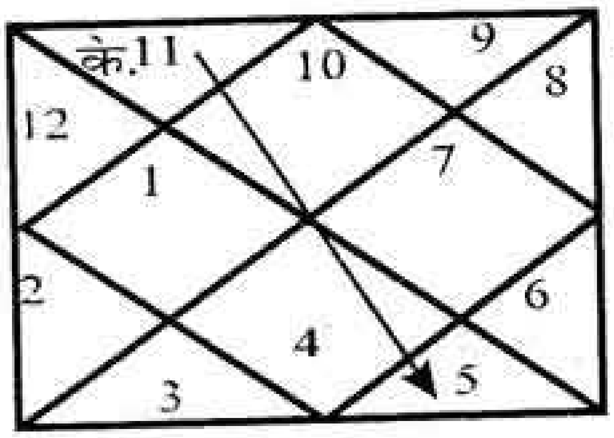
दशा—केतु की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**—केतु के साथ चंद्रमा जातक को सुन्दर पत्नी देगा। जातक कीर्तिवान होगा।
2. **केतु+सूर्य**—केतु के साथ सूर्य जातक को गुस्सैल बनायेगा।
3. **केतु+मंगल**—केतु के साथ मंगल जातक को **'रुचक योग'** के कारण राजा के समान पराक्रमी बनायेगा।
4. **केतु+बुध**—केतु के साथ बुध जातक को सौभाग्यशाली बनायेगा।
5. **केतु+गुरु**—केतु के साथ बृहस्पति जातक को आध्यात्मिक व्यक्ति बनायेगा।

6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र [illegible] की पत्नी सुन्दर होगी।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ '**शश योग**' करायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं प्रभावशाली होगा।

मकरलग्न में केतु की स्थिति द्वितीय स्थान में



मकरलग्न वालों के लिए केतु शुभ ग्रह है, क्योंकि लग्नेश शनि की राशि मकर केतु की मूल त्रिकोण राशि मानी गई है। जहां केतु प्रमुदित रहता है। केतु यहां द्वितीय स्थान में कुंभ (मित्र) राशि में है। ऐसे जातक को धन संग्रह करने में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। कुटुम्ब के कारण भी कष्ट रहता है। परन्तु ऐसा व्यक्ति हिम्मत, साहस व बुद्धि चातुर्य के कारण विपरीत परिस्थितियों को काबू में करने में सफल हो जाता है।

दृष्टि–द्वितीयस्थ केतु की दृष्टि अष्टम स्थान (सिंह राशि) पर होगी, फलतः गुप्त रोग अचानक दुर्घटना के कारण जातक की आयु को हानि पहुंचाती है।

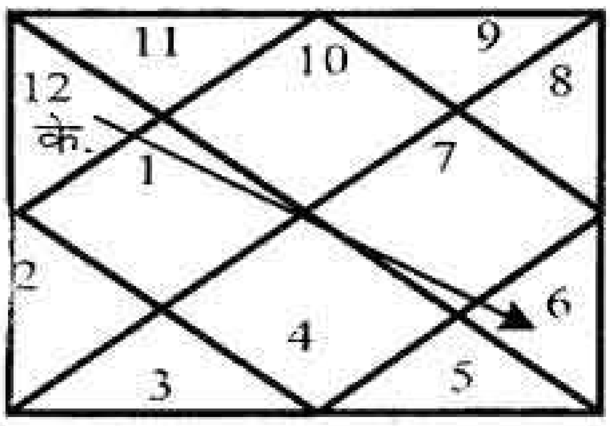
निशानी–ऐसा जातक साहसी होता है, संकट के समय नहीं घबराता।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा अप्रिय रहेगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ चंद्रमा धन के घड़े में छेद का काम करेगा। जातक आर्थिक तंगी में रहेगा।
2. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य जातक को पिता के सुख से वंचित करेगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल जातक की वाणी में कड़वाहट देगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध धन प्राप्ति में रुकावट डालेगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ बृहस्पति मित्रों से, रिश्तेदारों से असहयोग करायेगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र जातक की वाणी विनम्र करायेगा पर जातक की भाषा उतावलपन लिए हुए होगी।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ होने से जातक धनी होगा पर केतु के कारण जातक के 50% धन का अपव्यय व्यर्थ के कार्यों में होगा।

मकरलग्न में केतु की स्थिति तृतीय स्थान में



मकरलग्न वालों के लिए केतु शुभ ग्रह है, क्योंकि लग्नेश शनि की राशि मकर केतु की मूल त्रिकोण राशि मानी गई है। जहां केतु प्रमुदित रहता है। केतु यहां तृतीय स्थान में मीन राशि में स्वगृही है। ऐसा जातक प्रबल पराक्रमी एवं कीर्तिवान् होता है, परन्तु जातक को भाई-बहनों के पक्ष में परेशानी तथा संकट का सामना करना पड़ता है। जातक को मित्र बहुत होते हैं। जनसम्पर्क तेज रहता है।

दृष्टि–तृतीयस्थ केतु की दृष्टि भाग्य भवन (कन्या राशि) पर होगी। जातक भाग्यशाली होता है तथा निरन्तर प्रयत्न से उन्नति पथ की ओर आगे बढ़ता है।

निशानी–भाइयों में परस्पर गुप्त ईर्ष्या की भावना रहेगी। सभी को एक-दूसरे की उन्नति-कीर्ति से जलन रहेगी।

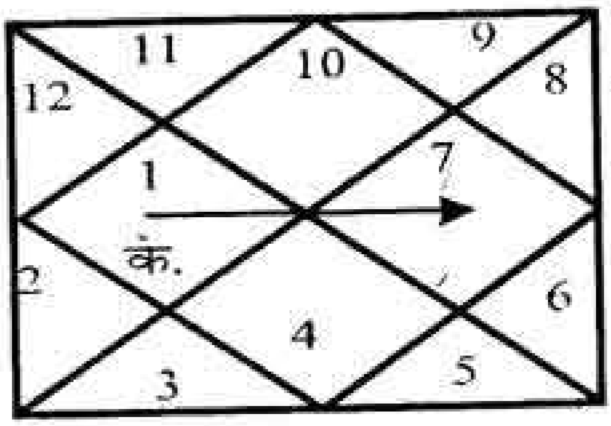
दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा अनुकूल फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ चंद्रमा जातक को कुटुम्ब सुख देगा। जातक पराक्रमी एवं यशस्वी होगा।
2. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य जातक को पराक्रमी तो बनायेगा पर उसे बड़े भाई का सुख नहीं होगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल जातक को पराक्रमी बनायेगा। परन्तु माता का एवं भाइयों का सुख कमजोर होगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध भाई-बहनों में मनोमालिन्यता उत्पन्न करेगा पर दूसरे समाज में कीर्ति होगी।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ बृहस्पति कुटुम्ब सुख देगा। जातक को मित्रों से लाभ होगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ उच्च का शुक्र शुभ फल देगा। जातक पराक्रमी व यशस्वी होगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि धन प्राप्ति के प्रयासों में थोड़ी रुकावटें डालेगा।

मकरलग्न में केतु की स्थिति चतुर्थ स्थान में

मकरलग्न वालों के लिए केतु शुभ ग्रह है, क्योंकि लग्नेश शनि की राशि मकर केतु की मूल त्रिकोण राशि मानी गई है। जहां केतु प्रमुदित रहता है। केतु यहां चतुर्थ



स्थान, मेष (मित्र) राशि में है। ऐसे जातक को जीवन में माता के सुख की कमी रहती है। जातक की माता कष्ट पाती है। घरेलू परेशानियों से जातक का जीवन कष्टपूर्ण रहता है। ऐसा जातक कठिन परिश्रम, साहस व हिम्मत के माध्यम से घर का निजी मकान बनाने में सफल होता है।

दृष्टि–चतुर्थ भावगत केतु की दृष्टि दशम स्थान (तुला राशि) पर रहेगी। जातक को रोजी-रोजगार की प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा।

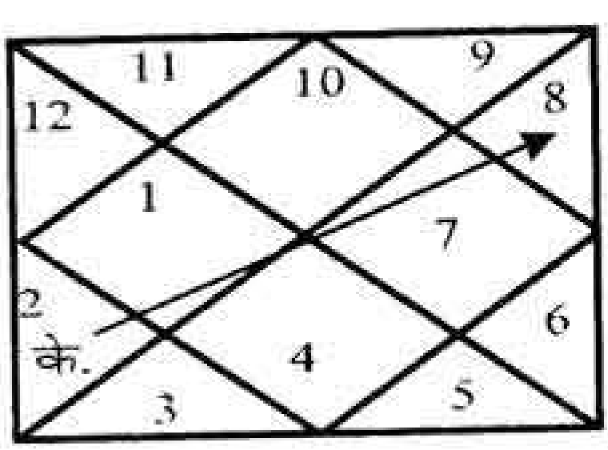
निशानी–जातक को मातृ (जन्म) भूमि का त्याग करना पड़ता है। जातक परदेश जाकर कमाता है।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ चंद्रमा जातक की माता को बीमारी देगा।
2. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य जातक को माता-पिता दोनों के सुख में कमी दिलायेगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल '**रुचक योग**' बनायेगा। जातक बड़ी भूमि-सम्पत्ति का स्वामी होगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध भाग्य में बाधा उत्पन्न करेगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु '**कुलदीपक योग**' व '**केसरी योग**' बनायेगा। जातक पराक्रमी व यशस्वी होगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र '**कुलदीपक योग**' बनायेगा। जातक को राजकीय मान-सम्मान भी मिल सकता है।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ नीच का शनि जातक की माता को बीमारी देगा या अल्प आयु में मृत्यु देगा।

मकरलग्न में केतु की स्थिति पंचम स्थान में



मकरलग्न वालों के लिए केतु शुभ ग्रह है, क्योंकि लग्नेश शनि की राशि मकर केतु की मूल त्रिकोण राशि मानी गई है। जहां केतु प्रमुदित रहता है। केतु यहां पंचम स्थान वृष (नीच) में है। ऐसे जातक को विद्याध्ययन के क्षेत्र में प्रारंभिक कठिनाई

आती है। जातक तीव्र बुद्धि का स्वामी होता है पर उसे शैक्षणिक उपाधि संघर्ष के साथ मिलती है। पुत्र संतान की प्राप्ति भी चिन्ता का विषय बनेगी।

दृष्टि–पंचमस्थ केतु की दृष्टि एकादश भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलत: लाभ में रुकावट रहेगी। व्यापार में संघर्ष की स्थिति रहेगी।

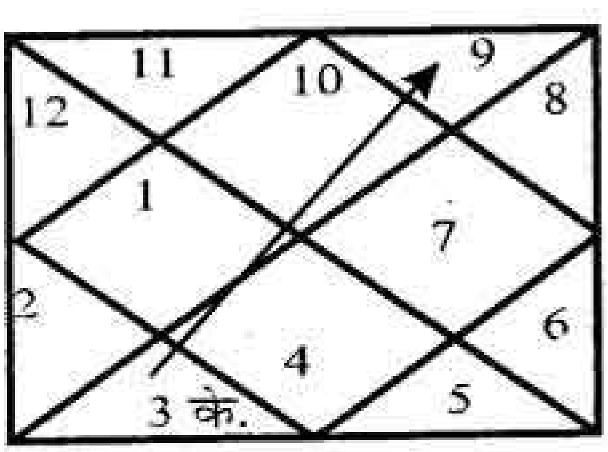
निशानी–जातक की प्रथम कन्या संतति होगी। पुत्र संतान विलम्ब से या धार्मिक अनुष्ठान करने से होगा।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी। शुभ ग्रहों के साहचर्य या दृष्टि से शुभ फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ चंद्रमा जातक को उच्च आध्यात्मिक शिक्षा देगा।
2. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य विद्या में बाधा, संतान सुख में बाधा उत्पन्न करेगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल जातक को पुत्र संतति देगा। जातक तकनीकी शिक्षा में श्रेष्ठता प्राप्त करेगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध प्रारंभिक विद्या प्राप्ति में बाधक है। जातक की पढ़ाई अधूरी छूट जायेगी।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु का योग पुत्र संतति देगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र होने से जातक अत्यधिक विद्यावान् एवं तेजस्वी होगा। जातक को संतान व गृहस्थ का सुख उत्तम मिलेगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि धन की हानि करायेगा।

मकरलग्न में केतु की स्थिति षष्टम स्थान में



मकरलग्न वालों के लिए केतु शुभ ग्रह है, क्योंकि लग्नेश शनि की राशि मकर केतु की मूल त्रिकोण राशि मानी गई है। जहां केतु प्रमुदित रहता है। केतु यहां छठे स्थान में मिथुन (नीच) राशि में है। ऐसे जातक को शत्रु पक्ष से हानि पहुंचती है। गुप्त एवं प्रकट शत्रुओं के कारण जातक कठिनाई में फंस जाता है। ऐसा जातक अपने बुद्धिबल, वाक्चातुर्य एवं हिम्मत से शत्रुओं को परास्त कर देता है। जातक को रोग या शल्य चिकित्सा की संभावना रहती है। जिससे रोग का शमन हो जाता है। शल्य चिकित्सा सफल रहती है।

दृष्टि–छठे भाव में स्थित केतु की दृष्टि व्यय भाव (धनु राशि) पर होगी। ऐसा जातक खर्चीले स्वभाव का तथा परोपकारी होता है।

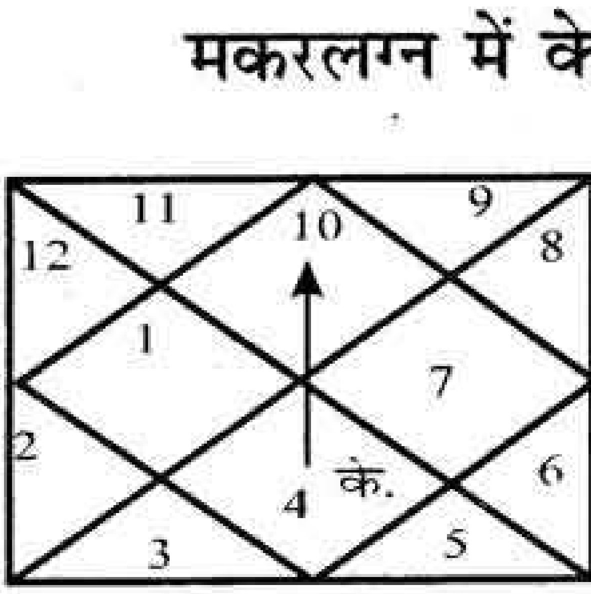
निशानी–ऐसे जातक की अपने ननिहाल पक्ष से नहीं बनती।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा में जातक को कष्टानुभूति होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ चंद्रमा '**विवाहभंग योग**' बनाता है। ऐसे जातक का विवाह विलम्ब से होगा।
2. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य '**विपरीत राजयोग**' बनायेगा। जातक धनी होगा पर पिता का सुख कमजोर होगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल '**सुखहीन योग**' एवं '**लाभभंग योग**' बनायेगा। जातक को भाग्योदय हेतु काफी परेशानी उठानी पड़ेगी।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध होने से हर्षनामक '**विपरीत राजयोग**' बनेगा। जातक धनी होगा एवं शत्रुओं का नाश करने में पूर्ण सक्षम होगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु '**पराक्रमभंग योग**' बनाता है। विपरीत राजयोग के कारण जातक धनी तो होगा पर यशस्वी नहीं होगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र '**संतानहीन**' व '**राजभंग योग**' बनायेगा। जातक को गुप्त शत्रु परेशान करेगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि '**लग्नभंग योग**' एवं '**धनहीन योग**' बनायेगा। जातक को परिश्रम का यथेष्ट लाभ नहीं मिलेगा।

मकरलग्न में केतु की स्थिति सप्तम स्थान में



मकरलग्न वालों के लिए केतु शुभ ग्रह है, क्योंकि लग्नेश शनि की राशि मकर केतु की मूल त्रिकोण राशि मानी गई है। जहां केतु प्रमुदित रहता है। केतु यहां सप्तम स्थान में कर्क (शत्रु) राशि में है। ऐसे जातक को स्त्री-पक्ष से कष्ट, संकट, कलह, विवाद की संभावना रहती है। गृहस्थ जीवन में परेशनियां आती रहती हैं। व्यापार-व्यवसाय एवं भागीदारी के कार्यों में भी रुकावटें आयेंगी। जातक अपने बुद्धि बल, आत्मविश्वास एवं हिम्मत से सभी परेशानियों को समाप्त कर, सफलता प्राप्त करेगा।

दृष्टि–सप्तमस्थ केतु की दृष्टि लग्न स्थान (मकर राशि) पर रहेगी। फलतः जातक एक साथ अनेक कार्यों को करने में रुचि रखेगा।

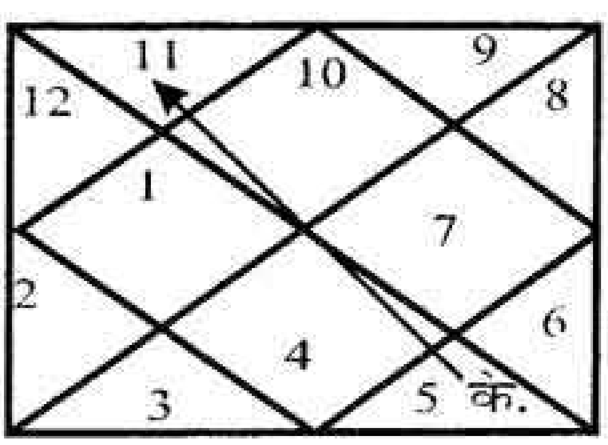
निशानी–ऐसे जातक के व्यापार-व्यवसाय में निरन्तर बदलाव आते रहते हैं।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ चंद्रमा जातक को सुन्दर पत्नी देगा पर पति-पत्नी में खटपट होती रहेगी।
2. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य विवाह विच्छेद (तलाक) करायेगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ नीच का मंगल विवाह सुख में बाधक होता है।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध '**द्विभार्या योग**' कराता है।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ उच्च का गुरु पतिव्रता भार्या देगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र जातक को कामी बनायेगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ '**लग्नाधिपति योग**' बनायेगा। जातक के परिश्रम सार्थक होंगे।

मकरलग्न में केतु की स्थिति अष्टम स्थान में



मकरलग्न वालों के लिए केतु शुभ ग्रह है, क्योंकि लग्नेश शनि की राशि मकर केतु की मूल त्रिकोण राशि मानी गई है। जहां केतु प्रमुदित रहता है। केतु यहां अष्टम स्थान में सिंह (शत्रु) राशि में है। ऐसे जातक को अपनी आयु के संबंध में मृत्यु तुल्य कष्टों का सामना करना पड़ेगा। जातक के पेट में विकार रहता है। गुप्त रोग की भी संभावना बनी रहती है। आजीविका चलाने हेतु जातक को कठिन परिश्रम का सामना करना पड़ेगा।

दृष्टि–अष्टम भावगत केतु की दृष्टि धन स्थान (कुंभ राशि) पर होगी। फलतः धन को लेकर परेशानियां आयेंगी। जातक को आर्थिक विषमताओं का सामना करना पड़ेगा।

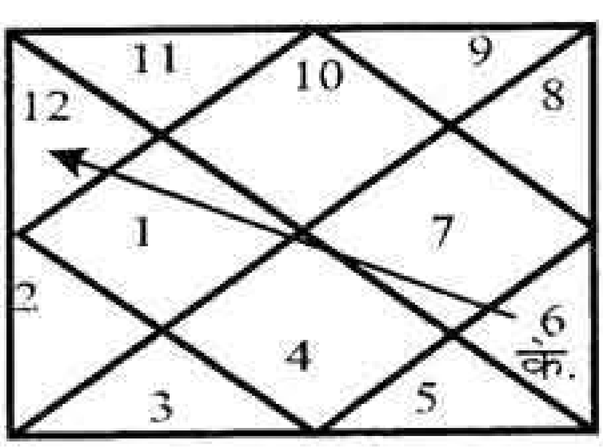
निशानी–जातक की वाणी कर्कश व कठोर होगी।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा कष्टदायक रहेगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ चंद्रमा '**विवाहभंग योग**' बनाता है। जातक के विवाह में विलम्ब होगा।
2. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य '**विपरीत राजयोग**' बनायेगा। जातक धनी तो होगा पर पिता का सुख कमजोर होगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल '**सुखहीन योग**' एवं '**लाभभंग योग**' बनाता है। जातक को माता का सुख कमजोर होगा। भूमि व भवन को लेकर विवाद होगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध '**भाग्य बाधा योग**' बनाता है। जातक के भाग्योदय में दिक्कतें आयेगी।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ बृहस्पति जातक को मित्रों से हानि करायेगा। '**पराक्रम भंगयोग**' के कारण जातक को अपयश मिलेगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र '**संतानहीन योग**' एवं '**राजभंग योग**' बनाता है। जातक को गुप्त बीमारी होगी।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ '**लग्नभंग योग**' एवं '**धनहीन योग**' बनायेगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिल पायेगा।

मकरलग्न में केतु की स्थिति नवम स्थान में



मकरलग्न वालों के लिए केतु शुभ ग्रह है, क्योंकि लग्नेश शनि की राशि मकर केतु की मूल त्रिकोण राशि मानी गई है। जहां केतु प्रमुदित रहता है। केतु यहां नवम स्थान में कन्या (नीच) राशि में है। ऐसे जातक को भाग्योदय में कठिनाइयां महसूस होगी। जातक को उन्नति मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए संकटों का सामना करना पड़ेगा। ऐसा जातक अर्ध-नास्तिक होगा। फिर भी जातक यशस्वी होगा।

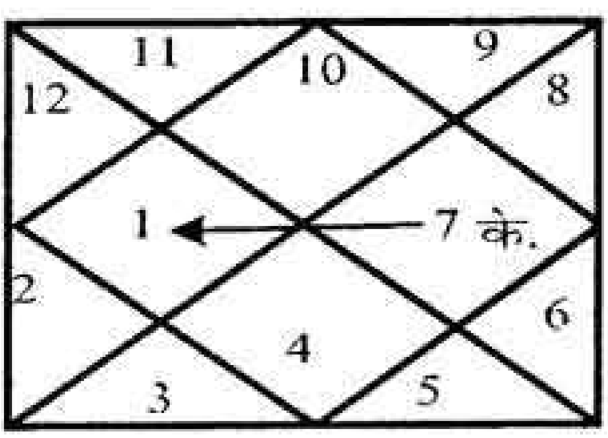
दृष्टि–नवमस्थ केतु की दृष्टि पराक्रम स्थान (मीन राशि) पर होगी। जातक पराक्रमी होगा। भाई-बहनों से कम पटेगी।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा में भाग्योदय होगा। उत्साहवर्धक कार्य होंगे। शुभ ग्रहों के साथ होने से केतु शुभ फल देगा। पाप ग्रहों के संग होने से अशुभ फल देगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ चंद्रमा जातक का भाग्योदय विवाह के बाद करायेगा।
2. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य जातक को पिता की सम्पत्ति से वंचित करेगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल जातक को धनवान एवं गांव का मुखिया बनायेगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध जातक को राजा के समान पराक्रमी बनायेगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ बृहस्पति जातक को परिजनों व भाइयों का सुख देगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र जातक को विभिन्न ऐश्वर्य व राजसुख देगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि जातक को धनी बनायेगा, पर धन बड़े संघर्ष के बाद मिलेगा।

मकरलग्न में केतु की स्थिति दशम स्थान में



मकरलग्न वालों के लिए केतु शुभ ग्रह है, क्योंकि लग्नेश शनि की राशि मकर केतु की मूल त्रिकोण राशि मानी गई है। जहां केतु प्रमुदित रहता है। केतु यहां दशम स्थान में तुला (मित्र) राशि में है। ऐसे जातक को पिता पक्ष, राजपक्ष से थोड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। कभी-कभी अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए बदनामी का सामना करना पड़ेगा।

दृष्टि–दशमस्थ केतु की दृष्टि चतुर्थ भाव (मेष राशि) पर होगी। जातक को माता का सुख नहीं होगा। वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।

निशानी–जीवन में व्यवसाय में बराबर परिवर्तन आते रहेगे।

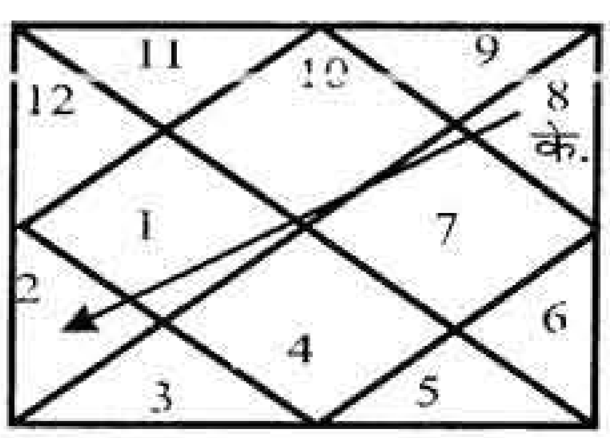
दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा में संघर्ष की स्थिति रहेगी। राजपक्ष से भी कष्ट का सामना करना पड़ेगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ चंद्रमा जातक के वैवाहिक सुख में बाधक है।
2. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य नीच का होगा। जातक को पिता का सुख कमजोर होगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल जातक को भूमि लाभ देगा पर भूमि विवादित होगी।

4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध भाग्योदय में रुकावट एवं व्यापार में बदलाव लाता रहेगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ बृहस्पति '**कुलदीपक**' व '**केसरी योग**' बनाता है। जातक पराक्रमी होगा। उसकी प्रतिष्ठा होगी।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र 'मालव्य योग' व **पद्मसिंहासन योग**' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी व वैभवशाली होगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि '**शश योग**' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी व शक्तिशाली होगा।

मकरलग्न में केतु की स्थिति एकादश स्थान में



मकरलग्न वालों के लिए केतु शुभ ग्रह है, क्योंकि लग्नेश शनि की राशि मकर केतु की मूल त्रिकोण राशि मानी गई है। जहां केतु प्रमुदित रहता है। केतु यहां एकादश स्थान में वृश्चिक राशि में उच्च का है। ऐसे जातक को व्यापार-व्यवसाय में संघर्ष के बाद लाभ मिलता है। बड़े भाई का सुख होगा। जातक के आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होगी। जातक यशस्वी होगा।

दृष्टि–एकादश भावगत केतु की दृष्टि पंचम भाव (वृष राशि) पर होगी। फलत: विद्या में प्रारंभिक बाधा के बाद उच्च शैक्षणिक उपाधि मिलेगी।

निशानी–ऐसा जातक विपरीत परिस्थितियों से नहीं घबराता। अंत में सर्वत्र सफलता मिलती है।

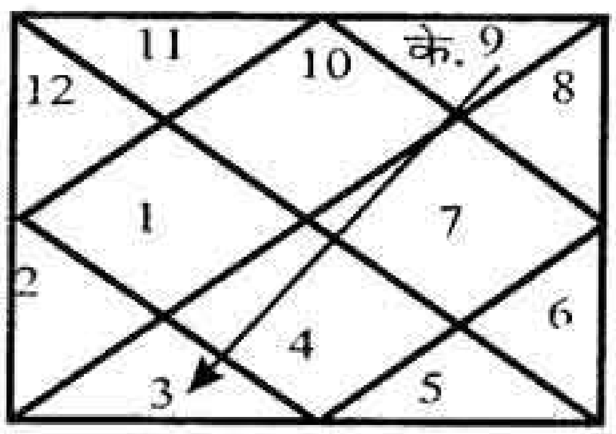
दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फलकारी साबित होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ चंद्रमा नीच का होगा। ऐसे जातक के विवाह सुख में बाधा आयेगी।
2. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य पिता के लिए घातक है। विद्या में बाधा (रुकावट) आयेगी।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल स्वगृही जातक को भूमि, भवन का लाभ देगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध जातक के भाग्य में हल्की-दिक्कतें पैदा करेगा।

5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ बृहस्पति बड़े भाई के सुख में बाधक है।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र विद्या में लाभ एवं जातक को व्यापार से लाभ दिलायेगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि जातक को परिश्रम का लाभ दिलायेगा।

मकरलग्न में केतु की स्थिति द्वादश भाव में



मकरलग्न वालों के लिए केतु शुभ ग्रह है, क्योंकि लग्नेश शनि की राशि मकर केतु की मूल त्रिकोण राशि मानी गई है। जहां केतु प्रमुदित रहता है। केतु यहां द्वादश स्थान में धनु उच्च राशि का है। जातक यात्राओं द्वारा धन अर्जित करेगा। जातक को विदेशी व्यापार (Export-Import) से लाभ होगा। ऐसा जातक जन्म भूमि से दूरस्थ प्रदेशों में जाकर बसता है।

दृष्टि–द्वादशस्थ केतु की दृष्टि षष्टम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। फलत जातक शत्रुओं का नाश करने में पूर्णत: सक्षम होगा।

निशानी–जातक व्यसनी होगा। नींद कम आयेगी।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ चंद्रमा '**विवाहभंग योग**' कराता है। जातक का विवाह विलम्ब से होगा।
2. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य '**विपरीत राजयोग**' के कारण जातक को धनी तो बनायेगा। पर पिता का सुख प्राप्त नहीं होगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल जातक **सुखहीन योग** एवं **लाभभंग योग** बनायेगा। जातक के गृहस्थ सुख में कमी रहेगी।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध '**भाग्यभंग योग**' बनायेगा। जातक को भाग्योदय हेतु संघर्ष करना पड़ेगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ बृहस्पति '**पराक्रमभंग योग**' बनायेगा। जातक '**विपरीत राजयोग**' के कारण धनी तो होगा पर यशस्वी नहीं होगा।

6. **केतु+शुक्र**—केतु के साथ शुक्र '**संतानहीन योग**' व '**राजभंग योग**' बनायेगा। जातक को गुप्त रोग होगे।

7. **केतु+शनि**—केतु के साथ शनि '**लग्नभंग योग**' व '**धनहीन योग**' बनायेगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।

❑❑❑

शनि स्तोत्रम्

पदच्छेद-एवम्-सन्धिच्छेद सहित

नमः, कृष्णाय, नीलाय, शिति कण्ठ निभाय च।
नमः, कालाग्नि, रूपाय, कृत-अन्ताय च वै नमः।।
नमः, निर्मांस देहाय, दीर्घ, श्मश्रु, जटाय च।
नमः, विशाल नेत्राय, शुष्क, उदर, भयाकृते।।
नमः पुष्कल गात्राय, स्थूल रोम्णे अथ वै नमः।।
नमः, दीर्घाय, शुष्काय, काल दंष्ट्र, नमः अस्तु ते।।
नमस्ते कोटराक्षाय, दुर्निरीक्ष्याय वै नमः।
नमः, घोराय, रौद्राय, भीषणाय कपालिने।।
नमस्ते सर्वभक्षाय वलीमुख नमः अस्तु ते।
सूर्य पुत्र, नमस्ते, अस्तु, भास्करे, अभयदाय च।।
अधो दृष्टे! नमस्ते अस्तु संवर्तक नमः अस्तु ते।
नमो मन्द गते तुभ्यम्, निः त्रिंशाय् नमः अस्तु ते।।
तपसा, दग्ध देहाय, नित्यं योग रताय च।
नमः नित्यं, क्षुधार्ताय, अतृप्ताय च वै नमः।।
ज्ञान चक्षुः नमस्ते अस्तु, कश्यप-आत्मज सूनवे।
तुष्टो ददासि वै राज्यं, रूष्टो हरसि तत् क्षणात्।।
देवासुर मनुष्याः च सिद्ध विद्याधरो-रगाः।
त्वया विलोकिताः सर्वे नाशम् यान्ति समूलतः।।

प्रसाद कुरू मे देव वराहो-अहम्-उपागत:।
एवम् स्तुत: तदा सौरि: ग्रहराज: महाबल:।।

—पद्म पुराण

नोट—पद्म पुराणानुसार यह महाराजा दशरथ कृत सिद्ध शनि स्तोत्र है। इसका नित्य 108 पाठ करने से शनि संबधी सभी पीड़ायें समाप्त हो जाती हैं तथा पाठ कर्ता धन-धान्य, समृद्धि, वैभव से पूर्ण हो जाता है तथा उसके सारे बिगड़े कार्य स्वत: बनने लग जाते हैं।

अथ शनि मंत्र

शनि ग्रह से संबंधित पाठ, पूजा आदि के लिए स्तोत्र, मंत्र तथा गायत्री आदि पाठकों की सुविधा के लिए यहां दिये जा रहे हैं। जो काफी लाभकारी सिद्ध होंगे। इनका नित्य 108 पाठ करने से जातक को चमत्कारी लाभ प्राप्त होगा।

विनियोग—शन्नो देवीति मंत्रस्य सिंधुद्वीप ऋषि:, गायत्रीछन्द:, आपो देवता, शनिप्रीत्यर्थे जपे विनियोग:।

नीचे कोष्टकों में लिखे गये अंगों को उंगलियों से छुएं।

अथ देहांगन्यास—शनो शिरसि (सिर)। **देवी:** ललाटे (माथा)। **अभिष्टय** मुखे (मुख)। आपो कण्ठे (कण्ठ)। **भवन्तु** हृदये (हृदय)। **पीतये** नाभौ (नाभि) **शं** कट्याम् (कमर)। **यो:** ऊर्वो (छाती)। **अभि** जान्वो: (घुटने)। **स्रवन्तु** गुल्फयो: (गुल्फ)। **न:** पादयो: (पैर)।

अथ करन्यास—शन्नो देवी: अंगुष्ठाभ्यां नम:। **अभिष्टये** तर्ज्जनीभ्यां नम:। आपो भवन्तु मध्यमाभ्यां नम:। **पीतये** अनामिकाभ्यां नम:। **शंय्योरभि** कनिष्ठिकाभ्यां नम: **स्रवन्तु** न: करतलकरपृष्ठाभ्यां नम:।

अथ हृदयादिन्यास—शन्नो देवी: हृदयाय नम:। **अभिष्टये** शिरसे स्वाहा। **आपो भवन्तु** शिखायै वषट्। **पीतये** कवचाय हूँ (दोनों कंधे) **शंय्योरभि** नेत्रत्रयाय वौषट्। **स्रवन्तु** न: अस्त्राय फट्।

ध्यानम्— **नीलाम्बर शूलधर: किरीटी गृध्रस्थितस्त्रासकरो धनुष्मान्।**
चतुर्भज: सूर्येसुत: प्रशान्त: सदाऽस्तु महा वरदोऽल्पगामी।।

शनिगायत्री—ॐ कृष्णांगाय विद्महे रविपुत्राय धीमाहि तन्न: सौरि: प्रचोदयात्।

वेदमंत्र—ॐ प्राँ प्रीं प्रौं स: भूर्भुव: स्व: ॐ **शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये शंय्योरभिस्रवन्तु न:**। ॐ स्व: भुव: भू: प्रौं प्रीं प्राँ ॐ शनैश्चराय नम:।

जपमंत्र—ॐ प्राँ प्रीं प्रौं स: शनैश्चराय नम: नित्य जप 23000 प्रतिदिन।

शनि पीड़ा निवारणार्थं यंत्र

यदि किसी व्यक्ति की जन्मपत्री में शनि नीच का, अस्त का, नीचास्त का, मूल-त्रिकोण और केन्द्र में पीड़ा कारक पड़ा हो तो जातक को चाहिये कि शनि पीड़ा शमनार्थ 3 रत्ती या 10 रत्ती का निर्दोष नीलम नग, 10 माशे सोने, या स्टील या काले घोड़े के अगले पांव की दाहिनी नाल की अंगूठी में बनवाकर अपने दाहिने हाथ की मध्यमा उंगली में सदैव पहनें। निम्नांकित यंत्र स्टैन्लैस स्टील में अंकित कराकर उस पर शनिदेव की लौह प्रतिमा स्थापित करें और शनिवार को शुभ नक्षत्र, शुभ मुहूर्त में गंगा जल और काली गाय के कच्चे दूध से उसको स्नान करायें।

शनि यंत्र

12	7	14
13	11	9
8	15	10

शनिवार का व्रत अवश्य रखें और रात्रि को इसका जाप प्रारम्भ करें। हवन के लिये शमी को समिधा होनी चाहिए जप के समय धूप, दीप नैवेद्य आदि का प्रबन्ध होना चाहिए। जाप शुक्ल पक्ष में ही आरम्भ करना चाहिए। नवरात्रों का किया गया अनुष्ठान अधिक शुभ फलदायक होता है। उस समय मनुष्य को पूर्ण ब्रह्मचर्य, भूमि शयन तथा उपवासादि का पूर्ण ध्यान रखना चाहिए।

शनि कवचम्

नीलाम्बरो नीलवपुः किरीटो गृध्रस्थितस्रासकरो धनुष्मान्।
चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रसन्नः सदा मम स्याद् वरदः प्रशान्तः॥1॥
शृणुध्वमृषयः सर्वे शनिपीड़ाहरं महत्।
कवचं शनिराजस्य सौरेरिदमनुत्तमम्॥2॥
कवच देवतावासं वज्रपञ्जरसंज्ञकम्।
शनैश्चरप्रीतिकरं सर्वसौभाग्यदायकम्॥3॥
ॐ श्रीं शनैश्चरः पातु भालं मे सूर्यनन्दनः।
नेत्रे छायात्मजः पातु पातु कर्णौं यमानुजः॥4॥
नासां वैवस्वतः पातु मुखं मे भास्करः सदा।
स्निग्धकण्ठश्च मे कण्ठं भुजौ पातु महाभुजः॥5॥
स्कन्धौ पातु शनिश्चैव करौ पातु शुभप्रदः।
वक्षः पातु यमभ्राता कुक्षिं पात्वसितस्तथा॥6॥
नाभिं ग्रहपतिः पातु मन्दः पातु कटिं तथा।
ऊरू ममान्तकः पातु यमो जानुयुगं तथा॥7॥

पादौ मन्दगतिः पातु सर्वांगं पातु पिप्पलः।
अङ्गोपाङ्गानि सर्वाणि रक्षेन् मे सूर्यनन्दनः।।8।।
इत्येतत् कवचं दिव्यं पठेत् सूर्यसुतस्य यः।
न तस्य जायते पीड़ा प्रीतो भवति सूर्यजः।।9।।
व्ययजन्मद्वितीयस्थो मृत्युस्थानगतोऽपि वार।
कलत्रस्थो गतो वाऽपि, सुपीतस्तु सदा शनिः।।10।।
अष्टमस्थे सूर्यसुते व्यये जन्मद्वितीयगे।
कवचं पठते नित्यं न पीड़ा जायते कचित्।।11।।
इत्येतत् कवचं दिव्यं सौरेर्यन्निर्मितं पुरा।
द्वादशाष्टम-जन्मस्थ-दोषान्नाशयते सदा।
जन्मलग्नस्थितान् दोषान् सर्वान्नाशयते प्रभुः।।12।।

शनि स्तुति

सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः।
मन्दचारः प्रसन्नात्मा पीड़ां दहतु मे शनिः।।

विनियोग

शन्नोदेवीइतिमंत्रस्य, दध्यङ्गाथर्वण ऋषिः आपो देवता।
गायत्री छन्दः। शनिमंत्रजपे विनियोग–

सजीव वैदिक मंत्र–ॐ खाँ खीं खौं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ शन्नोदेवीर-भीष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्रवन्तु नः। ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः खौं, खीं खाँ शैनश्चराय नमः।

एकाक्षरी बीज मंत्र–ॐ शं, शनैश्चराय नमः

तांत्रिक शनि मंत्र–ॐ प्राँ, प्रीं प्रौं सः शनये नमः

जप संख्या–23000, तेइस सहस्र (तेइस हजार)

शनि अनिष्ट फल शमनार्थ दानपदार्थाः

शनि प्रति दान–नीलम, सोना, लोहा, उर्द, कुल्थ, तेल, सरसों, काला कपड़ा, काले फूल, कस्तूरी, काली सवत्सा गाय, काली भैंस, काले जूते, कृष्ण फल।

शनि दान के समय उपर्युक्त वस्तुओं का भार कम से कम सवा तीन रत्ती होना चाहिये और अधिक से अधिक के लिये साढ़े तीन, सात, दस रत्ती, तोला, सेर आदि जितना भी सामर्थ्य हो दान वित्त समान कर देना चाहिये अपनी शक्ति सामर्थ्य से अधिक दिया हुआ दान किया हुआ काम दुखदायी ही रहता है, इसमें तुला दान का बहुत ही महात्मय लिखा है साथ ही तिलपात्र घृत छाया दान भी अवश्य करने चाहिये। यज्ञान्त में ब्राह्मण भोज शक्ति भर अवश्य करना चाहिये। एक लौह प्रतिमा शनि दान में अवश्य ही करनी चाहिये। शनि शक्ति का प्रतीक है। दीर्घसूत्री तथा उदासीन है इसलिये इसका प्रसन्न करने के लिए अवश्य ही प्रयत्न करना चाहिए, जीव हिंसा निषेध है। बीछू जड़ी पास रखना लाभदायक होता है। बीछू पौधे की जड़ें (शिशणा) के पास रखकर उसकी पूजा करने से तथा धारण करने से शनि का दूषित फल शान्त रहता है।

शनि मंगल स्तोत्र

मन्दः कृष्णनिभस्तु पश्चिममुखः सौराष्ट्रकः काश्यपः,
स्वामी नक्रभकुम्भयोर्बुध-सितौ मित्रे समश्चाङ्गिराः।।
स्थान पश्चिमदिक् प्रजापति-यमौ दैवौ धनुष्यासनः,
षटत्रिस्थः शुभकृच्छनी रविसुतः कुर्यात् सदा मंगलम्।।

❑❑❑

शनिवार व्रत कथा

शनिदेव साधना तथा पूजा अर्चना से सहज की प्रसन्न होते हैं तथा अपने भक्तों की सर्वमनोकामनाएं पूर्ण करते हैं। शनिदेव जब किसी पर क्रोधित होते हैं तो उसका सब कुछ नष्ट हो जाता है किन्तु यदि किसी पर शनिदेव की कृपा हो जाए तो वह भिखारी से राजा हो जाता है। शनिवार का व्रत शनिदेव को प्रसन्न करने व मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए किया जाता है।

शनि का तांत्रिक मंत्र–ॐ शं शनैश्चराय नमः।

विधि विधान–शनिवार के पीपल के नीचे अथवा भैरव मंदिर में बैठकर पूजन करना चाहिए। पूजन के लिए शनिदेव की टिन की मूर्ति रखकर, काली वस्तुओं, सरसों का तेल, मिट्‌टी का दीपक तथा लोहे के पाशों का प्रयोग करें। तांत्रिक मंत्र द्वारा शनिदेव का पूजन करें, व्रत कथा पढ़ें, तत्पश्चात् पीपल को अर्घ्य दें। भोजन एक ही समय करें तथा उड़द और तिल का प्रयोग अवश्य करें।

व्रत कथा–एक समय सूर्य चंद्रमा, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु एवं केतु आदि ग्रहों में परस्पर विवाद हो गया कि हम सब में बड़ा कौन है। सभी ग्रह अपने आपको बड़ा कहते हैं।

जब काफी समय तक निर्णय न हो सका तो सब झगड़ते हुए इंद्रराज के पास गए और कहने लगे कि आप देवताओं के राजा हैं इसलिये न्याय करके ये बताइये कि हम नव ग्रहों में कौन बड़ा है। देवराज इन्द्र ग्रहों का यह प्रश्न सुनकर भयभीत हो गए तथा कहने लगे कि मुझमें इतना सामर्थ्य नहीं कि मैं किसी को छोटा बतला सकूं।

इस समय पृथ्वी पर राजा विक्रमादित्य हैं। वे सबकी समस्याओं का समाधान अत्यंत बुद्धिमानी से करते हैं। अत: आप सभी उनके पास जाएं। राजा विक्रमादित्य आपके विवाद का समाधान करेंगे।

सभी ग्रह देवता भूलोक से चलकर विक्रमादित्य की सभा में पंहुचे तथा उन्होंने अपना प्रश्न राजा के सामने रखा। राजा विक्रमादित्य ग्रहों की बात सुनकर चिंतित हो

गए तथा सोचने लगे कि मैं अपने मुख से किस ग्रह को छोटा अथवा बड़ा बताऊं। जिसे छोटा बताऊंगा वही क्रोध करेगा। उसका विवाद निपटाने के लिये उन्होंने एक उपाय सोचा। राजा ने सोना, चांदी, कांसा, पीतल, सीसा, रांगा, जस्ता, अभ्रक तथा लोहा आदि नौ धातुओं के नौ आसन बनवाए तथा सभी आसनों को उनके मूल्य के अनुसार बिछाया गया।

इसके पश्चात् राजा ने नवग्रहों से कहा आप सब अपना-अपना आसन ग्रहण करें। जिसका आसन सबसे आगे वह सबसे बड़ा तथा जिसका आसन सबसे पीछे उसे सबसे छोटा जानिये। क्योंकि लोहा सबसे पीछे तथा शनिदेव का आसन था इसलिये शनिदेव ने सोचा कि राजा ने मुझे सबसे छोटा बना दिया है।

राजा के इस निर्णय पर शनिदेव को बहुत क्रोध आया। उन्होंने कहा कि राजा तू मेरे पराक्रम को नहीं जानता। सूर्य एक राशि पर एक महीना, चंद्रमा सवा दो दिन दो महीना, मंगल डेढ़ महीना। बुध और शुक्र एक महीना और बृहस्पति तेरह महीने विचरण करते हैं परन्तु मैं एक राशि पर ढाई वर्ष से लेकर साढ़े सात वर्ष तक रहता हूं। बड़े-बड़े देवताओं को भी मैंने भीषण दु:ख दिया है। सुनो राजन, रामचंद्र जी को साढ़े-साती आई तो उन्हें वनवास हो गया। रावण पर आई तो राम ने वानरों सहित उसकी लंका पर चढ़ाई कर उसके कुल का सर्वनाश कर दिया। हे राजन, तुमने मुझे अपमानित किया है। अत: अब तुम सावधान रहना।

राजा विक्रमादित्य ने कहा-जो कुछ भाग्य में होगा देखा जाएगा। ऐसा सुनकर सभी ग्रह प्रसन्नतापूर्वक अपने-अपने स्थान को चले गए किंतु शनिदेव जी अत्यंत क्रोध में वहां से सिधारे।

कुछ काल व्यतीत होने पर जब विक्रमादित्य पर साढ़े साती की दशा आई तो शनिदेव घोड़ों के सौदागर बनकर सुन्दर घोड़ों के साथ राजा विक्रमादित्य की राजधानी में आए। जब राजा ने घोड़ों का सौदागर के आने की खबर सुनी तो उन्होंने अपने अश्वपाल को अच्छी-अच्छी नस्ल के घोड़े खरीदने की सलाह दी।

अश्वपाल इतने अच्छे घोड़े देखकर तथा उनका मूल्य सुनकर चकित हो गया तथा तुरन्त ही राजा को सूचना दी। राजा विक्रमादित्य ने उन घोड़ों को देखा तथा उन घोड़ों में से एक अच्छी नस्ल के घोड़े को चुनकर सवारी के लिए उस पर चढ़े।

राजा के पीठ पर चढ़ते ही घोड़ा तेजी से भागा। घोड़ा बहुत दूर एक घने जंगल में जाकर राजा को छोड़कर अंतर्ध्यान हो गया। इसके पश्चात् राजा विक्रमादित्य अकेले जंगल में भटकते फिरते रहे। भूख प्यास से व्याकुल राजा ने एक ग्वाले को देखा। ग्वाले ने राजा को पानी पिलाया। राजा ने प्रसन्न होकर अपनी अंगुली से एक अंगूठी निकालकर ग्वाले को दी तथा स्वयं शहर की ओर चल दिये। राजा शहर में

जाकर एक सेठ की दुकान पर जाकर बैठ गए तथा उन्होंने उसे अपना नाम वीका बताया।

सेठ ने उसे एक कुलीन व्यक्ति समझकर जलादि पिलाया। भाग्यवश उस दिन सेठ की दुकान पर बहुत बिक्री हुई। सेठ उसे भाग्यवान पुरुष समझकर अपने घर भोजन के लिए ले गया।

भोजन करते समय राजा ने एक आश्चर्यजनक घटना देखी, जिस खूंटी पर हार लटक रहा था वह खूंटी हार को निगल रही थी। भोजन के पश्चात् जब सेठ कमरे में आया तो उसे खूंटी पर हार नहीं मिला। उसने सोचा कि वीका के अतिरिक्त कमरे में कोई नहीं आया अतः उसने ही हार चोरी किया है। परन्तु वीका ने हार की चोरी से मना कर दिया। तब कुछ व्यक्ति उसे पकड़ कर नगर फौजदार के पास ले गए।

फौजदार ने उसे राजा के सामने उपस्थित किया तथा कहा कि यह व्यक्ति भला प्रतीत होता है किंतु सेठ इस पर चोरी का आरोप लगा रहा है। राजा ने आज्ञा दी कि इसके हाथ-पैर कटवाकर चौरंगिया किया जाए।

राजा की आज्ञा का तुरन्त पालन हुआ तथा वीका के हाथ-पैर काट दिये गए। कुछ काल व्यतीत होने पर एक तेली ने राजा को देखा तथा दयावश वह उसे अपने घर ले गया। तेली ने उसे कोल्हू पर बैठा दिया।

वीका उस पर बैठा हुआ अपनी जबान से बैलों को हांकता रहता था। इस काल में राजा की शनि की दशा समाप्त हो गई। वर्षा ऋतु के समय चौरंगिया राजा विक्रमादित्य मल्हार राग गाने लगा। यह राग सुनकर शहर के राजा की प्रिय पुत्री मनभावनी उसकी वाणी पर मुग्ध हो गई।

राजकन्या ने अपनी दासी को मल्हार राग गाने वाले की खबर लाने के लिये भेज दिया। दासी सारे शहर में घूमती रही। जब वह तेली के घर के पास से निकली तो उसने देखा कि राजा चौरंगिया मल्हार राग गा रहा है।

दासी ने लौटकर राजकुमारी को सब वृतान्त कह सुनाया। उसी समय राजकुमारी मनभावनी ने अपने मन में यह प्रण कर लिया कि चाहे कुछ भी हो, मैं इसी चौरंगिया के साथ विवाह करूंगी। प्रातःकाल होते ही दासी ने जब राजकुमारी मनभावनी को जगाया तो वह अनशन व्रत लेकर बिस्तर पर पड़ी रही। राजकुमारी की अनशन की बात दासी ने जाकर रानी को बताई। रानी ऐसा सुनकर राजकुमारी के पास आई और पुत्री से कारण पूछा। राजकुमारी बोली-माता मैंने यह प्रण लिया है कि तेली के घर जो चौरंगिया है मैं उससे विवाह करूंगी। माता ने सुनकर आश्चर्य व्यक्त किया और कहा कि क्या तू पागल हुई है? तेरा विवाह तो किसी बड़े राजा से होगा। राजकुमारी

बोली–हे माता, ये मेरा अटल प्रण है जिसे मैं नहीं तोड़ूंगी। चिंतित हो राजा ने यह बात रानी को बताई। राजा ने पुत्री को समझाया–हे पुत्री, ये कैसी जिद है तुम्हारी? तुम्हारा विवाह तो किसी बड़े राजा से होगा। तुम्हें ऐसी बात नहीं सोचनी चाहिए। परन्तु राजकुमारी भी अपने प्रण पर अडिग थी। उसने कहा–पिताजी प्राण दे सकती हूं पर अपना प्रण नहीं तोड़ सकती। यह सुनकर राजा ने कहा–यदि तेरे भाग्य में ऐसा लिखा है तो यही सही। राजा ने तेली को बुलाकर कहा कि तेरे घर जो चौरंगिया रहता है मैं अपनी पुत्री का विवाह उसके साथ करूंगा।

तेली न आश्चर्य से कहा–महाराज आप ये क्या कह रहे हैं? कहां राजकुमारी और कहां एक चौरंगिया। राजा ने कहा–ये सब भाग्य का खेल है। तुम जाकर विवाह की तैयारियां करो। राजा ने शुभ मुहूर्त देखकर राजकुमारी का विवाह चौरंगिया के साथ कर दिया। रात को जब विक्रमादित्य महल में सो रहे थे तो शनिदेव ने विक्रमादित्य को स्वप्न में दर्शन दिए और कहा–हे राजा! मुझे छोटा बतलाकर तुमने कितने कष्ट उठाए है। राजा ने शनिदेव से कहा–प्रभु मेरे अपराध के लिए मुझे क्षमा कर दो। शनिदेव राजा से प्रसन्न हो गए तथा उन्होंने राजा को क्षमा कर दिया और राजा को उसके हाथ-पैर वापिस कर दिये।

तब राजा ने हाथ जोड़कर शनिदेव से विनती की–हे शनिदेव! आपसे विनती है मेरी कि आपने जैसे कष्ट मुझे दिए ऐसे किसी को कभी न देना।

शनिदेव ने प्रसन्न होकर कहा–राजन तुम्हारी विनती मुझे स्वीकार है। जो व्यक्ति नित्य प्रति मेरा ध्यान करेगा, मेरी कथा सुनेगा, कहेगा उसे मेरी दशा में कभी कोई दु:ख नहीं होगा तथा जो भी मनुष्य प्रतिदिन मेरा ध्यान कर चीटियों को आटा डालेगा उसके सभी मनोरथ पूर्ण होंगे। यह कहकर शनिदेव अन्तर्ध्यान हो गए।

सवेरे जब राजकुमारी मनभावानी की आंख खुली तो उसने चौरंगिया को हाथ-पैर सहित देखा तो उसके आश्चर्य की सीमा न रही। उसने विक्रमादित्य को जगाया और उसके इसका कारण पूछा। तब राजा ने अपना सारा वृतांत राजकुमारी को कह सुनाया।

यह सुनकर राजकुमारी अति प्रसन्न हुई। प्रात: काल मनभावनी की सखियों ने पिछली रात्रि का हाल-चाल पूछा तो उसने रात्रि की घटना का तथा उसके हाथ-पैर सही हो जाने का सारा वृतांत कह सुनाया। जब उस सेठ को यह घटना पता चली तो वह विक्रमादित्य के पास आया और उसने राजा से क्षमा मांगी और कहा–हे महाराज! मैंने आप पर चोरी का झूठा आरोप लगाया। मुझे क्षमा कर दीजिये। राजा ने कहा–यह सब मेरे भाग्य के तथा शनिदेव जी के कोप के कारण हुआ, इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं था।

तब सेठ ने कहा–हे महाराज! यदि आपने वास्तव में मुझे क्षमा कर दिया तो फिर मेरे घर चलकर भोजन ग्रहण करें, तभी मुझे शांति प्राप्त होगी। राजा ने कहा–जैसा आप उचित समझें करें।

घर जाकर सेठ ने नाना प्रकार के व्यंजन बनवाए और राजा विक्रमादित्य को आमंत्रित किया। जब राजा विक्रमादित्य तथा राजकुमारी भोजन कर रहे थे तो सबने एक बड़ी आश्चर्यजनक घटना देखी। जो खूंटी पहले हार निगल चुकी थी वही खूंटी हार उगल रही थी। भोजन की समाप्ति पर सेठ ने हाथ जोड़कर राजा से कहा–महाराज मेरी श्रीकंवरी नाम की एक कन्या है। आप उसे पत्नी के रूप में वरण करें। राजा विक्रमादित्य ने सेठ की बात स्वीकार कर ली और सेठ ने अपनी कन्या का विवाह राजा से कर दिया और बहुत-सी भेंट राजा को दी, इस प्रकार आनन्दपूर्वक कुछ समय तक सेठ के राज्य में रहने के पश्चात् राजा विक्रमादित्य अपने श्वसुर राजा से कहा कि अब मेरी उज्जैन जाने की इच्छा है।

कुछ दिन बाद विदा लेकर राजकुमारी मनभावनी, सेठ की कन्या श्रीकंवरी तथा दोनों ज़गह से दहेज में प्राप्त अनेक दास-दासी, रथ और पालकियों सहित राजा विक्रमादित्य उज्जैन की तरफ चले। जब वे शहर के निकट पंहुचे और उज्जैनवासियों ने राजा के आने का समाचार सुना तो उज्जैन की समस्त प्रजा अगवानी के लिए आई। प्रसन्नता से राजा अपने महल में पधारे। सारे नगर में भारी उत्सव मनाया गया और रात्रि को दीपमाला की गई। दूसरे दिन राजा ने अपने पूरे राज्य में घोषणा करवाई कि शनि देवता सब ग्रहों में सर्वोपरि हैं। मैंने इनको छोटा बतलाया इसी से मुझको यह दुःख प्राप्त हुआ।

इस प्रकार सारे राज्य में सदा शनिदेव की पूजा और कथा होने लगी। राजा और प्रजा अनेक प्रकार के सुख भोगती रही। जो कोई शनिदेव की इस कथा को पढ़ता या सुनता है, शनिदेव की कृपा से उसके सब दुःख दूर हो जाते हैं। व्रत के लिए शनिदेव की कथा को अवश्य पढ़ना चाहिए।

ओ३म् शान्तिः। ओ३म् शान्तिः!! ओ३म् शान्तिः!!!

शनिवार की आरती

जय-जय रविनन्द जय दुःख भंजन।

जय-जय शनि हरे ।।टेक।।

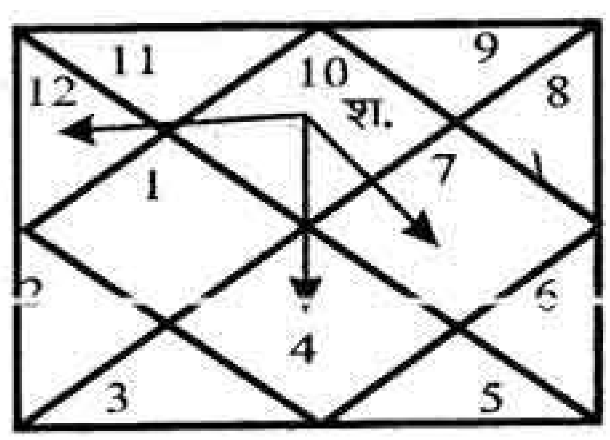
जय भुजचारी, धारणकारी, दुष्ट दलन।।1।।

तुम होत कुपित, नित करत दुखी, धनी को निर्धन।।2।।

तुम धर अनुप यम का स्वरूप हो, करत बंधन।।3।।
तब नाम जो दस तोहित करता सो बस, जो करे रटन।।4।।
महिमा अपार जग में तुम्हारे, जपते देवतन।।5।।
सब नैन कठिन नित बरे अग्नि, भैंसा वाहन।।6।।
प्रभु तेज तुम्हारा अतिहिं करारा, जानत सब जन।।7।।
प्रभु शनि दान से तुम महान, होते तो मगन।।8।।
प्रभु उदित नारायण शीश, नवायन धरे चरण।
जय-जय शनि हरे।

❑❑❑

मकरलग्न में रत्न धारण का वैज्ञानिक विवेचन



1. **माणिक्य**–मकरलग्न में सूर्य अष्टम भाव का स्वामी होता है। इसके लग्नेश शनि और सूर्य में परस्पर शत्रुता है। अतः इस लग्न के जातक को माणिक्य कभी धारण नहीं करना चाहिए।
2. **मोती**–मकरलग्न में चंद्र सप्तम स्थान का स्वामी होने के कारण मारकेश होता है। वह लग्नेश शनि का शत्रु भी है अतः इस लग्न के जातक के लिए मोती हानिकारक प्रमाणित होगा।
3. **मूंगा**–मकरलग्न में मंगल चतुर्थ और एकादश भावों का स्वामी है। मंगल की महादशा में मूंगा धारण करने से मातृ-सुख, गृह, वाहन सुख की प्राप्ति होती है तथा आर्थिक लाभ होता है।
4. **पन्ना**–मकरलग्न के लिए बुध षष्ठ और नवम भाव का स्वामी होगा। नवम त्रिकोण में उसकी मूल त्रिकोण राशि में पड़ती है। इस कारण बुध इस लग्न के लिए शुभ माना गया है। बुध लग्नेश शनि का मित्र भी है। इसलिए पन्ना सदा नीलम के साथ धारण करना ही उचित होगा। बुध की महादशा में पन्ना धारण करना ही फलदायी होगा।
5. **पुखराज**–मकरलग्न के लिए बृहस्पति तृतीय और द्वादश स्थान का स्वामी होने के कारण अत्यन्त शुभ ग्रह है अतः इस लग्न के जातक को पुखराज कभी नहीं पहनना चाहिए।
6. **हीरा**–मकरलग्न तथा कुंभलग्न के लिए क्रमशः पंचम तथा दशम और चतुर्थ और नवम का स्वामी होने के कारण शुक्र अत्यन्त शुभ और योगकारक ग्रह

माना गया है। शुक्र की महादशा में हीरा अवश्य धारण करना चाहिए। हीरा यदि नीलम के साथ धारण किया जाये तो उत्तम फलदायक होगा।

7. **नीलम**–मकरलग्न के शनि लग्न और धन भाव का स्वामी है। इस लग्न के जातक को नीलम सदा सुख और सम्पन्नता प्राप्त करने के लिए धारण करना चाहिए।

विशिष्ट उद्देश्यपूरक संयुक्त रत्न

1. **संतान हेतु**–हीरा सवा चार रत्ती, नीलम सवा चार रत्ती पहनें।
2. **भाग्योदय हेतु**–पन्ना सवा छः रत्ती, नीलम सवा छः रत्ती त्रिलोह में पहनें।
3. **आरोग्य हेतु**–नीलम सवा दस रत्ती अकेला शनि यंत्र में पहनें।
4. **स्थाई लक्ष्मी हेतु**–नीलम सवा पांच रत्ती, पन्ना सवा छः रत्ती त्रिलोह में धारण करें।

❑❑❑

प्रबुद्ध पाठकों के लिए अनमोल सुझाव

फलादेश करते समय इन्हें कृपया ध्यान रखें

1. बिना फलादेश ज्योतिष शास्त्र निर्गन्ध पुष्प है, अतः फलादेश करते समय कृपया जल्दबाजी न करें। फलादेश करते समय अपने खुद के साथ जोर-जबरदस्ती न करें। यथा आपका ध्यान अन्य कार्य में है। आपके पास समय का अभाव है, परन्तु सामने वाला पृच्छक आप पर दबाव डाल रहा है कि मेरी तो ट्रेन जा रही है, बस जा रही है, प्लेन जा रहा है, अभी के अभी बताओ क्या होने वाला है? जो फलादेश आवेश व जल्दीबाजी में होगा वो फलादेश गलत हो जायेगा क्योंकि फलादेश करते समय चित्त शान्त होना चाहिए।
2. जन्म कुण्डली का अध्ययन एकान्त में करें। गम्भीरतापूर्वक करें। आलतू-फालतू लोगों को पास न बैठाएं। जहां तक हो सकें दैवज्ञ विद्वान् के पास अकेला पृच्छक (जिज्ञासु) ही होना चाहिए।
3. दैवज्ञ को फलादेश करने के पूर्व सरस्वती अथवा अपने इष्ट देव का स्मरण करना चाहिए।

   रिक्त पाणि न पश्येत् राजानां दैवतां गुरुः।
4. फलादेश प्रारम्भ करने के पूर्व जिज्ञासु सज्जन से फल-पुष्प दक्षिणा भेंट इत्यादि स्वीकार करके उसे प्रभुचरणों में समर्पित करके ही आगे प्रवृत होना चाहिए।
5. यह शास्त्र वचन है कि जो दैवज्ञ ज्योतिषी के समीप और ईश्वर के दरबार में खाली हाथ जाता है, वह खाली हाथ ही वापस लौटता है।
6. आगन्तुक पृच्छक से हमेशा प्रश्न लिखित में लिखकर लें और प्रत्युत्तर हमेशा हस्ताक्षर, तारीख और समय के साथ लिखित में लिखकर देने का साहस रखें, तभी आत्मविश्वास एवं साधना दोनों बढ़ेंगे।

7. घटना घटित होने के बाद उसकी सफलता एवं असफलता के कारणों की पुष्टि ज्योतिषीय सिद्धान्तों के आधार पर निरन्तर करते रहना चाहिए। फलित सत्य होने पर, स्व प्रशंसा न करें, ज्यादा फूले नहीं? क्योंकि यह सत्यखोजी ऋषियों की कृपा से हुआ है तथा फलित सत्य होने पर निराश या हताश नहीं होना चाहिए क्योंकि गलती हमेशा व्यक्तिगत ही होती है। **'मनुष्य मात्र भूल का पात्र'** गलती हममें है, ऋषियों की वाणी में नहीं, ऐसा विश्वास रखना चाहिए।

8. जन्मपत्रिका को लग्न के अनुसार देखना सीखें।

शास्त्र कहते हैं–

9. **फलानि ग्रहचारेण सूचयन्ति मनीषिण।**
को वक्तां तारतम्यस्य तमेकं वेधसं विना॥

ग्रहों की स्थिति पर से जानकार दैवज्ञ ज्योतिषी शुभ-अशुभ फलों की सूचना करते हैं, परन्तु (फलों के) कम अथवा अधिक प्रमाण तो एक मात्र जगत्सृष्टा ब्रह्मा के सिवाय कौन कह सकेगा? फिर भी ईश्वर के पश्चात् ज्योतिषी वह पहला व्यक्ति है, जो निश्चयपूर्वक आपके भूत, भविष्य एवं वर्तमान बताने का सामर्थ्य रखता है।

10. **पापत्वे सति नीचत्वे ऊच्चत्वे वापि किं फलम्।**
ते योगाः किं करिष्यन्ति स्वदशानामनागमे।

ग्रहों का अशुभत्व, नीचत्व अथवा उच्चत्व इनका योग होने पर भी यदि उनकी दशा नहीं आती हो तो उनके फल कहां से प्राप्त होंगे? और क्यों मिलना चाहिये? दशाओं में ग्रहों के शुभ-अशुभ फल प्राप्त होते हैं। इस जगह **'दशा'** शब्द से **'महादशा'** और **'अंतर्दशा'** इन दोनों का बोध होता है। दशा में विशेष फल मिलता है।

11. **मित्रशत्रुसमायोगे फलं मिश्रं शुभं विदुः।**
केन्द्रत्रिकोणेप्युच्चत्वे मित्रग्रहसमन्विते॥

मित्र और शत्रु ग्रहों का योग हो तो मिश्रफल जानना चाहिए। केन्द्र त्रिकोण अथवा उच्च स्थानों में मित्र ग्रहों से युक्त ग्रह हों तो शुभ फल जानना चाहिए।

12. **मित्रराशिगते वापि मन्त्रिणा यदि वीक्षिते।**
मित्रयुक्ते बलवपि राजतुल्यो भवेन्नरः॥

मित्र ग्रहों के स्थान में स्थित, मित्रग्रह से युक्त और दिग्बली एवं अशों में बलवान ऐसा ग्रह यदि गुरु से दृष्ट हो तो मनुष्य उस समय राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता है।

13. कोई ग्रह यदि राहु के साथ बैठा है। जब ऐसे ग्रह की दशा हो तो उस दशा में अरिष्ट होता है।

14. जब लग्नेश अष्टम स्थान में हो तो उस दशा में बहुत दु:ख, कष्ट एवं परेशानी होती है।

15. जब ग्रह '**दिग्बल**' से युक्त हो तो उसकी दशा में बड़ी प्रतिष्ठा उसी दिशा में मिलती है, जिस दिशा का वह ग्रह स्वामी हो।

16. जब पाप ग्रह (शनि, राहु, केतु या दु:स्थान के स्वामी) की महादशा हो और उसमें शुभ ग्रह की अंतर्दशा हो, तो आरंभ से कष्ट होता है और अंत में सुख प्राप्त होता है।

17. जब शुभ ग्रह की (चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र) महादशा हो और उसमें पाप ग्रह की अंतर्दशा हो तो आरंभ में सुख होता है और अंत में भय होता है।

18. जब क्रूर (सूर्य या मंगल) ग्रह की महादशा हो, उसमें क्रूर ग्रह की अंतर्दशा, यदि वे दोनों आपस में शत्रु हों तो मृत्यु होती है, परन्तु जब वे आपस में मित्र हों तो जीवन में संदेह होता है।

19. जब दो ग्रह एक दूसरे से छठे अथवा आठवें स्थान में स्थित हों तो उनकी अंतर्दशा में बड़ा भय होता है।

20. जब मंगल (मारकेश) की महादशा में शनि (अन्य मारकेश) की अंतर्दशा हो तो मनुष्य की मृत्यु संभव है।

21. जब पाप ग्रह, क्रूर या शत्रु राशि में स्थित छठे अथवा आठवें स्थान में हों, शुक्र अथवा सूर्य की उस पर दृष्टि हों, तो अपनी दशा में मृत्यु करता है।

22. जब लग्नेश की दशा में, लग्नेश के शत्रु की अंतर्दशा हो तो अकस्मात् मृत्यु हो जाती है। ऐसा सत्याचार्य कहते हैं।

23. जिस ग्रह की महादशा हो उससे 6, 8, 12 स्थानों में स्थित ग्रह की अंतर्दशा शुभ नहीं होती है। शेष स्थानों में स्थित शुभ ग्रह की महादशा तथा पाप ग्रह की अंतर्दशा कष्ट देने वाली होती है।

24. जब दशम लग्न, लाभ, पराक्रम, सुख तथा त्रिकोण (पंचम, नवम) स्थित शुभ ग्रह हो और वह स्वगृही हो अथवा उच्च का हो, अथवा मित्र घर का हो, अथवा मित्र नवांश का हों तो उस ग्रह की दशा शुभ होती है। परन्तु जो ग्रह 8-12, 6-7-2 स्थानों में अथवा अष्टमेश में हो अथवा शत्रु के घर के हों पाप ग्रह हों अथवा नीच के हों अथवा अस्तगत हों उसकी दशा शुभ नहीं होती है।

25. जब मित्र ग्रह की महादशा में, मित्र ग्रह की अंतर्दशा हो, अथवा शुभ ग्रह की महादशा में शुभ ग्रह की अंतर्दशा हो तो वह शुभ होती है। परन्तु जब शत्रु ग्रह की महादशा में शत्रु ग्रह की अंतर्दशा हों, अथवा पाप ग्रह की महादशा में, पाप ग्रह की अंतर्दशा हो तो शुभ नहीं होती है। यदि शुभ तथा पाप ग्रह अथवा शत्रु तथा मित्र ग्रहों की दशा और अंतर्दशा मिश्रित हो तो मिश्रित फल होता है।

26. उक्त दशाओं के साथ-साथ गोचर में चलायमान ग्रहों का शुभाशुभ प्रभाव जन्मकुण्डली पर अवश्य पड़ता है। इस तथ्य को घटित करके देखना चाहिए तथा बाद में अन्तिम निर्णय पर पहुंचना चाहिए।

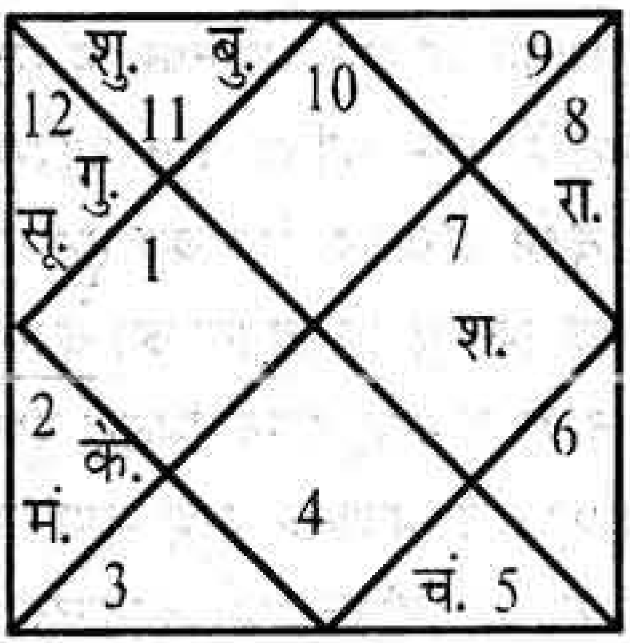
27. पृच्छक जब आपके पास आता है। उस समय शकुन क्या कहते हैं? प्रकृति के रहस्यमय घटनाओं का सूक्ष्म अध्ययन भी मन-मस्तिष्क में रखना चाहिए। वे तत्काल फल चमत्कारी रूप में देते हैं। मान लीजिए कोई आपसे प्रश्न पूछने आया और बिजली चली गई। कोई बर्तन अचानक गिर कर टूट गया? पास में रोने की, झगड़े का कलह की आवाजें आ गई तो जातक का कार्य हर्गिज नहीं होगा। जिज्ञासु सज्जन के आते ही कहीं से कोई फल-मिठाई पुष्प लेकर आ गया। अचानक रोशनी आ गई। टेलीफोन में अचानक शुभ समाचार मिल गये। बेन्ड-बाजे, नगाड़े की आवाज आ गई तो निश्चित ही आगन्तुक सज्जन का कार्य होगा। ज्योतिषशास्त्र के विद्वान् को शुभाशुभ शकुन शास्त्र का भी पूरा-पूरा ज्ञान होना चाहिए।

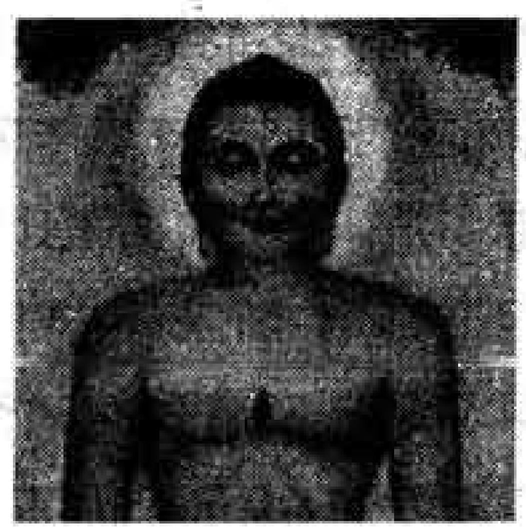
❑❑❑

दृष्टांत कुण्डलियां

A. अवतार, संत-महात्मा एवं विद्वान्

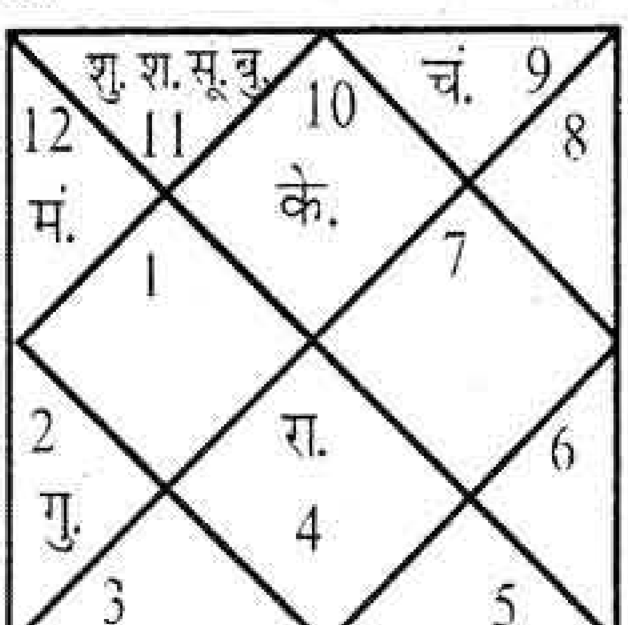
भगवान् महावीर (जैन धर्म प्रवर्तक)

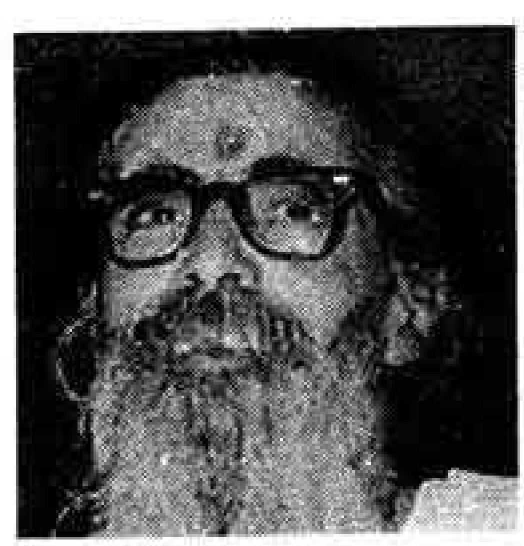




जन्म तिथि-27.3.599, जन्म समय-1.30 बजे रात्रि, जन्म स्थान-वैशाली (बिहार)। भगवान महावीर का जन्म विक्रम सम्वत् 656 चैत्र शुक्ल त्रयोदशी को बिहार के कुन्दाग्राम जिला वैशाली में हुआ। भगवान महावीर का जन्म मध्यरात्रि पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र के द्वितीय चरण, 'सिंह राशि' एवं 'मकरलग्न' के अंतर्गत हुआ। उच्च के शनि ने '**शश योग**' में जन्म देकर उन्हें चक्रवर्ती सम्राट बनाया। सप्तमेश चंद्र ने आठवें जाकर '**अविवाह योग**' कराया। त्रिशला क्षत्रियाणी की कोख से उत्पन्न महावीर को एक शालवृक्ष के नीचे ब्रह्मज्ञान हुआ।

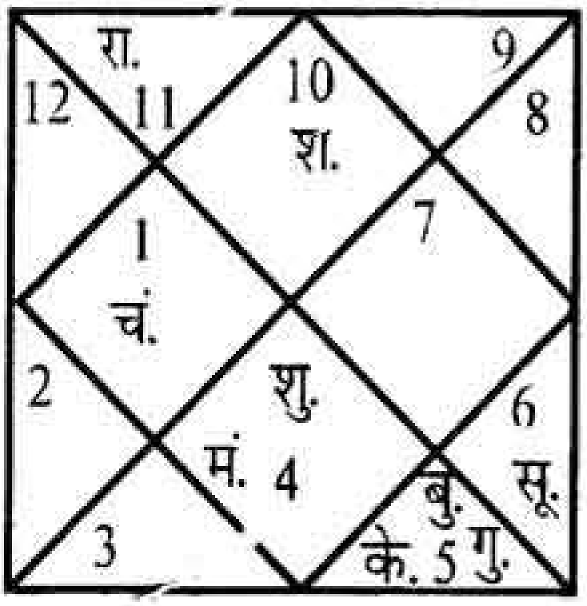
गुरु गोलवक्कर (राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ)





जन्म तिथि-14.2.1906, जन्म समय-4.30 मूल नक्षत्र। माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रमुख रहे। सप्तम भाव में राहु होने से वे आजीवन अविवाहित रहे। आंशिक कालसर्प योग के कारण उनका विवाह नहीं हो पाया। सप्तमेश चंद्र बारहवें **'अविवाह योग'** कराता है। चतुष्ग्रह युति धन स्थान में होने के कारण धन चारों ओर से उनके नाम से बरसता था।

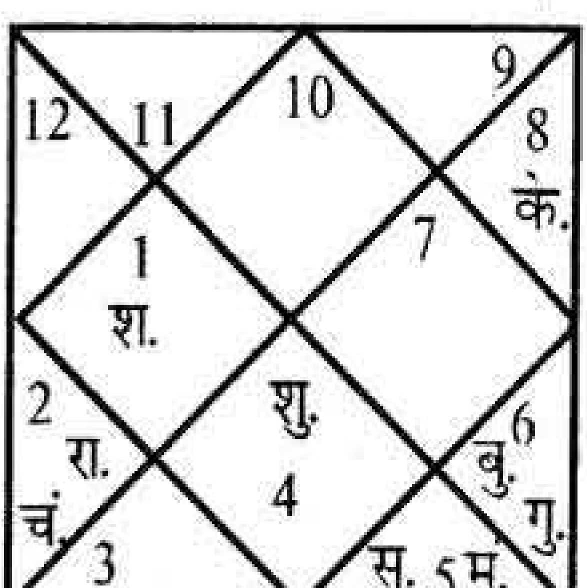
स्वामी सत्यमित्रानन्द गिरि





जन्मतिथि-19.9.1932, जन्म स्थान-आगरा, जन्म समय-14.30। भारत माता मंदिर के संस्थापक महामण्डलेश्वर स्वामी सत्यमित्रानन्द जी की कुण्डली में **'शश योग'** बुध आठवें होने से हर्षनामक **'विपरीत राजयोग'** सूर्य एवं बुध में परस्पर राशि परिवर्तन हुआ है। चंद्रमा और मंगल में परस्पर राशि परिवर्तन से **संन्यास योग** मुखरित हुआ है।

मदर टेरेसा

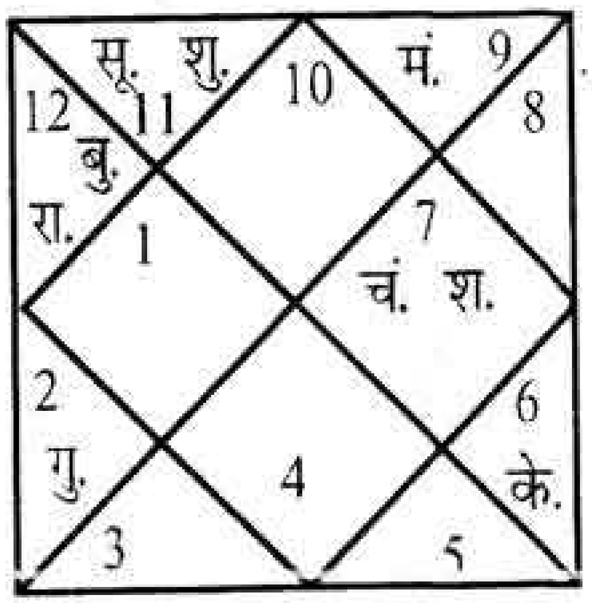




जन्मतिथि-27.8.1910, जन्म स्थान-अल्बानिया, जन्म समय-5.00 सायं। मदर टेरेसा को मरणोपरान्त 'सन्त' की उपाधि मिली। उन्होंने अपना मातृत्व प्राणी मात्र की सेवा में समर्पित कर रखा था। सप्तमेश पाप पीड़ित एवं आंशिक कालसर्प योग के

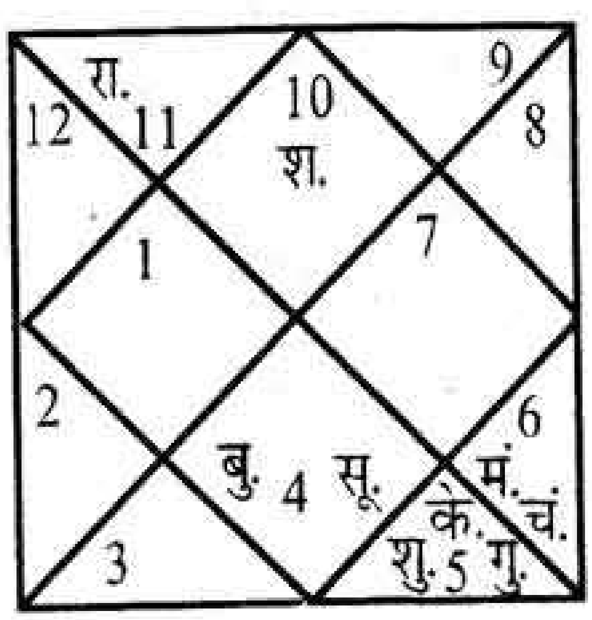
कारण ये आजीवन अविवाहित रहीं। अष्टमेश अष्टम में होने से सरल नामक **'विपरीत राजयोग'**, पराक्रमेश गुरु भाग्य स्थान में उच्च के बुध के साथ होने से इनकी कीर्ति सम्पूर्ण विश्व में फैली। सप्तमेश व पंचमेश ने परस्पर राशि परिवर्तन करके इस जातक को संतान एवं विवाह सुख से वंचित कर दिया। मदर टेरेसा को अपना उत्तराधिकारी नहीं मिला।

डॉ. प्रेमदत्त पाण्डे (सम्पादक-निरोगधाम)



जन्मतिथि-28.7.1933, जन्म स्थान-सिहोर (मध्य प्रदेश), जन्म समय-19.00। इन्दौर से प्रकाशित 'निरोगधाम' पत्रिका के संपादक डॉ. प्रेमदत्त पाण्डे आयुर्वेद शास्त्र के प्रखर ज्ञाता हैं। लग्न में शनि **'शश योग'** बना रहा है। यहां बुध व चंद्रमा ने परस्पर राशि परिवर्तन किया है। फलतः जातक का भाग्य एवं पत्नी पक्ष दोनों बलवान हो गए।

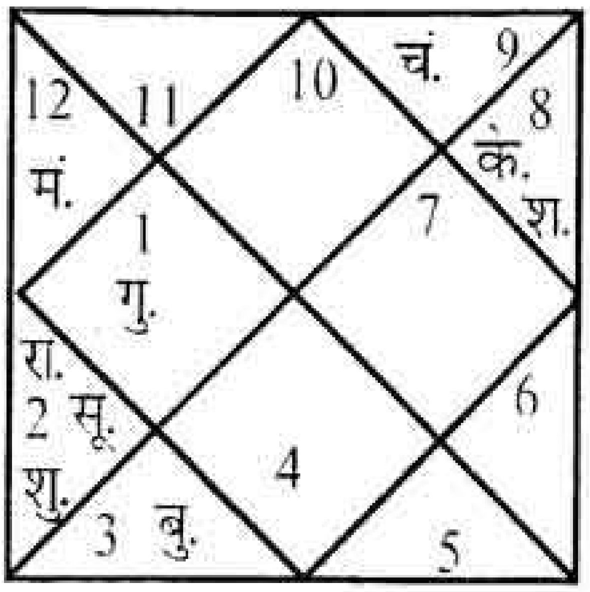
मेहर बाबा





जन्मतिथि-25.2.1894, जन्म समय-4.30। मेहरबाबा की कुण्डली में उच्च के शनि ने **'शश योग'** बनाया। शनि एवं शुक्र ने परस्पर राशि परिवर्तन किया है।

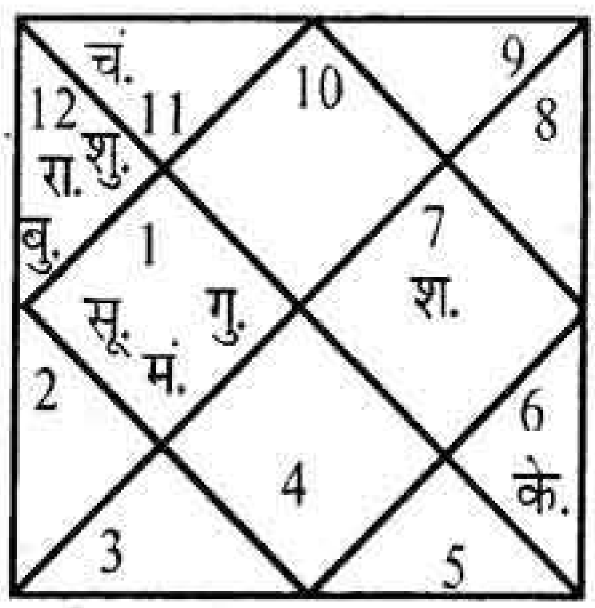
प्रो. कल्याण भारती



जन्मतिथि-6.6.1928, जन्म स्थान-माधोपुर, जन्म समय-23.30। केन्द्र में गुरु विद्या, बुद्धिबल, **'कुलदीपक योग'** व **'केसरी योग'** बना रहा है। सप्तमेश बारहवें, होने से विवाह सुख सामान्य होगा। पंचम भाव में स्वगृही शुक्र कन्या संतति की अधिकता देगा परन्तु सूर्य एक पुत्र देता है। सूर्य राहु से ग्रसित होने के कारण पुत्र सुख एवं वंश वृद्धि को लेकर चिन्ता बनी रहेगी।

B. राजा, राजपुरुष, राजनेता

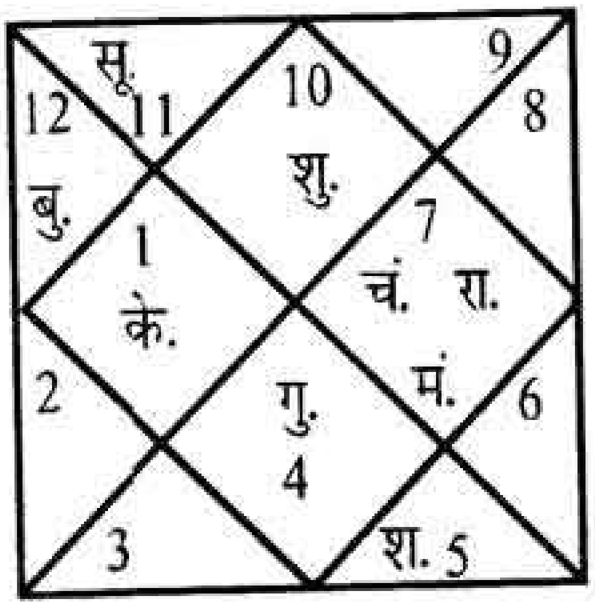
बादशाह तैमूरलंग



जन्मतिथि-9.4.6.1336, जन्म स्थान-समरकन्द, जन्म समय-14.26। 'चंगेज खां' के वंशज तैमूरलंग में धूर्तता और मक्कारी कूट-कूट कर भरी हुई थी। मंगल+सूर्य की युति **'किम्बहुना नामक राजयोग'** की सृष्टि कर रही है। तैमूरलंग 60 वर्ष की आयु में ऐसा युद्ध करता था जैसे 25 वर्ष का युवा करता हो। तैमूर की मृत्यु ईस्वी सन् 1405 में हुई। शनि द्वारा रचित **'शश योग'** ने उन्हें हिन्दुस्तान का बादशाह बनाया। एक खूंखार लूटेरा होते हुए भी तैमूरलंग ज्योतिष प्रेमी था। वह जहां भी हमला, लूटमार, मारकाट करता, वहां के विद्वानों को, ज्योतिषियों को अपने साथ ले जाता और अपने देश में उन लोगों से ज्योतिष की शिक्षा दिलवाता था। तैमूरलंग ने

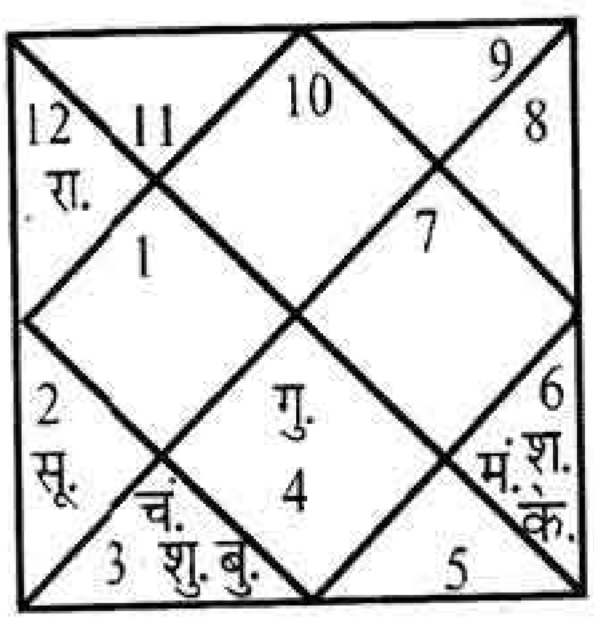
अपने शासनकाल में अनेक भारतीय ज्योतिष के ग्रन्थों का अपनी भाषा में अनुवाद करवाया। उसी के वंश में उलूक बेग ज्योतिषी हुआ। जिसने समरकन्द में ज्योतिष वेधशाला का निर्माण कर, ज्योतिष के वेधयंत्रों की संशोधित सारणियां बनाई।

श्री माणकचन्द जैन



सम्पादक-'फेट एण्ड डेस्टिनी'। ज्योतिष की अनेक पुस्तकों के यशस्वी लेखक अंग्रेजी पत्रिका Fate & Destiny मासिक के सम्पादक स्व. माणिकचन्द जैन अंग्रेजी ज्योतिष संसार के अनमोल हस्ताक्षर हैं।

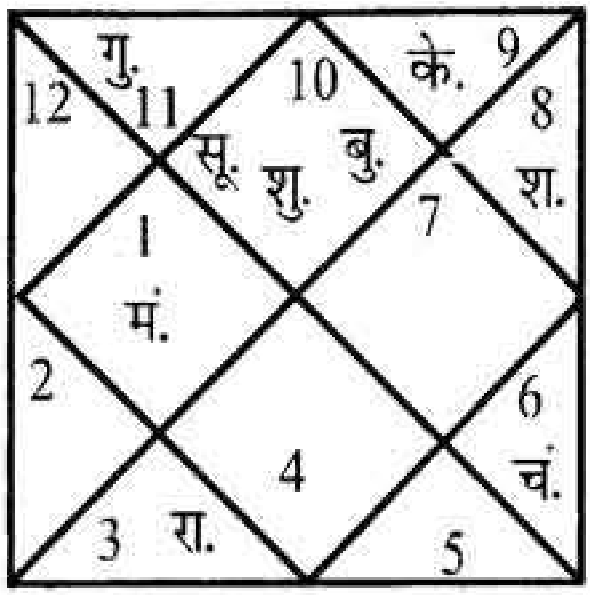
महाराणा प्रताप





जन्म तिथि-19.5.1540, जन्म समय-12.30 रात्रि, जन्म स्थान-कुम्भलगढ़ (राजस्थान)। सम्वत् 1597 ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया को जन्में महाराणा प्रताप ने भारत पर मुगलों के शासन को चुनौती दी। ईस्वी सन् 1576 में हल्दी घाटी में भयंकर युद्ध हुआ। जिसमें महाराणा को पराजय का सामना करना पड़ा। उन्होंने अपनी राजधानी उदयपुर में स्थापित की। सन् 1597 में उन्होंने नश्वर शरीर का त्याग किया।

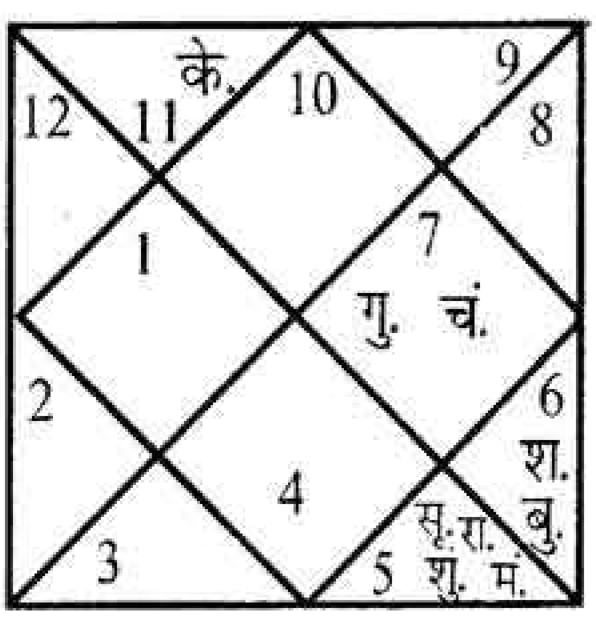
बाला साहब ठाकरे





जन्म तिथि-23.1.1927, जन्म समय-7.00 प्रात:, जन्म स्थान-पुणे। बाला साहब ठाकरे हिन्दू सूर्य कहलाते हैं क्योंकि उनके लग्न में सूर्य है। सूर्य **'बुधादित्य योग'** एवं सरल नामक **'विपरीत राजयोग'** करके लग्न में बैठा है। मंगल केन्द्र में स्वगृही होने से **'रुचक योग'** बना है। जिसके कारण पद पर न होते हुए भी वे राजा ही हैं तथा अपने शत्रुओं का नाश करने में पूर्णत: सक्षम हैं, क्योंकि राहु छठे स्थान बैठा है।

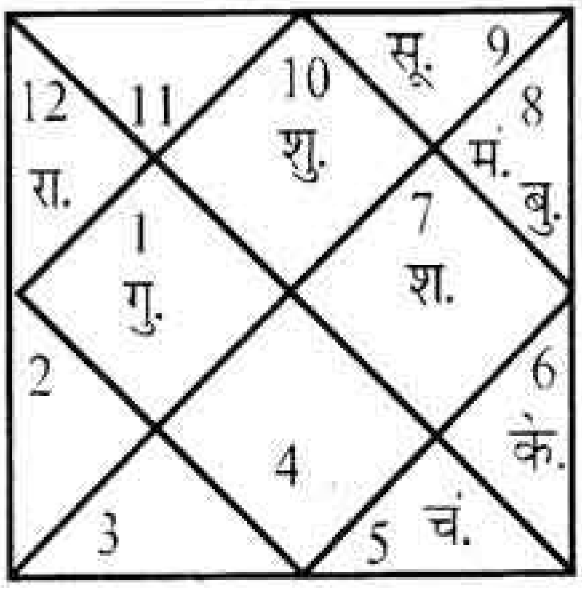
श्री राम जेठमलानी





जन्म तिथि-14.9.1923, जन्म समय-2.30, जन्म स्थान-हैदराबाद (पाकिस्तान)। केन्द्रीय कानून मंत्री रह चुके श्री राम जेठमलानी एक तेज तर्रार वकील एवं राजनेता हैं। इनकी कुण्डली में **'कालसर्प योग'** अवरोह अवस्था का है। चार ग्रह आठवें स्थान में हैं। **'गजकेसरी योग'** केन्द्र में है। धन, वैभव सब कुछ होते हुए भी कालसर्प योग के कारण उन्हें वांछित कीर्ति नहीं मिल पाई।

माओत्से तुंग (प्रधानमंत्री चीन)



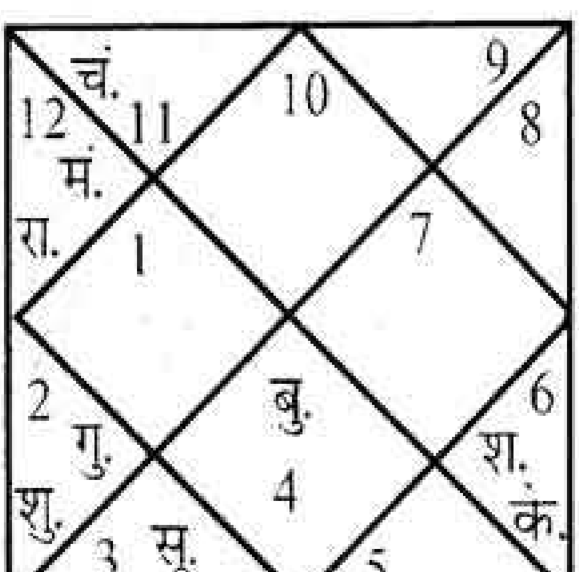


जन्म तिथि-27.12.1893, जन्मसमय-9.00, जन्म स्थान-शावयांग (चीन)।

प्रस्तुत कुंडली चीन के राष्ट्रपति श्री मावोत्सेतुंग की है। मानसागरी के श्लोक 2, पृ. 220 के अनुसार–

अकेला शुक्र केन्द्र या त्रिकोण में तथा तीसरे घर में होवे तो श्रेष्ठ राजयोग होता है। इस कुडली में राजयोग कारक पंचमेश शुक्र लग्न में है तथा लग्नेश शनि केंद्र में उच्च का होने से उत्तरोत्तम उत्तम राजयोग बना है। माओत्सेतुंग विश्व की सबसे बड़ी आबादी वाले राष्ट्र चीन के राष्ट्रपति बने। चतुर्थेश मंगल स्वगृही होकर लाभ में है। '**पद्मसिंहासन योग**' के साथ शनि के कारण '**शश योग**' नामक अति सुंदर राजयोग की सृष्टि हुई है जो पंचमहापुरुष योगों में एक योग माना जाता है।

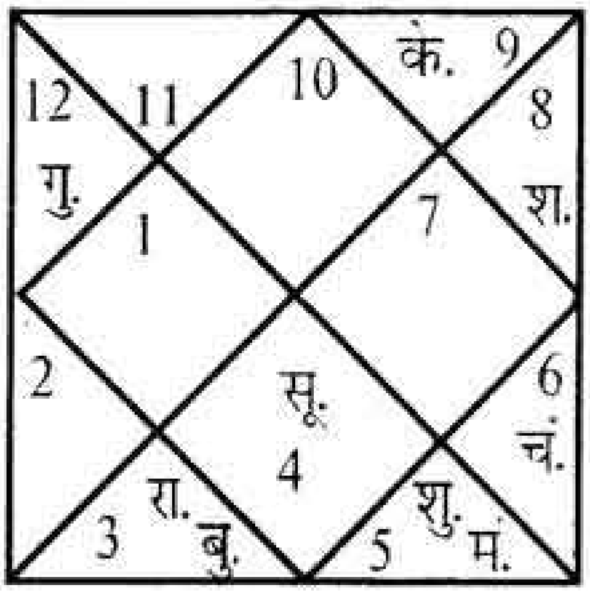
किंग एडवर्ड





जन्म तिथि-23.6.1894, जन्मसमय-10.00 L.M.T.। किंग एडवर्ड की कुण्डली में लग्नेश व धनेश शनि भाग्य में है। राजयोगकारक शुक्र पंचम स्थान में स्वगृही है। अष्टमेश सूर्य छठे स्थान में जाने से सरल नामक '**विपरीत राजयोग**' ने उन्हें राजा बनाया पर व्यक्तिगत जीवन, केन्द्र खाली होने से उपलब्धियों से शून्य रहा।

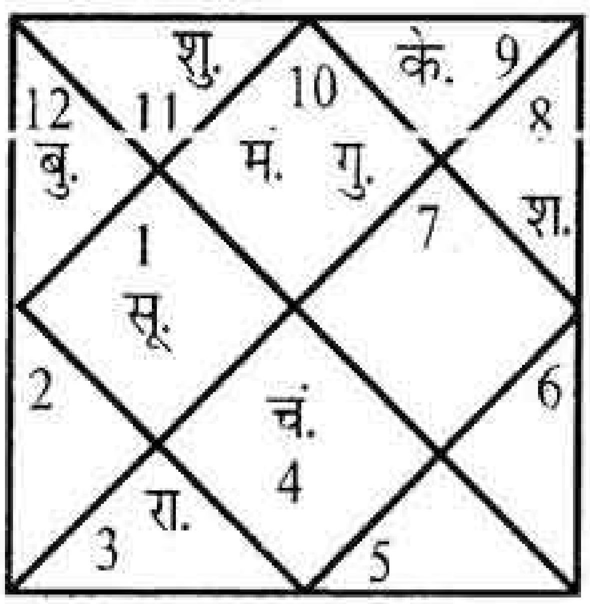
श्री वी.सी. शुक्ला





जन्म तिथि-2.8.1927, जन्म समय-19.15, जन्म स्थान-रायपुर। प्रखर राजनेता एवं पूर्व मंत्री रहे श्री वी.पी शुक्ला भारतीय राजनीति के अनमोल हस्ताक्षर हैं।

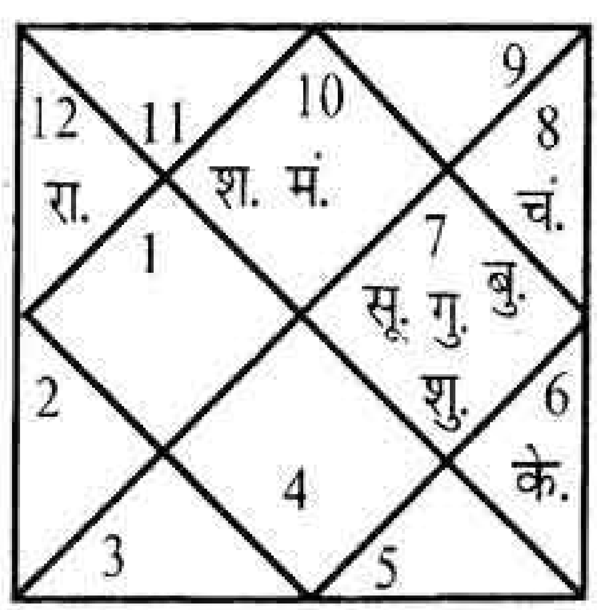
क्वीन एलिजाबेथ





जन्म तिथि-21.4.1926, जन्म समय-2.00, जन्म स्थान-लंदन। लग्न में उच्च का मंगल **'रुचक योग'** बना रहा है। गुरु साथ होने से **'नीचभंग राजयोग'** बना। सूर्य केन्द्र में उच्च का **'रविकृत राजयोग'** तथा चंद्रमा स्वगृही केन्द्र में होने से शक्तिशाली **'यामिनीनाथ योग'** बना। फलत: क्वीन एलिजाबेथ चक्रवर्ती साम्राज्ञी थीं।

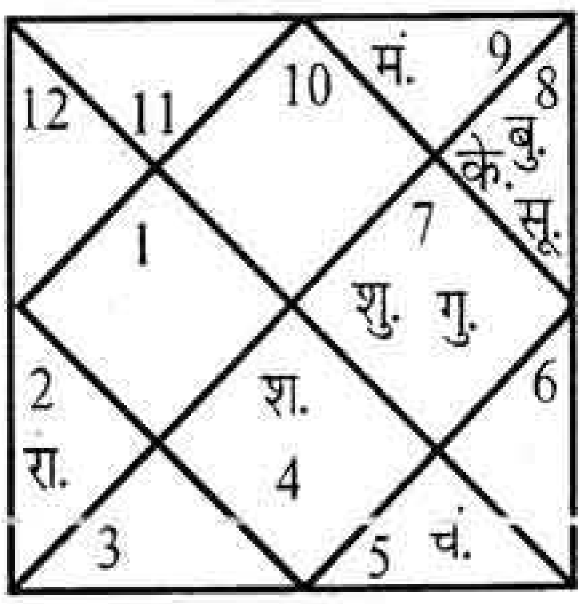
सरदार वल्लभ भाई पटेल

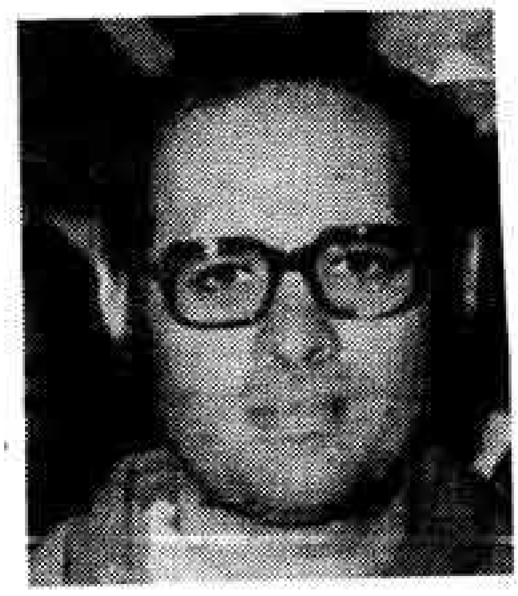




जन्म तिथि-11.10.1875, जन्म समय-13.00, जन्म स्थान-नडियाद (गुजरात)। लौहपुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल के लग्न में मंगल+शनि की युति होने से **'किम्बहुना नामक राजयोग'**, **'शश योग'**, **'रुचक योग'** उनको लौह पुरुष होने का प्रमाण देते हैं। केन्द्र में 'मालव्य योग' होने से वे स्वतंत्र भारत के पहले गृहमंत्री थे जो रौबीले थे तथा अपने सामने दूसरों को कुछ भी नहीं समझते थे।

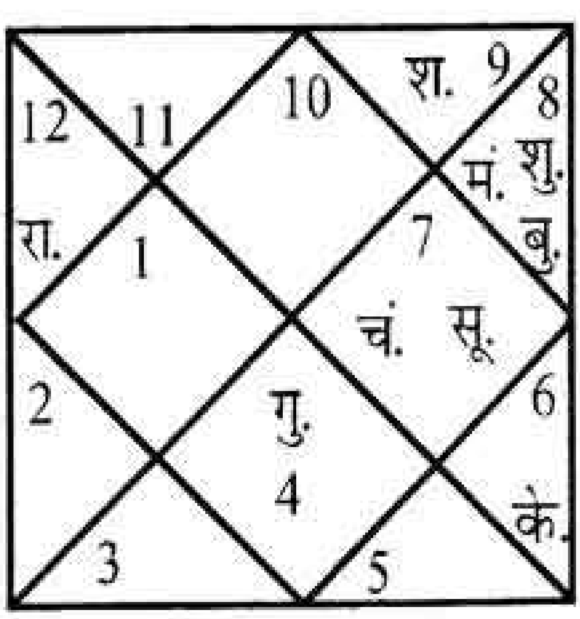
स्व. संजय गांधी





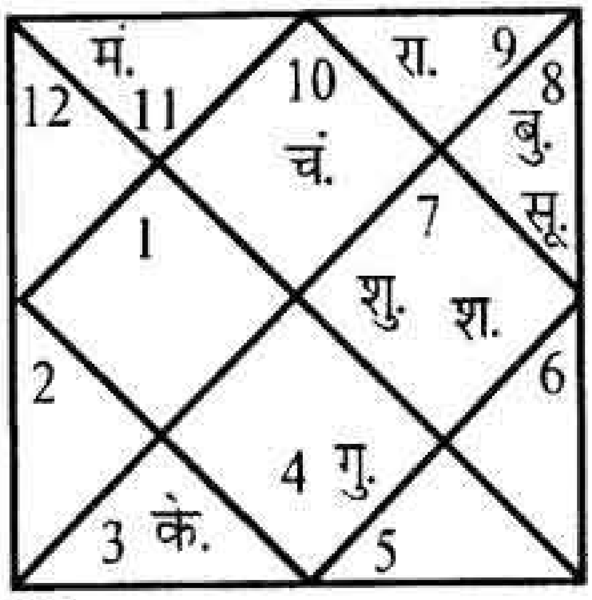
जन्म तिथि-14.12.1946, जन्म समय-9.27, जन्म स्थान-दिल्ली। भारत की प्रधानमंत्री स्व. इंदिरा गांधी के कनिष्ट पुत्र श्री संजय गांधी युवा कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष थे। उनकी मृत्यु 34 वर्ष की अल्पायु में 22.6.1980 को वायु यान दुर्घटना में हो गई। उनकी पत्नी श्रीमति मेनका गांधी भारतीय राजनीति में सक्रिय हैं।

डॉ. लक्ष्मीमल सिंघवी (राज्य सभा सदस्य)



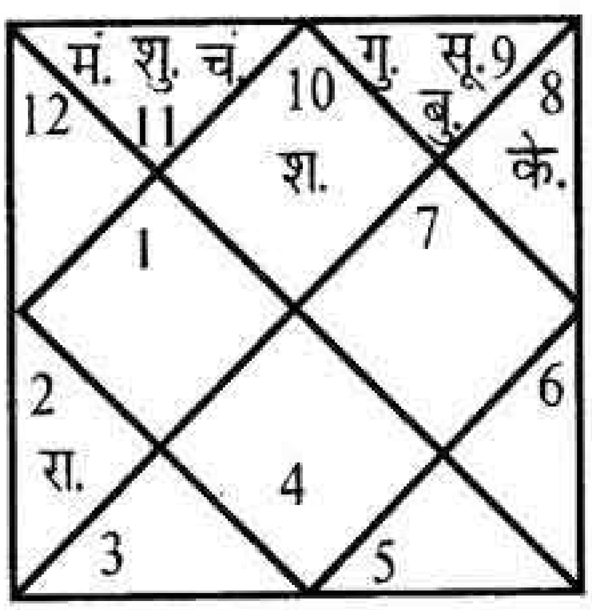
डॉक्टर लक्ष्मीमल सिंघवी ब्रिटिश उच्चायुक्त रह चुके हैं तथा कई वर्षों से राज्य सभा के सदस्य, प्रतिष्ठित सांसदों में सर्वोपरि स्थान को प्राप्त हैं। उच्च के गुरु ने **'हंस योग'** के द्वारा उन्हें राज में ऊंचा पद दिया। उनके आगे बढ़ने में उनकी धर्मपत्नी का सहयोग विशेष रहा।

मेघा पाटकर



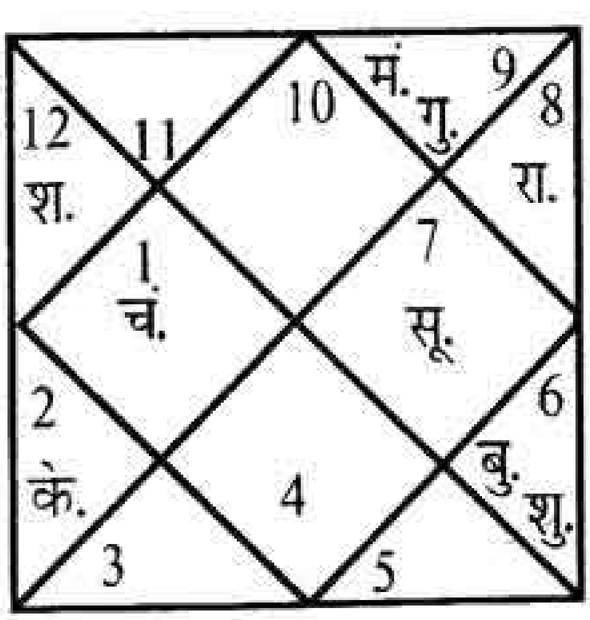
जन्म तिथि-1.12.1954, जन्म समय-11.00, जन्म स्थान-मुम्बई। नर्मदा बचाओ आंदोलन की प्रमुख सेविका मेघा पाटकर राजनीति से दूर होती हुई भी राजनेताओं व भारत की राजनीति में चर्चित व्यक्तित्व हैं।

सेठ विद्याभूषण



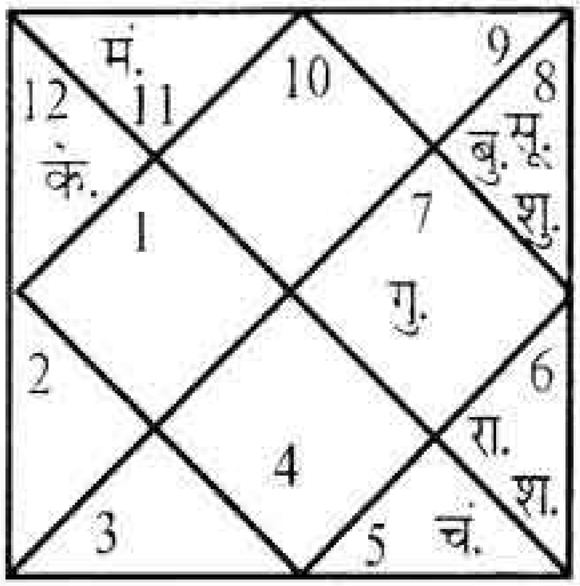
पूर्व पर्यटन मंत्री, जन्म स्थान-सहारनपुर। सेठ विद्या भूषण ज्योतिष प्रेमी, समाजसेवी व परोपकारी व्यक्तित्व के धनी थे। लग्नस्थ शनि ने **'शश योग'** बनाकर उन्हें पर्यटन मंत्री जैसा महत्त्वपूर्ण पद दिया।

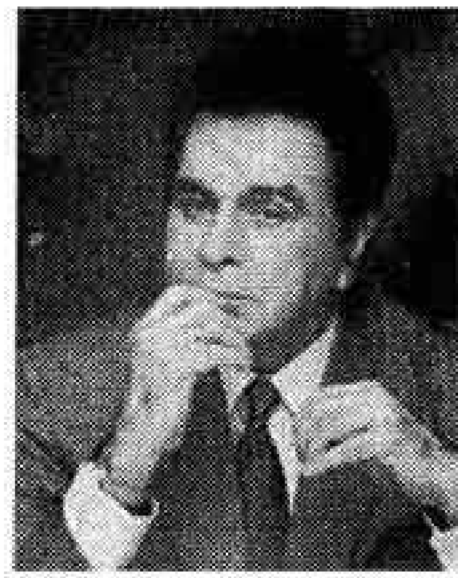
फारुख अब्दुल्ला



C. अभिनेता

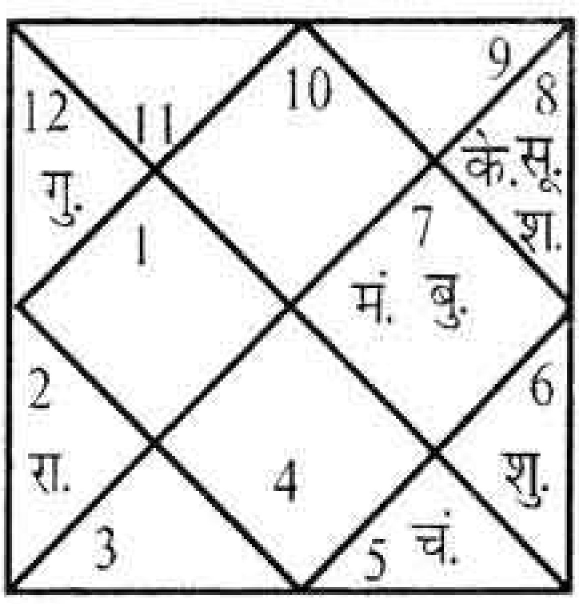
दिलीप कुमार





जन्म तिथि–11.12.1922, जन्म समय–11.15, जन्म स्थान–पेशावर (पाकिस्तान)। **'कालसर्प योग'** के कारण फिल्म अभिनेता दिलीप कुमार के दो–तीन विवाह होते हुए भी संतान नहीं हो पाई। वंश वृद्धि की चिन्ता उनकी कुण्डली में स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रही है।

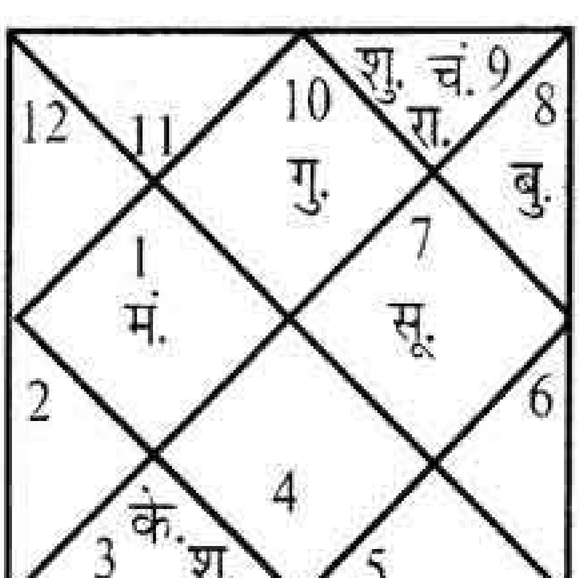
डॉ. श्री राम लागू

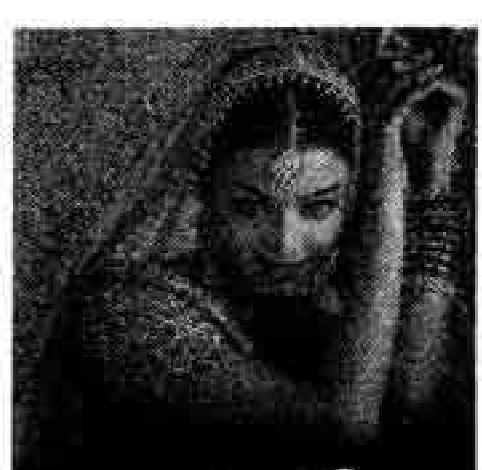




जन्म तिथि–16.11.1927, जन्म समय–12.10, जन्म स्थान–सतारा।

विश्व सुन्दरी ऐश्वर्या राय

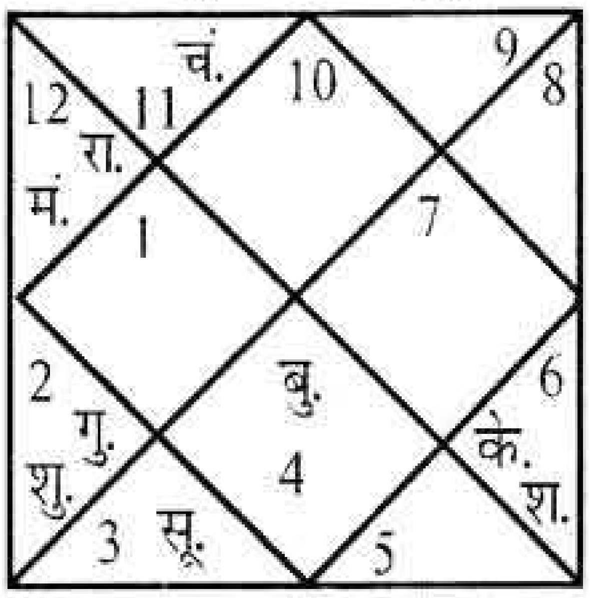




जन्म तिथि–1.11.1973, जन्म समय–12.00, जन्म स्थान–दिल्ली।

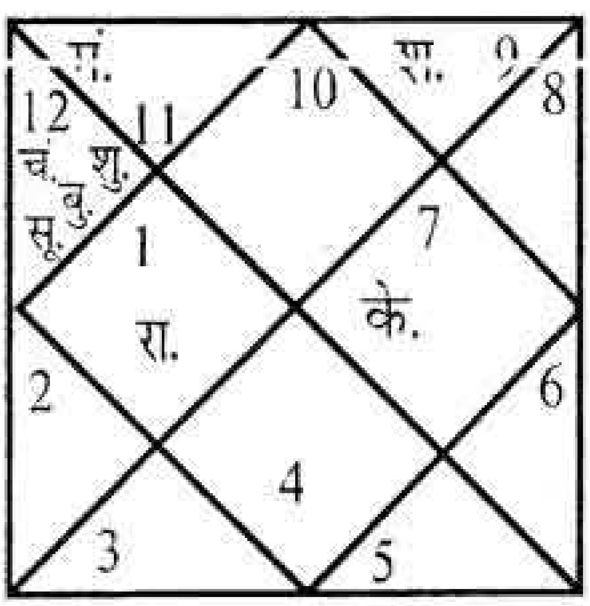
जन्म तिथि-21.10.1937, जन्म समय-12.30, जन्म स्थान-श्रीनगर।

एडवर्ग ड्यूक ऑफ वाइन्डसर



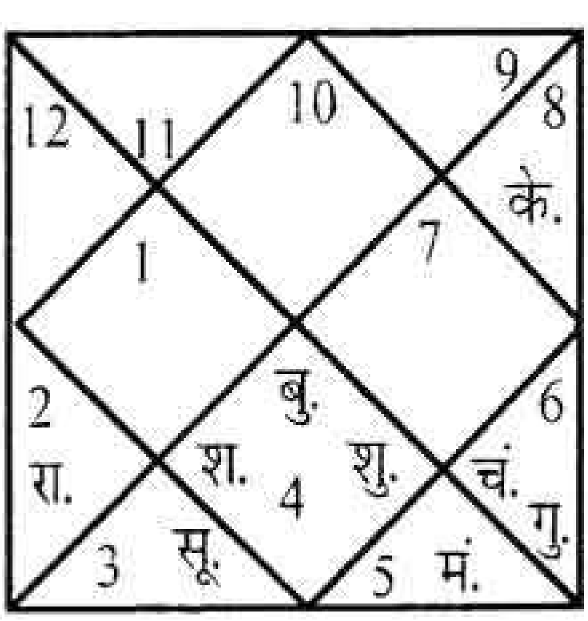
जन्म तिथि-23.6.1894, जन्म समय-22.00। धनेश उच्चाभिलाषी होकर भाग्य स्थान में है। जातक अरबपति था। योगकारक शुक्र गुरु के साथ है।

श्री दीपचंद छंगाणी



जन्म स्थान-फलौदी (राजस्थान)। स्थानीय राजनेता, पूर्वमंत्री श्री मोहन छंगाणी के पुत्र। '**कालसर्प योग**' के कारण अकाल मृत्यु हुई।

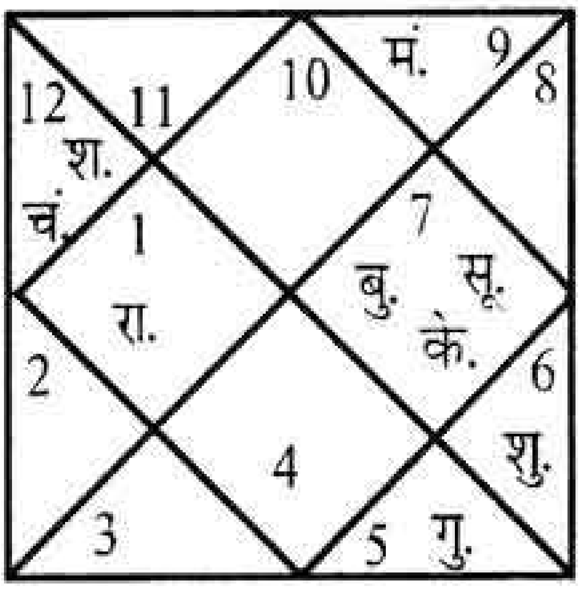
श्री राम विलास पासवान (पूर्व मंत्री)





जन्म तिथि-5.7.1946, जन्म समय-19.50, जन्म स्थान-खगड़िया (बिहार)।

जुही चावला



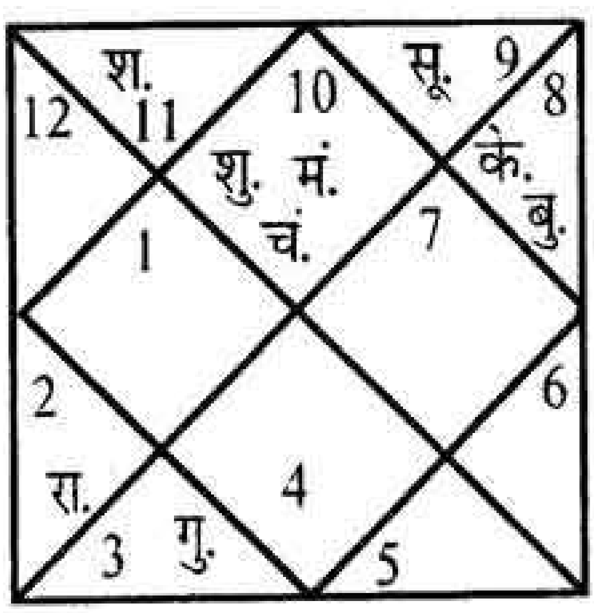


जन्म तिथि-13.11.1967, जन्म समय-12.00 जन्म स्थान-लुधियाना। 13 नवम्बर 1967 को लुधियाना शहर में जन्मी जूही चावला के सितारे उत्कर्ष की ओर हैं। अम्बाला शहर में पली-बढ़ी जूही प्रारम्भ में मॉडलिंग करती थी। 1984 में इन्हें जबरदस्त सफलता मिली जब इन्हें मिस इण्डिया का खिताब दिया गया। इस समय इन्हें बुध की महादशा चल रही थी। मकर लग्न व मीन राशि वाली जूही चावला की कुण्डली में बुध भाग्येश होकर दशम भाव में मित्र क्षेत्री है। भाग्येश का दशम भाव में होना राजयोग है फलतः ऐसा जातक उत्तम सुख सुविधा प्राप्त करता है, तथा राजा के तुल्य ऐश्वर्य भोगता है, भाग्येश की दशा इनके लिए लाभकारी रही। इनकी कुण्डली में शुक्र का अपनी नीच राशि में होना इनकी प्रगति में बार-बार रुकावटें पैदा करेगा। वहीं शुक्र बुध का परिवर्तन योग भाग्य स्थान में होना इनकी अभिनय क्षमता में वृद्धि करता है, तथा इनके फिल्मी जीवन के लिए उत्तम है। जूही चावला ने अपना फिल्मी सफर शशि कपूर के लड़के करण कपूर के साथ 'सल्तनत' फिल्म से शुरू किया। बड़े-बड़े अभिनेताओं व अभिनेत्रियों की इस फिल्म में जूही खोकर रह गई। हालांकि इस फिल्म में जूही चावला को कोई फायदा या नुकसान नहीं हुआ, वहीं 1988 में प्रदर्शित हुई फिल्म 'कयामत से कयामत तक' ने इनकी जिंदगी ही बदल कर रखी दी। केतु दशम भाव में सूर्य-बुध के साथ है। अतः केतु की दशा में इनके कैरियर को जबरदस्त बढ़ावा मिला। मंसूर खान की फिल्म कयामत से कयामत तक में जूही चावला बेहतरीन अदाकारा के रूप में सामने आई। जूही चावला को साईन करने के लिए निर्माता बेताब हो उठे, केतु में केतु तथा केतु-शुक्र जूही चावला के लिए भाग्यवर्द्धक साबित हुए, वहीं नीच का सूर्य जूही के भाग्योदय में रोड़ा बन गया तथा 1990 में सूर्य का अन्तर आने पर फिल्मों के गलत चयन ने जूही को संघर्षों से उभरने नहीं दिया।

चंद्रमा के प्रभाव से जूही की इमेज हमेशा मासूम, प्यारी और भोली-भाली बच्ची जैसी रही है। चंद्रमा के कारण ही जूही हमेशा विवादों से दूर रही है। सूर्य

के प्रभाव से जूही को अपने कैरियर को बनाने में संघर्ष करना पड़ा। चंद्र शनि की युति के कारण इसके तृतीय स्थान में **विषयोग** भी बन रहा है, अतः जीवन में सफलता के साथ साथ संघर्ष का भी महत्त्वपूर्ण स्थान रहेगा। 1995 को इनको केतु की दशा समाप्त हुई तथा शुक्र की दशा लगी। केतु की दशा में श्रीदेवी और माधुरी दीक्षित की प्रतिद्वंद्विता का लाभ जूही चावला को मिला। हालांकि वह नम्बर वन तो न बन सकी पर कुण्डली में बुध व शुक्र के परिवर्तन योग के कारण उनकी अभिनय क्षमता को देखकर इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि आज भी उनका अपना एक अलग ही अंदाज और आकर्षण है। नवमांश में उच्च के गुरु के प्रभाव से इनका विवाह अप्रवासी भारतीय जय मेहता से हुआ। पिछले तीन वर्षों से रूपहले पर्दे से गायब जूही को पंचमेश के भाग्य स्थान में होने से उन्हें प्रथम कन्या की प्राप्ति हुई। वर्तमान में इन्हें शुक्र की महादशा निश्चित रूप से इनके लिए उन्नतिकारक है। इस समय फिल्म लाइन में इनकी धमाकेदार वापसी का योग बन रहे हैं।

सलमान खान





जन्म तिथि-27.12.1965, जन्म समय-9.30, जन्म स्थान-मुम्बई। सलमान खान एक उच्चस्तरीय युवा दिलों को धड़काने वाले अभिनेता है। धन स्थान में स्वगृही शनि उनको खूब धन दिलाता है। शायद यही वजह है कि उसका दिमाग फिरा हुआ है। वो अब तक योग्य पिता का नालायक लड़का ही साबित हो पाया है। मुम्बई बम विस्फोट काण्ड में एक बार सलमान का नाम आया था पर उसे गम्भीरता से नहीं लिया गया।

सलमान का जोधपुर हिरण शिकार काण्ड 1998 में सुर्खियों में आया जब इसे गुरु की महादशा में शुक्र का अन्तर चल रहा था। गुरु खड्डे (6th house) में है तथा पराक्रमेश होकर खड्डे में गिरा फलतः पराक्रम भंग हुआ। सलमान के लग्न में उच्च का मंगल चंद्रमा के साथ है जो इसकी क्रूर मानसिकता को बताता है। मंगल

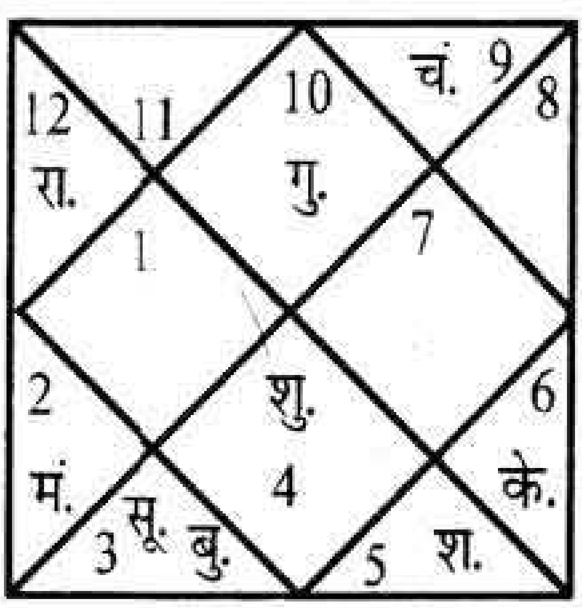
ग्रहों का सेनापति है, क्रूर है। हिरण का शिकार करके उस पर छुरी चलाना क्रूरता की पराकाष्ठा है। हिरण काण्ड में शायद मुख्य गवाह मुकर भी जाये स्टार की लोकप्रियता अथवा पैसों का लेन-देन केस को कमजोर कर दें। पर ग्रह नहीं बदलते। भाग्य नहीं बदलता। ऐश्वार्य राय से गलत छेड़ खानी से पूरा मीडिया, सलमान खान से नाराज था। उनके प्रतिकूल समय की निशानी का संकेत मीडिया की खबरें बराबर देती रहीं। अचानक अक्तूबर 2002 के प्रथम सप्ताह में सलमान खान ने शराब पिये हुए अपनी टोयोटा लैंडक्रूजर से बान्द्रा के फुटपाथ पर एक व्यक्ति को कुचलकर मार डाला और चार को घायल कर दिया। प्रत्यक्षदर्शी बताते हैं कि इतनी दुःखद घटना घटित हो जाने के बाद भी सलमान ने मरे हुए व्यक्ति एवं घायलों के प्रति कोई हमदर्दी नहीं जताई, उनके बचाव का कोई उपचार नहीं किया। यह मनोवृत्ति खड्ढे (छठे) में गिरे गुरु व्यक्ति को धार्मिक कार्य, परोपकार, सेवा कार्य से दूर कर देता है। इसी प्रकार बारहवां सूर्य एक हजार राजयोग को नष्ट करता है। सूर्य राजकारक ग्रह है। सूर्य बारहवें अग्नि राशि में है, उद्दण्ड है। यह व्यक्ति को राजदण्ड अवश्य देगा। वैसे तो सलमान अभी जेल से जमानत पर छूट गये हैं पर यह स्थाई समाधान नहीं है।

अभी गुरु की महादशा चल रही है तथा 22.1.2003 तक चलेगी। यह दशा इनके सारे कैरियर को चौपट कर देगी। खतरे अभी और भी बाकी हैं। सलमान को सावधान रहना होगा।

उसे धैर्य में रहकर गुरु की अनिष्ट दशा से बचाव का उपाय करना होगा। विनम्र बनना होगा, सत्य बोलना सीखना पड़ेगा, व्यवहार में जिम्मेदारी, संजीदापन लाना होगा तभी देवगुरु बृहस्पति प्रसन्न होकर उन्हें क्षमा करेंगे।

D. चर्चित व्यक्तित्व

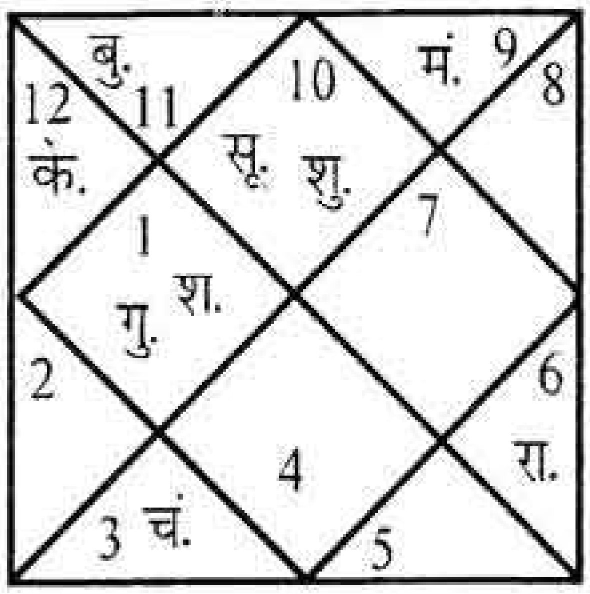
सुनील गावस्कर





जन्म तिथि-10.7.1949, जन्म समय-8.50 सायं, जन्म स्थान-मुम्बई।

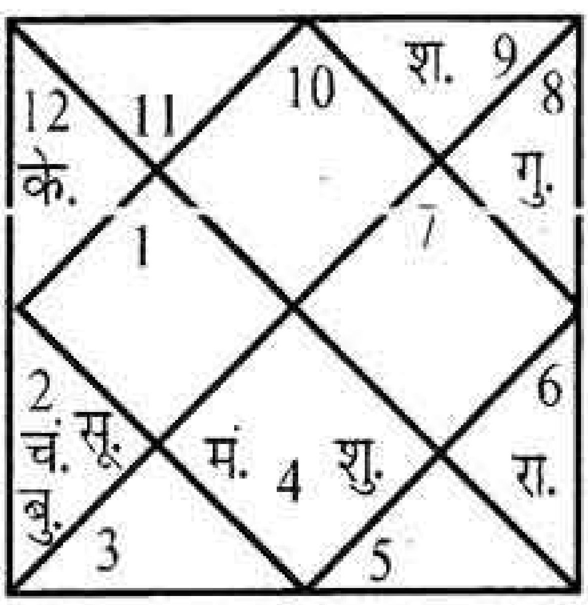
श्री जगजीत सिंह





जन्म समय-8.2.1941, जन्म समय-8.00 प्रात:।

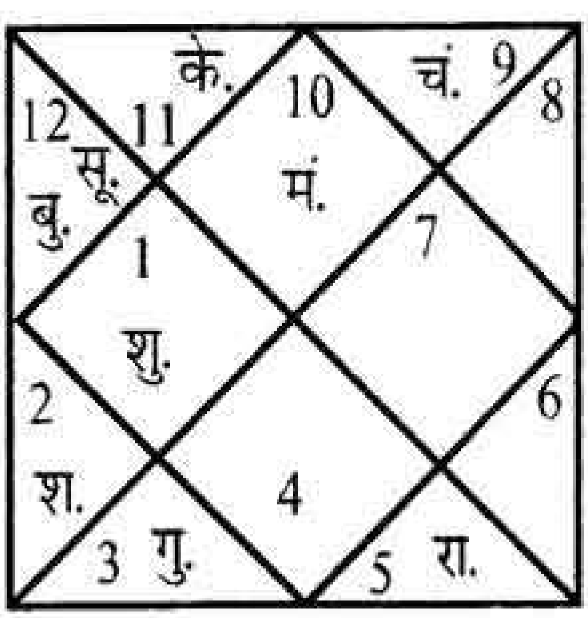
श्री अनिल अम्बानी





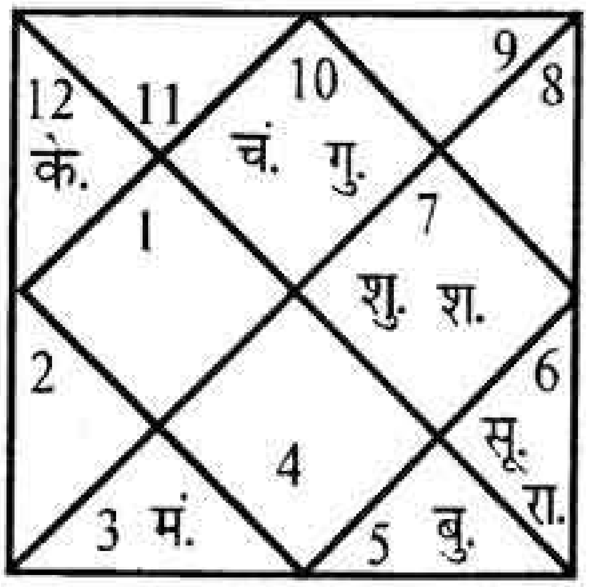
जन्म तिथि-4.6.1959, जन्म समय-22.30, जन्म स्थान-मुम्बई।

जॉन मेयर



जन्म तिथि-29.3.1943, जन्म समय-03.15 सुबह, जन्म स्थान-लंदन।

श्री एच. जी वेल्स



जन्म तिथि-21.9.1866, जन्म समय-15.33, जन्म स्थान-ब्रोमले (U.K.)

❑❑❑